No. 1 2025 Stiftet 1988

SPEIL दर्पण

Pris 25 kr
अंक १ २०२५ स्थापित १९८८
Et flerkulturelt magasin på hindi og norsk
हिन्दी और नार्वेजीय भाषा का बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक

शुभकामनायें। Gratulerer.

नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता निहोन हिडानक्यो के तीन प्रतिनिधियों ने नार्विजन नोबेल पीस इंस्टीट्यूट, ओस्लो में अतिथि रजिस्टर में हस्ताक्षर किये।
The three co-leaders of Niihon Hidankyo posed with members of the Norwegian Nobel Committee after signing the guest book at the Norwegian Nobel Institute. Photos of past Nobel Peace Prize winners adorn the walls.
PHOTO: © Nobel Prize Outreach/Jo Straube

साहित्य में नोबेल पुरस्कार स्वीडेन में प्राप्त किया दक्षिण कोरिया की हान कांग ने।
Sørkoreanske Han Kang er tildelt nobelprisen i litteratur for 2024.

TOK IMOT FREDSPRISEN: – Eg hadde aldri drøymt om at vi skulle få nobelprisen, sa leiaren Toshiyuki Mimaki rørt då nyheita først blei annonsert. I dag tok han imot nobeldiplomet som bevis. FOTO: HEIKO JUNGE / NTB
नोबेल शांति पुरस्कार २०२४ सिटी हाल ओस्लो में जापान के तोषीयुकी मीमाकी प्राप्त करते हुए।

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

नार्वे में विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह का दौरा। ओस्लो में राजदूत महामहिम डॉ. विमल अक्यूनो के निवास में।
Kirti Vardhan Singh Utenriks rajya-minister besøkte Norge.

यू. पी. प्रेस क्लब, लखनऊ में सुरेशचन्द्र शुक्ल कृत तारुफी खत (उर्दू) कहानी संग्रह का विमोचन।
Utgivelse av novellesamling Tarufi khat (Urdu) skrevet av Suresh Chandra Shukla ved U. P. Press CLub Lucknow.

आल इंडिया रेडिओ दिल्ली में रामअवतार बैरवा के नेतृत्व में युवा प्रतिभा का कवि सम्मेलन।
Dikt lesning av Ungt talent under ledelse av Ramawtar Bairva ved All India Radio Delhi.

Speil दर्पण

Speil er et flerkulturelt magasin på norsk og hindi. Vi presenterer viktige nyheter både fra India og Norge for våre lesere-

Formålet vårt er å øke forståelse og kontakt mellom mennesker og kulturer-

Speil er et talerør for kulturarbeidere i Norge, uansett etnisk bakgrunn- Vi ønsker alle velkommen til å skrive i Speil.

Har du noe å bidra med] spørsmål, ideer eller lignende? Ta kontakt med oss- på

speil.nett@gmail.com

Støtteabonnement for Speil er 100 Kroner pr år.
Løssalgspris 25 kr
Bankgiro: 607205 14969

Ansvarlig Redkatør
(Editor) सम्पादकः
Suresh Chandra Shukla Redaksjon
(Editorial board)
सम्पादक मण्डलः
Harald Burvald] Torstein Winger
Sangita Shukla,
Sigrid Marie Refsum,
Maya Bharti
Rupinder Singh Dhillon,
Guru Sharma

India
Om Sapra, New Delhi
Jai Prakash Shukla, Lucknow
S.S. Parasar, New Delhi

Canada
Dr. Satynder Kumar Sethi

Nederland
Dr. Mohan Kant Gautam

Email: speil-nett@gmail-com
Phone: +47 90070318
Address:
Post Box 31, Veitvet
0595, Norway

I dette nr. इस अंक में

हिन्दी Hinid

- **स्तम्भ**
  - सम्पादकीय ५
  - सम्पादक के नाम पत्र ६, ७
- **लेख, समाचार और व्यंग्य**
  - हिन्दी हमारी अस्मिता की पहचान है -सुरेशचन्द्र शुक्ल ६
  - निहा हिंडाक्यों को शांति का नोबेल -शरद आलोक १३
  - नार्वे के नाटककार-लेखक जान फोसे को साहित्य का नोबेल पुरस्कार - शरद आलोक १४
  - दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को साहित्य का नोबेल - शरद आलोक १७
  - उपलब्धियों से भरा डाक्टर मनमोहन सिंह का जीवन - डॉ. सत्येन्द्र कुमार सेठी २६
  - सृजन संवाद कार्यक्रम - स्पाइल प्रतिनिधि २८
  - कुंद होती धार - एस. एस. पराशर ३०
  - मेलबर्न की सुबह - हेमा विष्ट ३१
  - महात्मा गाँधी की पत्रकारिता दिशा दृष्टि - डॉ. विनोद बब्बर ३२
- **कहानी**
  - वापस होने की आस - डॉ. आकांक्षा मिश्रा ८
  - अनंत यात्रा - रेखा राजवंशी १०
  - पिकाचू - इला प्रसाद १५
  - तुम्हें पाकर - पुष्पा सक्सेना १८
  - लोकतंत्र, अद्भुत प्रेमकथा -सुरेशचन्द्र शुक्ल ६, २६
- **कवितायें**
  - पेड़ों से करो प्यार - डॉ हरनेक सिंह गिल २७
  - तुलसी जयन्ती पर - डॉ. गंगाप्रसाद शर्मा 'गुणशेखर' सूरत २७
  - छम्म से - डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील ३४
  - कितना सुन्दर देश हमारा - अर्जुन पाण्डेय ३४
  - मेरा मकान - एस. एस. पराशर ३४
  - कौन पुकारेगा फिर मुझको - कुसुम वीर ३५
  - बिन ब्याही माँ - रविता चौहान ३५
  - मनवा कासे कहे - नीरजा शुक्ला ३६
  - शीतल बहे बयार - हरि नाथ शुक्ल 'हरि' ३६
  - ग़ज़ल - डॉ. शोभा बाजपेयी ३६
  - जीवन प्रथम सत्य है - डॉ. शिप्रा शिल्पी ३६
  - रामअवतार बैरवा की ग़ज़लें ३७
  - अतीत की स्मृतियाँ - डॉ. सरस्वती जोशी ३७
  - है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन - डॉ. मंजू शुक्ला ३७
  - जातिवाद के खिलाफ - डॉ. राम गोपाल भारतीय ३८
  - अन्वेषण - पं. राम नरेश त्रिपाठी ३८
  - उपवन में आज उदासी है - सूर्य कुमार पांडेय ३८
  - गगरी - प्रमिला कौशिक ३६
  - धीरे-धीरे - डॉ. रामदरश मिश्र ३६
  - ये संकल्प हमारा है - डॉ. शिवम् तिवारी ३६
  - बीट, आज और पहले - राहुल उपाध्याय ३६
  - जन्मभूमि तेरा वंदन - डॉ. कौशलेन्द्र टिंगी ४०
  - स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा - शरद आलोक ४०

Norsk (Norwegian) नार्वेजीय

- **Faste spalter**
  - Leder 5
  - Leserbrev 6, 7
- **Artikler og informasjon**
  - Nye rekordar for norsk lokalmat - og drikke 41
  - Kunnskapsministeren endrer fraværsreglene i videregående skole 42
  - Solid norsk fotavtrykk på gjenoppbyggings- konferanse for Ukraina 43
  - Langsiktig støtte til gjenoppbyggingsarbeidet 45

Speil दर्पण

सम्पादक Redaktør

सुरेशचन्द्र शुक्ल

Suresh Chandra Shukla

सम्पादक मण्डल: Redaksjon

Harald Burvald
Torstein Winger
Sangita Shukla
Sigrid Marie Refsum
Maya Bharti
Rupinder Singh Dhillon
Guru Sharma

सलाहकार: Adviser / Rådgiver

Trygve Tveter, Advocate
Oslo, Norway
S. S. Parashar, Advocate,
New Delhi, India

Redaksjon i India

भारत में

Prof. (Dr.) Santosh Kumar Tewari
Hari Singh Pal (New Delhi)
Kripa Shankar (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow).
Shivram Pandey (Lucknow)
Dr. Vinay Kumar Sharma (Lucknow)
Om Sapra (New Delhi)
Dr. Vikram Singh
Dr. Shobha Bajpai
Ila Shri Jaiswal
Dr. S.K. Sethi (Canada)

Nedarland

Dr. Mohan Kant Gautam

Distributor in India भारत में

Sanju Mishra

Våre kilder हमारे श्रोत

India भारत

Anup Bose, Delhi
Rameshvar Mishra, Shanti Niketan
Ubbaidur Rahman Hashmi, New Delhi
Harmahinder Singh Bedi, Amritsar
Nirmala S Mourya, Chennai
Anand Sharma, Lucknow
Birendra Kumar Shukla,
Lalganj, Raebareli

Sverige स्वीडेन :

Ashutosh Tiwari

Danmark डेनमार्क :

Deshbandhu Charanjiv Kumar

Tyskland जर्मनी :

Dr Ram Prasad Bhatt
Samta Malhotra

Storbritannia ब्रिटेन :

Virendra Sharma
Ravi Sharma
Dr. Nikhil Kaushik

Canada कनाडा:

Neerja Shukla
Dr. Mohan Sapra
Dr. Satynder Kumar Sethi
Manish Kumar Mishra

Sør Afrika दक्षिणी अफ्रीका :

Rambhajan Sitaram
Niritika Nerisha

USA यूएसए :

Raj Gupta
Pushpa Saxena
Raj Mishra

Leder

Minister besøk i Norge

India's State utenriksminister Kirti Vardhan Singh besøkte Norge tidlig i år- Norge og India har et utmerket samarbeid etter India ble uavhengig i 1947] Den første statsministeren] Jawaharlal Nehru] har skrevet kulturavtale mellom to land- Begge land har utviklet sitt samarbeid på flere områder-

Gratulerer

Det indiske parlamentet har valgt sin opposisjonsleder etter 10 år- Rahul Gandhi er opposisjonslederen fra Congress parti- Priyanka Gandhi] barnebarn til den første kvinnelige statsministeren Indira Gandhi ble valgt som stortingsrepresentant i India] Folk ser Indira Gandhis skygge på Priyanka Gandhi- Gratulerer-

Speil fyller 37 år

Det er ikke tvil om at Speil har forsterket kulturelle bånd mellom India og Norge i løpet av disse 36 årene- Det er blitt publisert en del av diktere] forfattere og andre skribenter gjennom disse 37 årene i Speil- I tillegg har vi prøvd å dekke en del arrangementer- Redaksjonen takker helhjertet for alle bidragene hittil- Jeg vil også benytte anledningen til å takke alle i redaksjonen nå og alle som har vært med å beriket värt arbeid med sin entusiasme gjennom redaksjonen tidligere- Jeg retter en spesiell takk til redaktørene på barnesidene- Til slutt] men aller mest vil jeg takke dere leserne- Jeg synes det har vært mange lærerike og spennende år- Jeg håper alle dere fortsette å samarbeide på deres måte de neste årene også- Vi ønsker alle bidrag og ideer hjertelig velkommen framover som tidligere- Jeg gleder meg-

Suresh Chandra Shukla
Redaktør

सम्पादकीय

मंत्री का दौरा

भारत के विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने नार्वे का दौरा किया। भारत की आजादी १९४७ के बाद से भारत और नार्वे के मध्य बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं। पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने नार्वे के साथ ऐतिहासिक सांस्कृतिक समझौता किया था। इसके बाद निरंतर दोनों देशों के बीच सम्बन्ध अधिक मजबूत होते रहे हैं।

शुभकामनायें

भारतीय संसद ने दस वर्षों बाद अपना विपक्ष का नेता कांग्रेस पार्टी के राहुल गांधी को चुना है। इंदिरा गाँधी की पौत्री प्रियंका गांधी सांसद चुनी गयी हैं जिनमें लोग महान नेता और पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की छवि देख रहे हैं। दोनों को बहुत बधाई।

स्पाइल-दर्पण के ३७ वर्ष

इसमें शक नहीं है कि स्पाइल-दर्पण ने नार्वे और भारत के बीच मजबूत सांस्कृतिक सेतु बनाया हैं। अनेक कवियों, लेखकों की रचनाओं को स्पाइल-दर्पण में इन ३७ वर्षों में प्रकाशित किया है। इसके अतिरिक्त हमने बहुत से कार्यक्रमों के बारे में लिखा है। स्पाइल-दर्पण का संपादक मण्डल सभी तरह का योगदान देने वालों का हृदय से धन्यवाद देता है। मैं इस अवसर पर सभी पूर्व और वर्तमान में संपादक मंडल के सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य सहयोग से पत्रिका को समृद्ध बनाया।

मैं सीधे पत्रिका में बच्चों के बाल जगत (Barne & sider) के संपादकों को विशेष धन्यवाद देता हूँ।

अंत में सुधी पाठकों को धन्यवाद देता हूँ। मेरा विचार है कि बहुत से रोमांचक और ज्ञानवर्धक साल रहे हैं।

मुझे आशा है कि आप सभी अपने-अपने तरीके से आगे भी निरंतर सहयोग देते रहेंगे। हम सभी तरह के सहयोग और सलाह का आगे भी हृदय से स्वागत करते हैं जैसा कि आप पहले भी सहयोग करते रहे हैं।

मुझे खुशी हो रही है।

सुरेशचन्द्र शुक्ल

Leserbrev
सम्पादक के नाम पत्र

Thank you-

Appreciate for your dedication and hard work- This issue of Speil 1&2024 is a rich source of Mahatma Gandhi and hope readers will take it a reference about Gandhi ji-

Prof- Ashutosh Tewari
Stockholm] Sweden

हिंदी का भविष्य सुखद और संतोषजनक है। साहित्य की हर प्रत्येक विधा में हिंदी लेखन हो रहा है। सामाजिक विज्ञान और विज्ञान लेखन के क्षेत्र में भी सजग प्रयास हो रहे हैं। जितना हिंदी स्थानीय परिवेश को लेकर अपना सरोकार रखती है उतना ही वैश्विक स्तर पर भी। हिन्दी सर्वाधिक समावेशी भाषा है यह हर वर्ग हर वय (आयु) हर समाज की बात करती है।

भारतवर्ष विभिन्न क्षेत्रों में १९१४ में नए कदम नयी उपलब्धियाँ अर्जित करने में जिस प्रकार प्रयत्नशील रहेगा हिन्दी भी अपनी पहचान बनाने में गतिशील रहेगी।

हम आशान्वित हैं कि अब्दुल कलाम का सपना साकार होगा। दूसरे अर्थों में २०२५ में शाइनिंग इंडिया होगा।

भारत और नार्वे की मैत्री को निरन्तर सुदृढ़ करने में स्पाइल-दर्पण पत्रिका और उसके विश्व स्तरीय ख्यातिलब्ध प्रवासी साहित्यकार और सम्पादक श्री सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को कोटिश: शुभकामनायें निवेदित करता हूँ।

प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
लखनऊ विद्यालय।

ओस्लो से प्रकाशित स्पाइल दर्पण पत्रिका के ३७ वर्ष पूरे होने पर उसके यशस्वी संपादक श्री सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक को हम साधुवाद।

स्पाइल-दर्पण सम्पूर्ण यूरोप में निरंतर छपने वाली हिंदी की एक मात्र स्वतन्त्र साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में स्थापित हो गयी है। नव वर्ष पर मेरी ओर से आत्मीय स्वस्तिकामनाएँ प्रेषित हैं।

प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा
प्रोफेसर और कुलानुशासक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म. प्र.

सुरेशचन्द्र शुक्ल ने बहुत समय तक हिंदी की सेवा की है। विदेश में हिंदी की पताका लहराई है। प्रवासी साहित्यकारों में अग्रणी शुक्ल जी की ऊर्जा अपने समग्र प्रतिभा के साथ अर्धरात्रि वाले सूरज के देश के आसमान में बाल रवि सम उदित होकर जग के गहन अंधकार को दूर कर रही है।

उनका यह पुण्य कर्म अनवरत जारी रहे और साहित्य के आकाश में कभी न लुप्त होने वाली यश चंद्रिका अपने मादक, उन्मादक, मधुर, मदिर और सरस, सुहावन शरद आलोक से समूची हिंदी जाति को आनंदित और आलोकित करती रहे। अपने अनन्य मित्र श्री शुक्ल के परिश्रम और लगन को नमन करते हुए इस सारस्वत यात्रा के अनवरत जारी रहने के लिए अनंत, अशेष मंगलकामनाएं प्रेषित करते हैं।

डॉ. गंगा प्रसाद शर्मा 'गुणशेखर'
सूरत, भारत

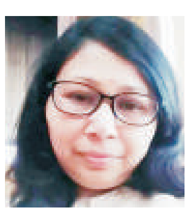

नमस्ते सर, स्पाइल-दर्पण का नया अंक मिला।

सभी रचनायें अच्छी हैं। आप को ढेर सारी शुभकामनाएं। धन्यवाद सर, पत्रिका भेजने के लिए।

प्रो. कल्पना गवली हिंदी विभाग,
बड़ौदा विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात।

आप ३७ सालों से ओस्लो, नार्वे से हिंदी और नार्वेजियन भाषा में स्पाइल दर्पण पत्रिका निकाल रहे हैं जो हम सभी स्कैंडिनेवियाई भारतीयों और यहाँ के मूल लोगों के लिए बहुत उपयोगी है। ईश्वर ने हमको यह जीवन दिया है। मैं जियो और जीने दो के सिद्धांत को मानता हूँ। जो बुरा करे उसका भी भला करो। अंदर की आत्मा युवा है। हमारी आत्मा खुश तो हम खुश हैं। मैं स्टॉकहोम में मंदिर में सभी से एक भाव से मिलता हूँ। भगवान ने हम सभी को अलग-अलग बनाया है। हमारे सभी के अंदर भगवान है। आपको पत्रिका के सम्पादन के लिए बहुत बधाई।

रवि मेहरा,
स्टॉकहोम, स्वीडेन

महात्मा गाँधी जी की १५५वीं जयन्ती पूरा विश्व मना रहा है। इस सुअवसर पर उनके कृतित्व को समर्पित स्पाइल-दर्पण का यह अंक सम्पूर्ण विश्व के लिए मान्यवर, प्रासंगिक है।

पत्रिका गांधी जी के जीवन दर्शन को उजागर करके अनेक विषमताओं से जूझते विश्व में बच्चों को हिंसा मुक्त, भय रहित व मानवीय मूल्यों से ओत-प्रेत वातावरण निर्माण की ओर प्रेरित करेगी। यह अंक गाँधी जी के आदर्शों को देश काल से ऊपर उठाकर पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक बना देता है। एक कुशल संपादक के रूप में आपने महात्मा गांधी को याद कर भारत की वर्तमान पीढ़ी को भी अपनी समस्याओं का समाधान सत्य और अहिंसा में ढूंढ़ने को प्रेरित किया, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और अपार सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

वीरेन्द्र शुक्ल लालगंज,
रायबरेली

Leserbrev

सम्पादक के नाम पत्र

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी जी का पत्र

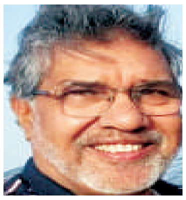

प्रिय भाई शुक्ला जी,

बहुत दिनों से आपका कोई समाचार नहीं मिला। आशा है कि आप, बहन जी और परिवार कुशल मंगल होंगे।

मैं आपको यह पत्र एक विशेष उद्देश्य से लिख रहा हूँ। वह है करुणा के वैश्वीकरण के आंदोलन में आपको आमंत्रित करना। दस साल पहले मैंने नोबेल पुरस्कार लेते समय यही आह्वान किया था। अब उसे मूर्त रूप देने का संकल्प लेकर आपको याद कर रहा हूँ।

आपने मुझे जो प्यार, सम्मान, सहयोग और समर्थन दिया है, वही मेरी सबसे बड़ी पूंजी है। अब ७० वर्ष की आयु में उसी पूंजी का फिर से निवेश कर रहा हूँ।

एक नया विश्व आंदोलन शुरू करना चुनौती भरा जरूर है, लेकिन उतना भी मुश्किल नहीं जब मैंने १५ साल की उम्र में जात-पाँत के भेदभाव के विरोध में अपना उपनाम बदला था, या फिर, २५ साल की उम्र में इंजीनियर की नौकरी छोड़कर शुरुआत की बाल दासता के खिलाफ अभियान की शुरुआत थी। ईश्वर में, मानवता में, और खुद में भरोसे के कारण न तो मेरी माँ के आंसू, चिंताएं और डर मुझे विचलित कर सके और न ही शुभचिंतकों और दोस्तों का उपहास। जबकि मेरा परिवार बहुत साधारण था।

दुनियाभर के बच्चों की आजादी और शिक्षा के लिए मेरे जीवन के सभी विनम्र प्रयास करुणा से प्रेरित रहे हैं। करुणा मेरे लिए अनंत ऊर्जा, क्रियाशीलता और बदलाव का स्रोत रही है। प्रत्येक बच्चे का बचपन लौटाने के लिए मेरे साथियों और मेरा संघर्ष जारी है। इस दौरान मैंने यह सीखा कि ज्यादातर समस्याएं एक दूसरे में रची-गुथी है और उनके समाधान भी आपस में जुड़े हुए हैं। उनके स्थायी हल के लिए और भी नूतन, बुनियादी और व्यापक तरीके अपनाना जरूरी है।

किसी के कष्ट या समस्या को अपनी समस्या की तरह अनुभव करते हुए निःस्वार्थ और निर्लिप्त रहकर, विवेकपूर्ण तरीके से उसका समाधान करना ही करुणा है। दया, कृपा, सहानुभूति, परोपकार, क्षमा आदि उद्दात मानवीय गुण जरूर हैं, लेकिन वे करुणा नहीं हैं क्योंकि सिर्फ करुणा से ही उन गहरी समस्याओं का टिकाऊ समाधान हो सकता है जो व्यवस्थागत अन्याय और भेदभाव से पैदा होती हैं।

हम सभी अपने निजी, पारिवारिक, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन में किसी न किसी तरह की समस्या से जूझते रहते हैं। इनके अलावा दुनिया में टूटन, बिखराव, अन्याय, युद्ध और पर्यावरण संकट जैसी चुनौतियां भी बढ़ रही हैं। मानव जाति आज जितनी साधन-संपन्न है, समस्याओं की जितनी जानकारी और समाधानों के अनुभव आज हमारे पास हैं, उतने पहले कभी न थे। फिर भी, ऐसी हालत क्यों बनी है?

मेरे विचार से आज हर प्रकार के संबंधों में नैतिक जिम्मेवारी और जवाबदेही का अकाल पड़ा हुआ है। ऐसा लगता है कि हम अनगिनत लोगों को पीछे धकेलते हुए बिना किसी नैतिक दिशासूचक के बस भागे जा रहे हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए पारंपरिक बुद्धि और कार्य पर्याप्त नहीं हैं। जब तक हम एक दूसरे की समस्याओं और तकलीफों को अपना मानकर उन्हें दूर करने की कोशिश नहीं करते, तब तक न तो मानव बुद्धि और न ही मशीनी बुद्धि (आर्टिफिशल इंटेलिजेंस) से उनको हल किया जा सकेगा। यह मानवीय बुद्धि को करुणामय बुद्धि में परिवर्तित करके ही संभव हो सकेगा। और इसका एक ही तरीका हो सकता है- हमारी बुद्धियां और कार्य करुणा से प्रेरित हों।

मुझे भारत सहित लगभग डेढ़ सौ देशों में युवाओं के साथ काम करने का सौभाग्य मिला है। वे ही मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा और भरोसा हैं। ऐसे कई युवाओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में बाल मजदूरी, यौन शोषण, बाल विवाह, अशिक्षा, जात-पांत, सांप्रदायिकता और हर तरह के भेदभाव का अंत करके यह साबित कर दिया कि करुणा और चेतना के द्वारा बड़ी से बड़ी बुराई खत्म की जा सकती है। बस व्यावहारिक तरीकों से इसे व्यवस्थित और संगठित करने की जरूरत है। साथ ही, सामाजिक कार्य, व्यापार, व्यवसाय, शिक्षा, राजनीति, चिकित्सा, यहाँ तक कि धर्म आदि सभी क्षेत्रों में करुणापूर्ण नेतृत्व विकसित करना होगा। यह काम आपके सहयोग और मार्गदर्शन के बिना नहीं हो सकता।

अंधेरा कितना ही घना क्यों न हो, रौशनी की एक किरण उसका अंत करने के लिए काफी है। मैं आप में वही किरण देख रहा हूँ। वह बाहर आने को बेचैन है, क्योंकि परिवर्तन का देवता बाहें पसारे उसका इंतजार कर रहा है। हमारी दुनिया को मानवीय, टिकाऊ, न्यायपूर्ण, खुशहाल और शांतिपूर्ण बनाने के लिए अगर आप पहल नहीं करेंगे तो कौन करेगा? और अगर आप आज और अभी से इसकी शुरुआत नहीं करेंगे तो कब करेंगे? आज मैं अपने अंतरतम से आपको पुकार रहा हूँ। आइये, हम साथ मिलकर मानवता के इतिहास में समाधानों का एक नया अध्याय लिखें।

कैलाश सत्यार्थी

नोबेल पुरस्कार विजेता, नई दिल्ली

आदरणीय सुरेशचंद्र शुक्ल जी, स्पाइल दर्पण पत्रिका देखने और पढ़ने का सौभाग्य मिला। यह अद्भुत संयोग है कि हिंदी-नॉर्वेजियन द्विभाषी पत्रिका विश्व में हिंदी की समृद्धि में विगत ३७ वर्षों से समर्पित है। विषय वैविध्य से पत्रिका की रोचकता कमाल की है। यह पत्रिका जहाँ हिंदी का विकास कर रही है वहीं भारतीयता संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण के दायित्व का निर्वहन कर रही है। समर्पित भाव से हिंदी की सेवा कर रहे वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' को हार्दिक बधाई और कामना करता हूँ कि पत्रिका अनवरत प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित

डा. दीपक पांडेय, सहायक निदेशक

केंद्रीय हिंदी निदेशालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय

वापस होने की आस

डॉ. आकांक्षा मिश्रा

जिन दिनों मैं हमेशा की तरह एक यात्रा करती हुई अपने गंतव्य पर पहुंचने की आशा में प्रयागराज से ट्रेन पकड़ रही थी। सारनाथ ट्रेन आने वाली थी सभी यात्री अपने सामान के साथ डिब्बे व सीट की प्रतीक्षा में उत्सुक प्लेटफार्म पर खड़े होकर देख रहे थे। मेरे पास ज्यादा सामान नहीं था एक बैग जिसे आसानी से लेकर यात्रा किया जा सकता है।

ट्रेन आ गई थी मैं अपनी सीट पर बैठ गई, मन बोझिल था घर से दूर जा रही थी। रह-रहकर कुछ यादें व पापा की नसीहतें मुझे चौकन्ना करती रहती थी।

ट्रेन स्टेशन छोड़ चुकी थी, मैं भी निश्चित होकर अपनी बर्थ में आरामदायक स्थिति में बैठ गई। बिलासपुर मुझे उतरना रहता इसलिए कोई असुविधा की बात नहीं रही, बैग से पानी का बोतल निकाल कर दो घूँट पानी पीकर एक तरफ रख दी। मैं चाय ज्यादा पीती थी अक्सर ट्रेन में भी कई कप पी लेती हूँ। चाय खरीद ली हाथ में लेकर आराम से खिड़की की तरफ बाहर का दृश्य देखने लगी। बहुत मनोरम आँखों को सुकून देने वाली हरियाली संगीत भर रही थी। ट्रेन अब रफ्तार से चल रही थी। चाय पीकर एक लंबी सांस लेकर फिर अपनी बर्थ पर लेट गई। ट्रेन कटनी, सतना, मैहर, शहडोल आदि पहाड़ी क्षेत्रों से गुजरती हुई तेज रफ्तार से समय से यात्रियों को पहुँचाने के दौड़ में गुजर रही थी। इन पहाड़ी क्षेत्रों को देखकर मन में एक प्रकार की उत्सुकता होती कि यहीं मैं भी इन पहाड़ों के बीच रच बस जाऊं यहीं की हो जाऊं असीम शांति चारों तरफ फैली हुई, यहाँ से वापस न जाना हो। इसी शोरगुल से हृदय भरा था। बिलासपुर पहुंचने में अभी घंटों दूरी तय करनी थी। ट्रेन भोर में स्टेशन पहुंचाएगी। यह सोच कर मैं सोने का उपक्रम करने लगी लेकिन नींद कहीं भी नहीं बाहर से चेहरे पर न कोई खुशी न कोई उत्कंठा थी। कई स्मृतियां बहुत सारी बचपन की यादों के साथ लौटाने जैसी थी। इन स्मृतियों में पापा का इतनी जल्दी चले जाना हम सबसे दूर इस असहनीय पीड़ा से मेरा रोम-रोम व हृदय द्रवित हो उठा। आँखों से आंसू बहने लगे चादर से पूरे शरीर को ढक ली, बर्थ पर चाहकर भी रो नहीं सकती थी। इन चमचमाती सड़कों और तेज रोशनी से जगमगाती महानगरीय जीवन को छोड़कर पापा ने दूर एक छोटे से गांव में अपना निवास स्थान बनाया। उनका समूचा जीवन फैजाबाद, लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, बनारस जैसे शहरों में बीता लेकिन इन शहरों में कहीं भी रमे नहीं जिंदगी की आपाधापी में उन्हें लोगों की करुणा, भूख, और बेघर लोगों की चिंता ने उनके जीवन को सादा व सरल बना दिया। कभी अपने लिए उन्होंने कोई शौक नही पाले न ही किसी से कुछ कहा।

बिलासपुर मेरा आना-जाना अपनी जीविका के कारण होने लगा था। स्टेशन काफी साफ-सुथरा था व शांति से यहाँ मैं घण्टों प्रतीक्षा हाल में बैठ कर दूसरी ट्रेन की इंतजार में रहती। प्लेटफार्म पर जाकर एक कोने पर लगी बेंच पर बैठती जहाँ मैं पहली बार पापा के साथ बिलासपुर में यूनिवर्सिटी में इंटरव्यू के लिए आई थी। वापसी में सारनाथ ट्रेन की प्रतीक्षा में पापा और मैं बिलासपुर स्टेशन पर लगभग दो घण्टे तक बैठे रहे और खूब सारी बातें करते रहे। मैं अपने इंटरव्यू से संतुष्ट नहीं थी मुझे पता चल गया था कि मेरा सलेक्शन नहीं होगा ये चिंता मेरे चेहरे पर साफ झलक रही थी। पापा इससे परिचित हो गए थे फिर उन्होंने कहा कि यहाँ नहीं होगा तो कही और होगा इतनी जल्दी नहीं घबराना चाहिए। तुम्हारा काम सिर्फ इंटरव्यू देना था, मुझे थोड़ी सी तसल्ली मिली। कुछ दिन बीते फिर से बिलासपुर आना हुआ इस बार मैं भाई के साथ आई फिर मैं यहाँ की हो गई जो मेरी जीविका का स्रोत बन गया। दैनिक रूप से धीरे-धीरे अपने कार्यो में व्यस्त होने लगी थी अचानक कोरोना का दौर आ गया अकेली घर से दूर पापा की चिंता, वे मुझे लगातार फोन पर साहस देते रहते थे। मोबाइल फोन पर हमेशा लोगों का साथ व विश्वास बने रहने का आश्वासन मिलता रहा जिससे मेरी हिम्मत बनी रही। जिस घर में किराए पर रहती थी उन लोगों का साथ व घर जैसा वातावरण मुझे मुहैया था। भैया बाहर जाते तो फल, सब्जी, दवा आदि मेरा भी ले आते उनके बच्चे अक्सर मेरे पास रहते कहते रहते दीदी चिंता मत करो हम सब आपके साथ है। मुझे कहीं जाना नहीं पड़ता था। यह सब बातें मैं पापा को अक्सर फोन पर बताती रहती, यह सुनकर उनकी चिंता कुछ कम हुई। इधर कोरोना की वैक्सीन और बचाव के कारण कुछ असर धीरे-धीरे कम होने लगा। सामान्य जीवन पटरी पर आने लगा। जुलाई माह में कालेज की छुट्टी होने पर मैं घर चली गई। इस बार घर पर जाने पर पापा सबसे पहले घर के मेन दरवाजे पर प्रतीक्षा करते हुए मिले। बहुत ही खुश व बिलासपुर व कालेज आदि के साथ यहाँ लोगों के बारे में ढ़ेर सारी बाते हुई। यहां का भोजन, रहन-सहन व लोगों के बारे में जानकर उन्हें अच्छा लगा व खुश होने के साथ ही निश्चिंत भी हो गए कि बेटी जहाँ रहती है वह जगह ठीक है चिंता करने की कोई बात नहीं है उनकी चिंता भी जायज थी। अक्सर जब पापा अपने मित्रों से जब बात करते तो मेरे बारे में बताते रहते थे यह मुझे

तब पता चला जब अचानक हम लोगों से दूर चले गए। अगस्त माह मेरे लिए एक भयानक हादसा लेकर आया जिससे हमारा परिवार दूर-दूर तक परिचित नहीं रहा। जब पापा पूरे परिवार को छोड़ कर इस संसार से चले गए। किसी को विश्वास नहीं हो रहा था इतने कम समय में और मैं भी इस हादसे के बाद भयभीत सी हो गई। पापा को क्या हुआ ?

अभी तो यहीं बैठे थे और बात भी हुई इक्कीस अगस्त को पापा हमेशा की तरह अपने सारे काम निपटा रहे थे उस दिन हल्की सी बारिश और दिन शनिवार बारिश की वजह से कोर्ट नहीं गए। बाद में उन्होंने बताया आज जाने का मन नहीं हो रहा है। वह समय व उस मनहूस सांझ को जब सब अपने-अपने कामों में व्यस्त थे। कोई नहीं जानता था आज आने वाला क्षण हम सब भाइयों के लिए कितना मनहूस होगा। बाइस अगस्त सब कुछ खत्म सा हो गया हम लोग समझ नहीं पा रहे थे। डॉक्टरो के बताए गए वाक्य कानो में गूंज रहे थे। पापा कभी अंग्रेजी दवाओं को भूलकर नहीं लाते थे न सेवन करते थे। गिलोय को सुबह गर्म पानी के साथ पीते थे। उनकी जीवन शैली सब सुचारू रूप से ठीक थी कभी बीमार नहीं हुए थे कि हम लोग थोड़ा सा सतर्क हो जाएं अगस्त माह उस शाम को ब्रेनहेमरेज व ब्लडप्रेशर अधिक बढ़ जाने की वजह से हृदयाघात भी हो गया। यह सब देखकर हम भाइयों को कुछ भी समझ नही आ रहा था। मैं खुद ठगी व असहाय सी। कितना सबकुछ अपने जीवन मे लेकर चल रहे थे। जो कुछ भी समाज में दीन दुःखियों के दुःख को देखते तो उनके दुःख को आत्मसात कर हर सम्भव सहयोग करने के लिए तत्पर रहते थे। यह सब सोचते हुए ट्रेन बिलासपुर जंक्शन पर पहुंच गई आंखों में आंसू डबडबा आई। ट्रेन से उतर कर उसी बेंच पर बैठ गई और दूसरी ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगी। प्लेटफार्म नम्बर एक की बेंच पर पापा के वापस आने की आस लिए दूसरी ट्रेन से मैं अपने गंतव्य के लिए रवाना हो गई। पीछे मुड़कर देखी तो खाली सिर्फ बेंच, आज भी जब भी बिलासपुर जाती हूँ वह बेंच मुझे वहाँ पापा के होने का एहसास दिलाता है। एक आस व उम्मीद के साथ...

खुशी एक तरफा होती है
जो आती है, लेकिन ठहरती नहीं
रुकती नहीं,
एक स्पर्श की भांति
कानों में गुनगुना जाती है
और कहती है
यहीं आस-पास ।
देखो मैं तुम्हारे ही साथ हूँ
देखों जहाँ में,
जीवन में दुःख राहत भरती है फिर कहती,
मैं प्रतिपल नहीं हूँ।
पर हूँ, कहीं नहीं
तू क्यों है उदास तू चल में मिलूँगी
मेरा निश्चित नहीं
आ मेरे साथ, आ मेरे पास।

लोकतंत्र

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

"कल चुनाव है बहू! आज ही मेरी दवाई मँगवा दो। कल बहुत भीड़ होगी।"

मई की दोपहरी है तुम अकेले दवा लेने क्यों जा रही हो, बेटा रामू कहाँ है उससे कहो वह जाये दवा लेने। वह हट्टा खट्टा है, फिर आदमी है। मेरी बूढ़ी सास हाँफते हुए बोली। मैने अपनी सास से कहा, 'अम्मा कल कुछ दूसरी पार्टी वाले बैनर बिल्ला लेकर आये थे और उनसे कहा कि वह चुनाव तक यहाँ से दूर चले जायें और वह कल रात ही चले गए पर चिंता न करो वह कल मतदाता केंद्र पर जरूर आएंगे। रही बात दवा की तो अम्मा ! दो बार जाने से अच्छा कल जब वोट देने जायेंगे तब दवा भी ले लेंगे।'

दूसरे दिन मतदाता केंद्र से पहले भंडारा लगा था। एक बूढ़ी ऊंची आवाज में कह रही थी, 'मैं भंडारा के लिये अंदर गयी तो अन्दर खाना खत्म हो गया था। जब बाहर आयी तो मेरी चप्पल गायब है।'

मैने उस बूढ़ी को अपनी चप्पल उतार कर देते हुए कहा, ष्आंटी, मैं नंगे पाँव चल लूंगी, चप्पल तो फिर आ जायेगी पर लोकतंत्र नहीं बचा तो आजादी भी छिन जायेगी

अनंत यात्रा

रेखा राजवंशी, ऑस्ट्रेलिया

अपने जीवन के नब्बे सालों में जितेंद्र नाथ जी ने सोचा भी नहीं था कि कभी ऐसा दिन भी आएगा। इससे पहले भी अपने इकलौते बेटे के पास कई बार सिडनी आ चुके थे। जब भी वे पहुँचते तो बेटा-बहू बड़े उत्साह से उन्हें लेने एयरपोर्ट आते। घर पहुँचने पर उनके आराम का पूरा ख्याल रखा जाता। पोता-पोती दोनों दादू-दादू करते आगे पीछे घूमते रहते।

सिडनी में बेटे के घर में सारी सुख सुविधाएं थीं। घर में क्लीनर आता, गार्डनर आता, कभी-कभी अंगीठी पर उनकी रोटियां उनकी मॉडर्न बहू ही बनाती थी। तीन महीने में वे बेटे के परिवार के साथ रहने की सारी शर्त पूरी कर लेते थे। बेटा कभी-कभी व्हीलचेयर में बिठा शॉपिंग मॉल ले जाता, जहाँ वे अपने पसंद के सब्जी, फल खरीद लेते। फिर कॉफी शॉप में बैठ कॉफी और मफिन भी खा लेते। इस तरह से उनका मन भी बहल जाता। कभी पोती जिदकर के उन्हें बीच पर आइसक्रीम खिलाने ले जाती, कभी पोता उन्हें ड्राइव पर ले जाता। बहू-बेटे उन्हें नई से नई फिल्मे दिखलाते थे।

इस बार भी समय बहुत अच्छा बीत रहा था, खाते पीते, टीवी देखते हंसी खुशी में वक्त कट रहा था। परन्तु अचानक ये क्या हो गया। दुनिया भर को इस कोरोना महामारी ने कैसे घेर लिया, पता ही नहीं चला। पिछले महीने से ये कोरोना वायरस वूहान में फैल चुका था। ऑस्ट्रेलिया में भी चीन से लौटने वाले कुछ लोग इसकी चपेट में आ गए थे। आगे भी वायरस के संक्रमण का डर था।

जिंतेंद्र नाथ जी का वापसी का टिकट ११ फरवरी का बुक था।

बेटे-बहू ने स्थिति देखते हुए अनुरोध किया 'पापा और रुक जाइये, अभी जाना ठीक नहीं रहेगा' पर जितेंद्र नाथ और अधिक रुकना नहीं चाहते थे। उन्होंने वापस जाने का मन बना लिया था, बोले 'ज्यादा फिक्र की बात नहीं है, एक दिन में तो दिल्ली पहुँच ही जाऊंगा। फिर वहाँ सुप्रिया लेने आ ही जाएगी। डॉक्टर बेटी है मेरा ख्याल भी रख लेगी तुम लोग चिंता न करो।'

जितेंद्र नाथ चीफ इंजीनियर की पोस्ट से रिटायर होकर गाजियाबाद के एक आरामदायक घर में रह रहे थे। दो बच्चे थे, पत्नी शीला की सात साल पहले मृत्यु हो गई थी। बेटी डॉक्टर थी जो गाजियाबाद में ही प्रैक्टिस करती थी, वही उनका पूरा ख्याल रखती थी। उनका वश चलता तो बेटे को ऑस्ट्रेलिया कभी न आने देते, परन्तु उसकी उन्नति में वे आड़े नहीं आना चाहते थे। सबको अपने सपने पूरे करने का अधिकार है आखिर।

११ तारीख को सुबह जब बेटा उन्हें एयरपोर्ट छोड़ने आया, तो बहुत चिंतित था, पर जितेंद्र नाथ जी बोले, 'इतनी चिंता मत करो, शाम को पहुँच ही जाऊँगा।'

एयर इंडिया की सीधी फ्लाइट थी। बिजनेस क्लास में आराम से बैठ गए। जागते-सोते जाने कब फ्लाइट समय पर शाम पाँच बजे दिल्ली पहुँच गई। व्हीलचेयर असिस्टेंस समय पर आ गई, पर जब वे बाहर निकले तो सारा माहौल कुछ अजीब लगा। चारों तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी। एयरपोर्ट पर बहुत भीड़ थी, इतनी सिक्योरिटी पहले कभी देखी नहीं थीं, हर और लम्बी लाइने थीं। जब वे इमीग्रेशन के काउंटर पर पहुंचे तो पता लगा कि वे घर नहीं जा सकते। सभी यात्रियों को चौदह दिन के 'सोशल आइसोलेशन' में रहना होगा।

'सोशल आइसोलेशन? क्यों? ऑस्ट्रेलिया में तो कोरोना वायरस इतना फैला भी नहीं है?' उन्होंने अफसर से तर्क करने की कोशिश की। पर कोई कुछ सुनने को तैयार नहीं था, हार कर बेटे को फोन मिलाया, बेटी से बात की। सबने अपनी जान पहचान के ब्यूरोक्रेट्स और राजनीतिज्ञों से संपर्क करने की कोशिश की। पर कुछ हो नहीं पाया। किसी तरह इतना भर हुआ कि दस घंटे के इंतजार, टेस्ट और अन्य औपचारिकताओं के बाद सुबह के तीन बजे निर्णय हुआ कि उन्हें एक फाइवस्टार होटल में के कमरे में चौदह दिन रुकना पड़ेगा। प्राइवेट कार में उन्हें होटल भिजवाया गया। थके हारे जितेंद्र नाथ का भारत आने का सारा उत्साह हवा हो गया।

उधर परेशान बेटा-बहू, बेटी- दामाद सब रात भर जागकर उन्हें सांत्वना देते रहे 'पापा, कुछ हो नहीं पा रहा है। चौदह दिन की ही बात है, देखते ही देखते समय निकल जाएगा। हिम्मत रखिये।' होटल पहुँच करके हैरान जितेंद्र नाथ सो गए।

होटल में उनकी दवाइयाँ, खाना सबका ख्याल तो रखा जा रहा था। मांगने पर मदद भी उपलब्ध थी। सारा परिवार उनसे फोन पर बात करता रहता था। मनोरंजन के लिए टीवी था।

भारत भर में लॉकडाउन की खबरें आ रहीं थीं। लगता था कि विश्व में जैसे उथल पुथल मच गई थी। तीन दिन तक तो जितेंद्र नाथ ने हिम्मत से काम लिया पर फिर वे टूटने लगे। इतना अकेलापन उन्होंने कई दिन से न देखा था, न जिया था। कभी-कभी वे ठीक से सो भी न पाते, रात भर करवटें बदलते रहते। वो भीतर ही भीतर मरने लगे, नब्बे साल की उम्र में यह दिन भी देखना पड़ेगा, सोचा भी नहीं था। साढ़े तीन हजार रुपये रोज का ये सुविधापूर्ण कमरा काटने लगा। अतीत की गलियों में भटकने लगे। कभी माँ सामने आ जाती, कभी पिता। कभी दोस्त याद आने लगते, तो कभी अफसरी के वो दिन याद आ जाते व पूरा-पूरा दिन वे लोगों से घिरे रहते।

कभी गोरी चिट्टी, लाल बिंदी लगाए, रेशमी साड़ी में सजी पत्नी शीला याद आ जाती, जो उनकी पसंद का पूरा ख्याल रखती।

अगले हफ्ते तक वे अतीत में जीने लगे, फोन पर लम्बी बात करना उन्हें अच्छा न लगता। कभी-कभी वे खुद से ही बातें करने लगते 'शीला, जिन्दगी भर साथ रहने का वादा किया था न, मुझे छोड़ कर तुम इतना आगे निकल गईं।'

कभी आवाज लगाते, 'पापा मैं इंजिनीयरिंग में सेलेक्ट हो गया।'

या कभी खुशी से भर जाते और कहते 'माँ मैं घर पहुँच रहा हूँ, मेरी पसंद का खाना तैयार रखना।'

मौसम बदल रहा था, हल्का सा जुकाम हो गया। बैठे-बैठे दिमाग में आया, और बुदबुदाए, 'कहीं मुझे कोविड तो नहीं हो गया?' बेटी-बेटा चिंतित रहते। उन्हें जरा सा भी लगता कि जितेंद्र नाथ ठीक नहीं हैं तो उन्हें देखने के लिए डॉक्टर को भेजने की रिक्वेस्ट करते।

किसी तरह अंततः चौदह दिन बीत गए।

बेटी का फोन आया, 'पापा, मैं कल सुबह ही पहुँच रही हूँ, तैयार रहिएगा।'

जितेंद्र नाथ खुश हुए, ऐसा तो नहीं था पर लगा 'चलो ये चौदह दिन तो कट ही गए।'

एक हेल्पर की मदद से रात को ही सामान पैक करवाया। सुबह से तैयार होकर बैठ गए। बेटी सात बजे पहुँचने वाली थीं, दवाई खानी थी तो हल्का सा ब्रेक फास्ट कमरे में ही खा लिया।

इंतजार में कुछ घंटे ऐसे ही बीत गए। वैसे तो कर्फ्यू के चलते किसी को आने-जाने की अनुमति नहीं थी पर बेटी सुप्रिया डॉक्टर थी तो जितेंद्र नाथ की मेडिकल कंडीशन के चलते फ्रंट लाइन वर्कर की तरह उसे ड्राइव करने की अनुमति मिल गई। जितेंद्र नाथ जी इंतजार में बैठ-बैठे हलकान होने लगे। कई बार रिसेप्शन को फोन कर लिया। बेटी को फोन करना नहीं चाहते थे, ड्राइव कर रही होगी।

तीन घंटे में सुप्रिया का फोन आया, 'पापा, बारह बजे तक निकलने की अनुमति मिली है, तो मैं करीब दो बजे तक ही पहुँच पाऊँगी। आप चिंता न करें, प्लीज लंच खा लें।'

बुझे मन से जितेंद्र नाथ जी टीवी लगाकर लेट गए। आधा दिन तो यहीं निकल जाएगा, सोचकर परेशान हो गए। बेटे से भी फोन पर बात हो गई। वे समझते थे कि सभी चिंतित थे। पर नियति के आगे क्या किया जा सकता था?

टीवी पर देख रहे थे कि दिल्ली में काम करने वाले हजारों मजदूर जल्द से जल्द अपने गाँव वापस जाना चाहते थे। महानगरों में अनिश्चितता की स्थिति थी। नौकरी पर जा नहीं सकते थे, खाने-पीने की सारी दुकाने बंद थीं। पुलिस बाहर निकलने वालों को रोकने का प्रयास कर रही थी। महामारी के बावजूद भी लोग बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। कुछ लोग स्थिति की गंभीरता से वाकिफ नहीं थे, कुछ लोग आदतों से मजबूर थे, भारत में वैसे भी बहुत लोग कानून और कर्फ्यू को सीरियसली नहीं लेते, कुछ को नियम तोड़ना अच्छा लगता था या सोचते थे कि वे तो पुलिस की नजर से किसी तरह बच ही जाएंगे। पुलिस भी क्या करती? लातों के भूत बातों से नहीं मानते, तो उन्होंने भी सख्ती दिखानी शुरू की, पुलिस वाले नियम तोड़ने वालों को मुर्गा बना रहे थे, उकडू चला रहे थे और कुछ डंडे भी

बरसा रहे थे। पर परेशानी थी उन मजदूरों को, जो अपने परिवार के पास पहुँच जाना चाहते थे, चाहें कैसे भी, चाहे कितने दिन में। बसें और वाहन चल नहीं रहे थे तो अनेक लोग पैदल ही अपने गाँव की ओर चल पड़े। अगर कोरोना से मौत हो भी जाए तो कम से कम वे अपने घर वालों के साथ हों, कोई क्रिया करम करने वाला तो हो। पहली बार अपने ही देश में अपने ही लोगों का इतना बड़ा विस्थापन हो रहा था। नन्हे-मुन्ने बच्चों को पीठ पर बांधे जाने कितनी महिलाएं और हाथ में गठरी लिए पुरुष घर पहुँचने की साथ में दिन रात चलने लगे थे।

जितेंद्र नाथ समझ नहीं पा रहे थे कि ये कैसा वक्त आ गया है। उनकी आँखों के सामने भारत और पकिस्तान के विभाजन का दृश्य घूम गया, जब वे रावल पिंडी में रहते थे और उनके पिता दादा के साथ कपड़े का व्यवसाय चलाते थे। बड़े से घर में जितेंद्र नाथ दादा -दादी, माँ-पिता के साथ रहते थे। बचपन से अब तक कोई परेशानी देखी न थी। हिन्दू, मुस्लिम, सिख सब मिल-जुलकर त्यौहार मनाते। एक दूसरे के घर जाते।

उन दिनों देश में ब्रिटिशराज था, पर स्वतंत्रता के लिए लोग लड़ रहे थे। जगह-जगह मोर्चे निकल रहे थे, सब कहते थे अब तो हम स्वतन्त्र हो कर ही रहेंगे। पर कब और कैसे, किसी को पता न था। अनिश्चितता का माहौल था। वो दिन जितेंद्र नाथ कैसे भूल सकते हैं जब वे हमेशा की तरह अपने घर में बेफिक्री की नींद सोए हुए थे कि अचानक सुबह दरवाजे की कुंडी बजने की तेज आवाज ने पूरे परिवार को उठा दिया।

'जल्दी बाहर निकलो, जो कुछ ले सकते हो बांध लो और जान बचानी है तो अभी का अभी निकल चलो' पड़ोस के हर मोहन सिंह कह रहे थे। इससे पहले कि पिता कुछ समझते दंगाइयों की आवाजें आने लगीं।

पूरा परिवार जैसे हड़बड़ा गया। 'पंद्रह मिनट में निकल रहे हैं, साथ चलो तो सुरक्षित रहोगे' कहते हुए हरमोहन सिंह भागकर अपने घर चले गए।

माँ ने जल्दी-जल्दी जो हो सकता था, बाँथा। बचपन का आँगन छूट गया, रजिया और अनवर के साथ खेले खेल पीछे छूट गए, आम और अमरुद के पेड़ वहीं रह गए। जितेंद्र नाथ को अच्छी तरह याद है कि कैसे वे रजिया को

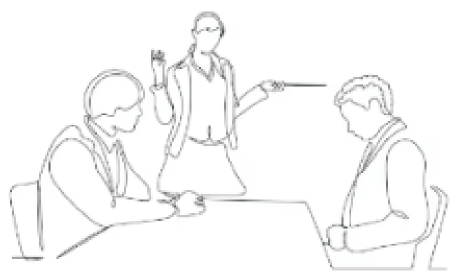

आखिरी बार देखना चाहते थे, और उसी हसरत में गली में कुछ मिनट के लिए रुक गए थे कि अचानक उनकी बाईं बांह पर किसी ने लाठी से वार किया। वे तड़प के रह गए, इससे पहले कि देख पाते, दर्द महसूस करते, पिता लगभग खींचते हुए वहाँ से उन्हें भगा ले गए। कंधे पर सामान लादे पूरा परिवार, दादा, दादी, माँ, पिता और जितेंद्रनाथ भारत जाने वाली भीड़ का हिस्सा बन गए। दो दिन चलने के बाद लॉरी मिल गई, और उसमें बैठाकर उन्हें शरणार्थी कैंप में पहुँचा दिया गया।

रोज लोगों के जत्थे के जत्थे कैम्प में आते, अपना घर, आँगन, व्यवसाय, दोस्त, परिवार सब छोड़कर जान बचाने की खातिर भागकर कैम्प पहुंचे लोग। सब टूटे थे, दुखी थे, गरीब थे। किसी को लूट लिया गया था, किसी के भाई या पिता का बड़ी बेरहमी से कत्ल कर दिया गया था, किसी की बीवी या बहन की अस्मिता लूट ली गई थी। जितेंद्र नाथ के परिवार की किस्मत अच्छी थी कि जल्द ही उन्हें सुरक्षित दिल्ली पहुंचा दिया गया। कुछ दिन लाल किले में लगे शरणार्थी कैम्प में रहना पड़ा। बाद में रहने को अमर कॉलोनी में दो कमरों का घर भी मिल गया। कड़ी मेहनत से पिता ने लाजपत नगर में कपड़े की दुकान खोली। अपना पेट काटकर उन्हें इंजीनियरिंग की शिक्षा दिलाई।

अतीत की गलियों में भटकते हुए जितेंद्र नाथ का मन अचानक विक्षुब्ध हो गया। इतने दिन बाद उन्हें अपनी बाईं बांह में बेपनाह दर्द होने लगा। लगा जैसे बांह पर नहीं दिल पर लाठी पड़ी हो। पुलिस वाले आखिर लाठी मार ही क्यों रहे हैं? ऐसा कैसे हो सकता है, लोग पैदल चलकर कब घर पहुंचेंगे। सरकार को कर्फ्यू लगाने के पहले सार्वजनिक परिवहन ट्रेन, बस आदि का इंतजाम करना चाहिए था। जितेंद्र नाथ जी ने लगभग एक सदी जी ली थी। वे घर, गाड़ी, बेटा, बेटी सब कुछ होते हुए भी आज अकेले थे। दोस्त तो अधिकतर धीरे-धीरे भगवान को प्यारे हो चुके थे।

लोग सोचते हैं अमीरों को कोई दर्द नहीं होता। पर उन्हें कौन समझाए कि अमीर भी इंसान ही होते हैं, उनका भी दिल होता है, शरीर होता है, भाव होते हैं, वे भी सुख-दुःख उसी तरह महसूस करते हैं जैसे गरीब लोग। अगर पैसे से सब कुछ खरीदा जा सकता तो लोग दोस्त खरीद लेते, खुशियां खरीद लेते, सेहत खरीद लेते। पर ऐसा होता नहीं है, जिसके पास जितने ज्यादा पैसे होते हैं वे उतना ही अकेले हो जाते हैं। तन्हाई को किसी पैसे से नहीं भरा जा सकता। जितेंद्रनाथ ने इन चौदह दिनों में जैसे चौदह बरस का वनवास भोग लिया हो।

जाने क्यों अब तक जीवन बेमानी लगने लगा था, 'क्यों आखिर क्यों जिंदा हूँ मैं, मेरे जीवन का मतलब ही क्या है?' सोचते-सोचते उन्होंने अपनी बाईं बांह को सहलाया, लगा जैसे दर्द पुनः वापस आ रहा है। इसी तरह जाने कब उनकी आँख लग गई। दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज से उनकी आँख खुली, देखा तो खाना आ गया था। थोड़ा लंच खाया, आखिरकार सुबह पांच बजे से जग के बैठे थे।

दो बजे के करीब फोन की घंटी बजी, 'मिस्टर जितेंद्र नाथ, योर डॉटर इस हियर, प्लीज गेट रेडी।'

अंततः इंतजार की घड़ियाँ खत्म हुईं। बेलब्वॉय ने ट्राली में उनका सामान रखा, व्हीलचेयर असिस्टेंट ने उन्हें बैठने में मदद की और वे होटल की लॉबी में आ पहुंचे। उन्हें ध्यान से कार तक लाया गया।

बेटी से मिलते ही आँखें भर आईं, उसने सहारा देकर उनको कार में बैठाया। 'पापा अब मैं हूँ न, चिंता न करिये' लाड़ से उसने उन्हें समझाया। तुरंत बेटे का भी फोन आ गया, 'पापा यू डिड इट।'

पोती कह रही थी 'यू विल बी फाइन दादू।'

कार में बैठने के बाद जब जितेंद्र नाथ ने सांस ली। लगा कि जैसे एक लम्बी कैद से मुक्ति मिल गई हो। कार की सीट में धंसे हुए सड़क पर लगे पेड़ और नीले आसमान को देखकर आज अर्से बाद उन्हें बहुत अच्छा लगा। औपचारिक बातों के बाद आँखे बंद करके आराम से कार में बैठ गए।

दो घंटे बाद गेट खुलने की आवाज से उनकी आँख खुली। देखा घर आ गया है, 'होम, स्वीट होम' वॉचमैन ने आकर उन्हें सलाम ठोका। गार्डन में लगे गुलाब और बेले की महक उनकी साँसों में अमृत की तरह भर गई। लॉन में लगी नरम मुलायम हरी घास पर दौडने का मन हो आया। उन्हें याद आया कि शीला और उन्होंने बड़े दिल से कोठी बनाई थी और माली की सहायता से शीला ने क्यारियों में एक-एक पौधा बड़ी लगन से बोया था। अचानक उन्हें लगा कि शीला उन्हें बुला रही है, 'देख क्या रहे हैं, अंदर आइये न।'

उनके चेहरे पर भी मुस्कराहट आ गई। गाड़ी पोर्टिको में रुकी, माली, कुक और नौकर ने आकर उन्हें नमस्ते की। उनकी मदद से बेटी ने ध्यान से जितेंद्र नाथ को उतारा।

इतनी देर में दरवाजा खोलकर आते पिता की आवाज आई, 'जीतू आ गया बेटा? ठीक है न।' जितेंद्र नाथ जी को लगा कि वे एक छोटे बच्चे की तरह दौड़कर पिता की गोदी में चढ़ जाएं।

बेटी ने अंदर ले जाकर सजे-धजे ड्राइंग रूम की आरामदायक कुर्सी पर उन्हें बैठाया, तो लगा जैसे मौत और जिन्दगी के बीच का फासला तयकर आए हों। और फिर जिन्दगी का भरोसा भी क्या? सिर्फ सांस बंद होने और शरीर ठंडा होने के बीच की स्थिति ही तो है मौत। वैसे भी दुनिया भर में हजारों लोग रोज मर रहे हैं इस वायरस से, जिन्दगी और मौत पर किसी का

निहो हिंडाक्यो को शांति का नोबेल

सुरेशचन्द्र शुक्ल ‘शरद आलोक’

ओस्लो, ११ अक्टूबर (देशबन्धु)। नार्विजन नोबेल इंस्टीट्यूट ने नोबेल शांति पुरस्कार २०२४ के लिए जापानी संस्था निहोन हिदानक्यो को दिए जाने का एलान किया। निहोन हिदानक्यो को १६१३ का नोबेल शन्ति पुरस्कार ‘परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया’ के लिए दिया जाएगा। हिरोशिमा और नागासाकी के नरक में जीवित बचे लोगों के भाग्य को लंबे समय तक छुपाया गया और उपेक्षित किया गया।

१६५६ में, स्थानीय हिबाकुशा संघों ने प्रशांत क्षेत्र में परमाणु हथियार परीक्षणों के पीड़ितों के साथ मिलकर जापान ए और एच-बम पीड़ित संगठनों का परिसंघ बनाया। इस नाम को जापानी में छोटा करके निहोन हिडांक्यो कर दिया गया। यह जापान में सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली हिबाकुशा संगठन बन गया। १६१३ का नोबेल शांति पुरस्कार जापानी एनजीओ निहोन हिडांक्यो को ‘परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया’ की दिशा में प्रयासों के लिए दिया गया। एनजीओ को यह पुरस्कार परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया को प्राप्त करने के प्रयासों और गवाहों की गवाही के माध्यम से यह प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है कि परमाणु हथियारों का फिर कभी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि नहर्वेजियन नोबेल समिति ने अपने उद्धरण में कहा है। १६१३ का शांति का नोबेल पुरस्कार जापानी

संगठन निहोन हिडांक्यो को परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया को प्राप्त करने के प्रयासों और गवाहों की गवाही के माध्यम से यह प्रदर्शित करने के लिए दिया गया है कि परमाणु हथियारों का फिर कभी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए, जैसा कि नहर्वेजियन नोबेल समिति ने अपने उद्धरण में कहा है।

पिछले साल, ईरानी कार्यकर्ता नरगिस मोहम्मदी को ईरान में महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ उनकी लड़ाई और सभी के लिए मानवाधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने की उनकी लड़ाई के लिए शांति का नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

शांति पुरस्कार के विपरीत, चिकित्सा, भौतिकी और रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार वैज्ञानिकों के शोध कार्य के प्रकाशित होने के कई वर्षों बाद दिए जाते हैं ताकि शोध कार्य के प्रभाव का प्रभावी ढंग से आकलन किया जा सके। कभी-कभी राजनेताओं और विश्व नेताओं को तुलनात्मक रूप से बहुत पहले शांति पुरस्कार दिए जाने की आलोचना की जाती है।

नियंत्रण ही नहीं है। कुर्सी पर बैठे तो उनकी नजर फिर मुस्कुराती हुई शीला की फोटो पर पड़ी। उन्हें याद आया कि कभी शीला के चेहरे पर शिकन नहीं देखी। आदमी और गई। औरत में यही फर्क है, थोड़े से कष्ट में ही आदमी परेशान हो जाता है पर औरत दुनिया भर के गम सीने में दबाए हुए भी ऊपर से मुस्कुराती रहती है।

तभी दूसरी तरफ दीवार पर टंगी फोटो में माँ दिखीं। मुस्कुराती हुई माँ जैसे निकलकर उनके पास आई, ‘बेटा, थक गया है न, आ लेट। चल तेरा सर दबा हूँ’ और उनके माथे को सहलाने लगी।

जितेंद्र नाथ माँ के आँचल में सर रखकर मुस्कुराने लगे, और जाने कब उन्हें नींद आ गई।

सुप्रिया ने पिता का सर सोफे पर एक तरफ लुड़कते देखा तो भागी आई ‘पापा। डैड। आप ठीक हैं न? देखिये, आपको कुछ नहीं होगा। मैं हूँ न आपके पास सब ठीक हो जाएगा।’ कहते हुए उसने उनकी धड़कन टटोलने की कोशिश की। उन्हें हिलाया, सीपीआर देने की कोशिश की। पर जितेंद्र नाथ वहाँ कहाँ थे। जाने कब वे जिन्दगी और मौत के बीच का फासला तय कर चुके थे। बेले और गुलाब की खुशबुओं में भीगे, लहन में लगी नरम हरी घास पर दौड़ते, माँ-पिता की ऊँगली थामे, मुस्कुराते हुए जाने कब वे जिन्दगी और शरीर की इस कैद से से मुक्त एक अनंत यात्रा पर निकल चुके थे।

नार्वे के नाटककार-लेखक जान फोसे को साहित्य का नोबेल पुरस्कार

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

नाटकों से लेकर उपन्यासों और बच्चों की किताबों तक के विस्तृत क्षेत्र में योगदान देने वाले नार्वे के लेखक जान फोसे को साल २०२३ के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा हुई है।

जान फोसे के बारे में कहा जाता है कि वह उन लोगों की भावनाओं को आवाज देते हैं, जो अपनी बात नहीं कह सकते।

१९५९ में जन्मे फोसे ने ४० से अधिक नाटक लिखे हैं। हेनरिक इबसेन के बाद वह ऐसे दूसरे नाटककार हैं, जिनके नाटकों का नार्वे में सबसे अधिक मंचन हुआ है। इसके अलावा उन्होंने कई उपन्यास, कविता संग्रह, लघु कथाएं, निबंध और बच्चों की किताबें लिखी हैं।

ड्रीम आफ आटम, क्लोज्ड गिटार, विंटर, आफ्टर नून, मार्निंग एण्ड इवनिंग उनकी प्रमुख कृतियां हैं।

नोबेल पुरस्कार विजेता जान फोसे ने उपन्यासों को एक ऐसी शैली में लिखा है जिसे श्फोसे मिनिमलिज्मश के नाम से जाना जाता है। इसे उनके दूसरे उपन्यास श्स्टॅण्ड गिटारश (१९८५)

फोसे अपनी लेखनी में उन कष्टप्रद भावनाओं को शब्दों में जिक्र करते हैं, जिसे सामान्य तौर पर लिखना मुश्किल होता है। श्स्टेंग्ड गिटारश्

में उन्होंने लिखा कि एक नौजवान मां कूड़ा-कचरा नीचे फेंकने के लिए अपने फ्लैट से बाहर निकलती है लेकिन खुद को बाहर बंद कर लेती है, जबकि उसका बच्चा अभी भी अंदर है। उसे जाकर मदद मांगनी है लेकिन वह ऐसा करने में असमर्थ है क्योंकि वह अपने बच्चे को छोड़ नहीं सकती। जबकि वह खुद NEEL को, जान फोसे के शब्दों में, 'कानून के सामने' पाती है।

अंतर स्पष्ट है, जान फोसे रोजमर्रा की ऐसी स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं जिन्हें हमारे अपने जीवन से तुरंत पहचाना जा सकता है।

जान फोसे और नार्वेजीय नीनोर्शक साहित्य के भीष्म पितामह कहे जाने वाले थेर्ये वेसोस बहुत कुछ समानता है।

फोसे आधुनिकतावादी कलात्मक तकनीकों के साथ भाषाई और भौगोलिक दोनों तरह के मजबूत स्थानीय संबंधों को जोड़ते हैं। उन्होंने अपने वॉल्वरवांडशाफ्टन में सैमुअल बेकेट, थॉमस बर्नहार्ड और जहर्ज ट्राकल जैसे नाम शामिल किए हैं। वहीं, वे अपने पूर्ववर्तियों के नकारात्मक दृष्टिकोण को साझा करते हैं, उनकी विशेष ज्ञानवादी दृष्टि को दुनिया की शून्यवादी अवमानना के परिणाम के रूप में नहीं कहा जा सकता है।

साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार चयन समिति के अध्यक्ष ने कहा कि फोसे का काम उनकी नार्वे से जुड़ी पृष्ठभूमि की भाषा और प्रकृति में निहित है। नोबेल पुरस्कार के लिए चुने जाने पर फोसे ने कहा- जब चयन समिति ने फोन किया तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। फोसे ने नार्वे के सार्वजनिक राष्ट्रीय रेडियो-टेलीविजन एनआरके को बताया, 'मैंने इस संभावना के लिए खुद को सावधानी पूर्वक तैयार किया है कि पिछले १० वर्षों में ऐसा हो सकता है। फोन काल आना मेरे लिए बहुत खुशी की बात थी।'

नोबेल पुरस्कार देने वाली स्वीडिश एकेडमी ने कहा कि फोसे ने अभिनव नाटकों और गद्य के

जरिए अपनी बात कहने में अक्षम लोगों को आवाज दी है। एकेडमी के सचिव मात्स माल्म ने बताया कि जब उन्होंने पुरस्कार की जानकारी देने के लिए फोसे को फोन किया, उस समय वह ग्रामीण इलाके में गाड़ी चला रहे थे। उन्होंने आश्वासन दिया कि वह सावधानीपूर्वक घर पहुंचेंगे।

फोसे नार्वे के ऐसे चौथे साहित्यकार हैं, जिन्हें नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया है।

उनसे पहले ब्योर्न स्त्यार्ने ब्योर्नसन को १९०३ में, क्नुत हामसुन को १९२० में और सिग्रीद उनसेत को १९२८ में यह पुरस्कार दिया गया था। इस तरह लगभग एक सदी बाद नार्वे का कोई लेखक नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा है।

साहित्यिक अवसरों पर जान फोसे से मिलना हुआ। यह मुझसे हमेशा मित्रवत मिलते हैं।

सही चुनाव के लिए स्वीडेन की साहित्य की नोबेल समिति को हार्दिक धन्यवाद।

पिकाचू

इला प्रसाद, अमेरिका

'वह पिकाचू है!' 'पिकाचू, क्या?''पिकाचू एक चरित्र है। आजकल के विडियो गेम पोकिमान का सबसे पापुलर कैरेक्टर। अब तो उस पर मूवी भी बन गई है। बिन्नी को पता ही नहीं है, कितनी बुद्ध है।" आकाश ने प्यार से झिडका।

बुद्ध तो वह है ही। इतने वर्षों से अमेरिका में रहने के बावजूद भी यहाँ के समाज, सामाजिक जीवन की बहुत सारी खबरों से अनभिज्ञ रहती है। ये सारी जानकारियाँ उसे आकाश ही देते हैं। आज रूपा के घर पर हो रही उसके दुलारे बेटे अभीक की यह बर्थडे पार्टी उसके ज्ञान में अभिवृद्धि कर गई।

'पिकाचू बिल्ली है?'

'नहीं, चूहा। जापान से आया है। चू-चू चूहा करता है या बिल्ली? तो पिकाचू चूहा हुआ न! इतना भी नहीं समझती।'

'अच्छा, वह हँसी- इतना बड़ा चूहा..!'

कुछ सात फुट ऊँचा, तीन फुट चौड़ा, गोलाकार सा, खूब मोटा, पीले रंग का पिकाचू अब अपने कान हिला रहा था। अपनी जगह पर हिलता -डुलता, आगे-पीछे होता, कभी कान, तो कभी हाथ हिलाता वह बच्चों ही नहीं, बड़ों के भी आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था। आडियो टेप पर अगले खेल के निर्देश एक बच्चे की मीठी आवाज में गूँज रहे थे। यह रूपा के घर का पीछे का खुला आहाता था जिसमें इस साल पिकाचू आया था।

बच्चों के मनोरंजन के लिये। वरना इससे पहले हर साल बिन्नी ने सारा खेल घर के अंदर के बरामदे में देखा था। वह चाहे मिकी माउस हो या मिनी माउस।

रूपा का यह घर बहुत बड़ा है। पहले वह अभीक का जन्मदिन वन्डर वैली पार्टी हाल में मनाती थी लेकिन जब से उसने यह घर लिया, वह हर साल वन्डर वैली से तात्याना की टीम को अपने घर पर बुला लेती है।

बिन्नी की परेशानियाँ बहुत हैं। होने को वह हर बार रूपा के घर होती है। है। उसकी हर पार्टी में लेकिन पूरे मन से शायद ही कभी मजा ले पाती है। पिछले छह सालों में उसने तीन बार नौकरी बदली है। आकाश कहते हैं कि उसे टिक कर काम करना आता ही नहीं। "थोड़ा धीरज रखो मैडम, समस्यायें आती रहेंगी। उनसे डील करना सीखो।" उसे लगता है आकाश क्या जानें। 'पुट युअर लेग्स इन अदर्स शूज्स। देन यू विल नो हाऊ मच इट हर्ट्स।' वे चुप हो जाते हैं।

मौसम खुला था, हवा में हल्की सी ठंड, जैसी वसंत ऋतु में होती है। पिकाचू के कास्ट्यूम के अंदर खड़ी तात्याना स्वस्थ महसूस कर रही थी। उससे कुछ दूरी पर उसकी माँ जोया खडी थी। बरामदे पर सारे गेम्स पिटारों में पड़े थे। अगले खेल का निर्देश आता और एक और पिटारा खुल जाता। रंगीन बाल निकले, इन्द्रधनुष निकला, आक्टोपस और केक का कास्ट्यूम निकला, साबुन के बुलबुले बनाने वाली पिचकारियाँ निकलीं। बच्चे दौड़े, फरीज हुए। बुलबुले हवा में उडाए, रंगीन गेंदें उठायीं और इन्द्रधनुष तक छलांग लगाई। इस सारे तमाशे के बीच एक छह -सात साल की बच्ची मैदान में दौड़ती रही। पिटारे खोलती, चीजें देती, समेटती रही। बिन्नी को याद आया - यह शायद वही बच्ची है जो उसने वंडर वैली में अभी तक के पहले जन्मदिन पर देखी थी। तात्याना की बेटी। उसका अनुमान गलत नहीं था। निकट ही खड़ी जोया से उसने पूछ ही लिया था। वह साशा ही थी। तात्याना की बेटी साशा। "ये आडियो साशा ने ही बनाया है।" जोया ने सगर्व बताया था "स्कूल से लौटने के बाद नये नये गेम्स बनाती है साशा और अपनी आवाज में रिकार्ड करती है।" "वाह। बहुत मीठी आवाज है। मैं सोच ही रही थी कि किस बच्चे की आवाज है।" बिन्नी ने प्रशंसा की थी।

'हाँ।' जोया प्रसन्न हुई थी और आगे बढ़ गई थी। उसके साथ ही खेल आगे बढ़ गया था। जोया हर बार अभिभावकों से अनुरोध करती मुझे आपका सहयोग चाहिये और एक या दूसरा अभिभावक खेल में शामिल हो जाता। कभी आक्टोपस बनने के लिये, कभी केक का मुखौटा चढ़ाने के लिये। बच्चे मैदान में दौड़ रहे थे रंग बिरंगी गेंदे उठाते, आक्टोपस को छल्ले पहनाते, पिकाचू से हाथ मिलाते और फिर केक पर से अँगूठियाँ उठाते, नकली मोमबत्तियाँ जलाते.. हैपी बर्थडे अभीक !

इसी तरह वह टुकड़ों में जानकारियाँ लेती रही है जोया और तात्याना से। कभी खेल के बीच और कभी शो के बाद। वह बहुत कुछ जानती है अब उनके बारे में। यह भी कि तात्यना को गाजर का हलवा बहुत पसन्द है। बिन्नी ने उसे गाजर का हलवा बनाने की पूरी विधि लिख कर दी है।

उल्लास, किलकारियाँ, ठहाके और सम्मिलित हँसी.. बच्चों के साथ बड़े भी मजा ले रहे थे। जिन्हें अधिक भूख लगी थी वे अभी भी अंदर अपनी प्लेटें समोसों और चिप्स से भर रहे थे। आकाश भी अंदर चले गये थे। कुछ ने तो खाना खाना शुरु कर दिया था। उस पार्टी में अमरीकनों की संख्या भारतीय परिवारों के बराबर ही थी। रूपा के पति की नौकरी ने उसे अमरीकन तरीके से बर्थडे मनाना ही नहीं सिखाया था वरन हाइ हील सैंडल और सलमे सितारों वाली घुटनों से ऊपर फराक में सजी-धजी वह घोषणा करती सी जान पड़ती थी कि वह अमेरिका के रंग में रंग चुकी है। भोजन जरूर भारतीय था। बच्चों के लिये पिज्जा के अतिरिक्त सब कुछ भारतीय। समोसे, गाजर का हलवा, नान, मन्चूरियन राइस, मटर पनीर और गोभी मंचूरियन ने अब तक काफी ख्याति अर्जित कर ली थी और उसके चीनी, स्पैनिश, लेबनीज और वाइट सभी अमेरिकन मित्रों को इस भोजन का इंतजार रहता

था।

शाम धुंधलाने लगी थी। कास्ट्यूम में कैद तात्याना अब पसीने से भीग रही थी। पिकाचू का यह कास्ट्यूम उसने दो महीने पहले ही खरीदा था। इसकी सुविधा यह थी कि इसके अन्दर एक पंखा भी लगा था और गर्मी कम महसूस होती थी।

पिकाचू की बड़ी प्लास्टिक की आँखों से साफ-साफ दिखता नहीं था और दूर तक देखना तो असम्भव। साँस लेने के लिये बस उसके मुँह का हिस्सा था जहाँ अन्दर की तरफ छेद था, वरना घंटे दो घंटे के कार्यक्रम में उसकी साँस घुटने लगती। खुले आकाश के नीचे, गर्मी से और जान निकलती। घर के वातानुकूलित वातावरण ही उसे सही लगते लेकिन आज मौसम अच्छा था और वह पिकाचू बनी थी, मिनी या मिकी के पुराने कास्ट्यूम में नहीं थी।

रूपा अब उसकी मित्र होती जा रही थी। साल मे दो बार तो वह बुलाई ही जाती। ऐसे ग्राहक को अपना सर्वश्रेष्ठ देना उसे अच्छा लगता था। उसने पूर्वाभ्यास किया था। पिकाचू का कास्ट्यूम उसे अच्छा लगा था। उसने सारे निर्देश पढ़े थे और पूरे आत्मविश्वास के साथ आज पिकाचू बनी थी लेकिन अब पिकाचू के अंदर की हवा बड़ी तेजी से बाहर निकलती जा रही थी और पिकाचू पिचकता जा रहा था। पहले उसकी ऊँचाई गई। यही वह वक्त था, जब बिन्नी का ध्यान गया। फिर उसके पैर सिकुड़ने शुरु हुये। अब चेहरा बार-बार देखना और मुश्किल हो गया था। चलना भी। उसने धीरे- धीरे किनारे घिसटने की कोशिश की। लेकिन पहले अन्दर का फैन बंद करना जरूरी था। वरना कुछ भी हो सकता था। और यह तात्याना को खुद ही करना था। कैसे भी। हाथ पर चिपके प्लास्टिक कास्ट्यूम से वह इधर-उधर टटोलती रही। यहाँ..

हाँ, यहाँ है स्विच। उसने फैन बन्द किया और राहत की साँस लेने की कोशिश की लेकिन फैन बंद करते ही वह पसीने से भीगने लगी। बदन पर चिपकते जा रहे खोल से बाहर आना जरुरी था। इस तरह तो वह घुट कर मर जायेगी और किसी का ध्यान भी न जाये शायद !

दस बरस से वह इस व्यवसाय में थी। बच्चों की पार्टी की वह बेस्ट शो वुमेन थी। अपनी माँ जोया के साथ जब उसने अमरीका में कदम रखा था तो उसके पास कुछ नहीं था। रूस की गरीबी और अपराध भरी दुनिया छोड़ कर उसे अच्छा लगा था। लेकिन यहाँ भी राहें आसान नहीं थीं। जिस चर्च के माध्यम से वह यहाँ लाई गई थी, उसने उसकी शिक्षा की व्यवस्था की, माँ को सिंगल मदर होने के नाते सरकारी सहायता मिली लेकिन यह सब स्थायी नहीं था। वे लौटना नहीं चाहती थीं और चर्च एच वन की व्यवस्था करने में असमर्थ था। तात्याना ने स्कूल की पढाई जल्द ही छोड़ दी और एक अमरीकन से शादी कर ली। अब वह अमेरिका की स्थायी नागरिक थी। जोया को अपनी समझदार बेटी पर गर्व हुआ।

भाषायें सीखने का उसे शौक था। जहाँ उसकी माँ अब तक टूटी फूटी अंग्रेजी ही बोल पाती थी, वह मैण्डारिन, स्पैनिश और अंग्रेजी तीनों भाषाएँ बड़े आराम से बोल-समझ लेती थी। वीक एन्ड में बच्चों की पार्टी या ऐसे ही अन्य किसी कार्यक्रम में होती। सप्ताह के अन्य दिनों में पति के नोटरी और डे केयर बिजनेस में हाथ बंटाती। जीवन सम पर आ गया था अब साशा का भी साथ हो गया था जो उसकी समझदार सहयोगी की भूमिका निभाती। जोया उनकी अभिभाविका की तरह साथ जाती। वह अपने शो में नई चीजें जोड़ती रहती हमेशा। नये कैरेक्टर हर बार। जो उसके स्थायी ग्राहक बन गये थे वे क्यों कर पुराने शो को दोहराने के तीन सौ डालर देते! और इसीलिये यह पिकाचू उसके शो में शामिल हुआ लेकिन आज तो वह उसका दम घोंट कर रहेगा जैसे !

बिन्नी अपने अन्दर भटक रही थी। अगर नौकरी छोड़ दे तो क्या आकाश सम्भाल लेंगे! कुछ दिनों के लिये, कम से कम छह महीने के लिये वह किनारा कर लेना चाहती थी। थक गई है आठ से पाँच की नौकरी से। बेहतर शिक्षा, अनुभव और काम के बावजूद हर बार सारी तारीफ उसका जूनियर ले जाता है। अपने जूनियर से वह तभी मुक्ति पा सकती है जब उसका विभाग बदले। या फिर नौकरी बदले। न तो यह बहस चाहिये उसे, न यह जूनियर। रातों-रात सारा खेल बदल देता है। काम वह करती है, गाते ये किसी और की हैं। कितनी सफाई से वह उससे जानकारियाँ ले लेता है हर बार। आकाश इतना समझाते हैं, वह सोचती है इस बार उसके झांसे में नहीं आयेगी लेकिन चूहे बिल्ली का यह खेल चलता ही रहता है।

धीमें कदमों से घिसटती तात्याना धीरे-धीरे किनारे होती जा रही थी। जोया ने अब उसका हाथ पकड़ लिया था और वह उसे मैदान के दूसरे किनारे ले गई थी। बिन्नी गौर से देख रही थी। पिकाचू का सिर ढलक कर एक किनारे लटक गया था। तात्याना की असली लम्बाई नजर आ रही थी। पाँच फुट तीन इंच। वह अब भी पिकाचू के कास्ट्यूम के अन्दर बंद थी। खेल अभी खत्म नहीं हुआ था। शो तीन घंटे का था, अभी एक घंटा बाकी था। उसे शो जारी रखना था।

साशा अब भी मैदान के एक किनारे से दूसरे तक दौड़ लगा रही थी जैसे कुछ हुआ ही न हो। अगले खेल के निर्देश आये। साशा ने बच्चों को तख्तियाँ थमा दीं। रंग पकड़ा दिये। वाटर कलर निकले, तख्ती पर कागज लगे और तख्ती माँ- पिताओं के गले में झूली। बच्चों ने कागज पर अपनी कलाकारी दिखाई। कुछ ने तो पूरे कागज को ही काले भूरे रंगों से पोत डाला। कुछ ने पिकाचू बनाया। बिल्ली बनाई, पेड़ और घास बनाये। सब व्यस्त !

बिन्नी अपनी उधेड़बुन में थी। अगले खेल के निर्देश आये थे। स्वतः आये या कि साशा ने ही कुछ किया, वह सोच रही थी। जिस तेजी से वह सब ओर दौड़ लगा रही थी उसे तो मिनट भर लगा होगा कैसेट बदलने में, आगे बढ़ाने में। जो भी उसने किया हो। वह आडियो प्लेयर की ओर गई तो थी! उसे भी गेम चेन्जर बनना होगा। चीजें

दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को साहित्य का नोबेल

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' देशबंधु ओस्लो

स्टॉकहोम, स्वैस्का अकैडमी, स्वीडन ने साहित्य में नोबेल पुरस्कार की आज घोषणा की। दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को साहित्य का २०२४ का नोबेल दिया जायेगा।

२०२४ के लिए साहित्य का नोबेल दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को उनके गद्य के लिए दिया गया, जो 'मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करता है।'

दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को उनके शक्तिशाली गद्य के लिए साहित्य में २०२४का नोबेल पुरस्कार दिया गया है, जो ऐतिहासिक आघात और मानव जीवन की नाजुकता का सामना करता है।

साहित्य में नोबेल पुरस्कार २०२४

स्वीडिश एकेडमी फहर लिटरेचर ने गुरुवार को दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को श्ऐतिहासिक आघातों का सामना करने वाले और मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करने वाले उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिएश २०२४ के लिए साहित्य में नोबेल पुरस्कार की घोषणा की।

ट्विटर पर नोबेल पुरस्कार हैंडल ने पोस्ट किया, श्साहित्य में १६१३ का नोबेल पुरस्कार दक्षिण कोरियाई लेखिका हान कांग को ऐतिहासिक आघातों का सामना करने वाले और मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करने वाले उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिएश दिया जाता है।

'अपने काम में, हान कांग ऐतिहासिक आघातों और नियमों के अदृश्य सेट का सामना करती हैं और अपने प्रत्येक काम में, मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करती हैं। नोबेल वेबसाइट ने कांग के बारे में लिखा है, 'शरीर और आत्मा, जीवित और मृत के बीच संबंधों के बारे में उनकी अद्वितीय जागरूकता है और अपनी काव्यात्मक और प्रयोगात्मक शैली के कारण वे समकालीन गद्य में एक नवप्रवर्तक बन गई हैं।'

५४ वर्षीय लेखक ने इससे पहले २०१६में द वेजीटेरियन के लिए कथा साहित्य के लिए मैन बुकर अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था, जो एक महिला के मानसिक बीमारी में उतरने और अपने परिवार से उपेक्षा के बारे में एक उपन्यास है। यह उपन्यास उनकी पहली पुस्तकों में से एक है जिसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया है।

कांग का जन्म १६७० में दक्षिण कोरियाई शहर ग्वांगजू में हुआ था, इससे पहले नौ साल की उम्र में, वह अपने परिवार के साथ सियोल चली गईं। वह एक साहित्यिक पृष्ठभूमि से आती हैं, उनके पिता एक प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं। अपने लेखन के साथ-साथ, उन्होंने खुद को कला और संगीत के लिए भी समर्पित कर दिया है, जो उनके पूरे साहित्यिक निर्माण में परिलक्षित होता है।

अपने हाथ में लेनी होंगी। तभी कुछ हो सकता है!

जोया, तात्याना से रूसी भाषा में बहुत ही थीमी आवाज में बात कर रही थी। निर्देश दे रही थी।

तात्याना के लिये अगर सम्भव होता तो वह शायद अपने खोल से बाहर आ दो मिनट को सुस्ता लेती। खुली हवा को अपने फेफड़ों में भर लेती लेकिन यह सम्भव नहीं था। वह शो-वुमेन थी, दर्शक नहीं। उसने जोया के निर्देश सुने। हाथों पर चिपके कास्ट्यूम के साथ स्विच टटोलती रही। धीरज खोये बिना। आखिर माँ साथ थी। कुछ बीस मिनट और बीते। एक युग बीता जैसे तात्याना के लिये। हाथ चलते रहे। थैंक गॉड! मशीन चालू हुई। धीरे-धीरे फिर से पिकाचू का फूलना शुरु हुआ। हवा भर गई। अब वह फिर से हवा भरे गुब्बारे जैसा था। सात फुट ऊँचा। तीन फुट चौड़ा। तात्याना की जान में जान आई। अंदर का फैन फिर से चलाया उसने। उसके अन्दर एक ठंडक भरने लगी। कुछ मिनट अपने को तैयार करने मे लगे।

अब तात्याना कायदे से साँस ले सकती थी। पिकाचू चू-चू करता चल पड़ा। फिर से हिलता-डुलता। उसके अन्दर चलती तात्याना धीमे कदमों से चलती वापस मैदान में अपनी जगह पर आ खडी हुई। पिकाचू का कान हिलने लगा। हाथ हिलने लगे। वह हँसने लगा फिर से। बच्चों में से किसी का ध्यान शायद ही गया कि वह कुछ बीस-पच्चीस मिनट पहले अपनी जगह से गायब हो गया था। उनके लिए रंग-बिरंगा केक अब भी मैदान में घूम रहा था और उनके वाटर कलर खत्म नहीं हुए थे। कागज पूरे रंगे जाने अभी बाकी थे और लगातार बजता रहा था संगीत। वे खेल में गुम थे। शोर कायम था। ठहाके लग रहे थे। साशा अब भी मैदान में दौड़ रही थी, जैसे उसे कुछ पता ही न हो जबकि वह अपनी माँ और नानी को कनखियों से बार- बार देख लेती थी। सारी स्थिति के प्रति पूर्ण सचेत, अपनी आठ साल की छोटी सी उम्र में ही कुशल व्यवसायी की तरह उसने सारी स्थिति सम्भाल ली थी और किसी के लिये कोई फर्क नहीं पड़ा था। दर्शकों में एकमात्र बिन्नी ही तात्याना की मूक यातना की गवाह थी। उसने आज बहुत कुछ देखा था। आज का पिकाचू अच्छा था लेकिन भविष्य का पिकाचू और भी बड़ा था। वह तो पिकाचू के अतिरिक्त भी बहुत कुछ था। वह तो पिकाचू बने बिना सबको उलझा सकता था। सारा खेल बदल सकता था सबके अनजाने ही।
बिन्नी भी बदलेगी।

तुम्हें पाकर

पुष्पा सक्सेना, यू.एस.ए.

प्रिया के पत्र ने जया को सोच में डाल दिया। पहले की कोमल भीरु प्रिया का इस पत्र की प्रिया से जया कतई मेल नहीं बैठा पा रही थी। पत्र की शुरू की पंक्तियों ने ही जया को चौंका दिया। क्या यह वही प्रिया है, जिसे जया ने बचपन से जाना है? प्रिया ने लिखा था 'शेखर के साथ लिए सात फेरों का बंधन तोड़ कर रजत को पाया है। रजत का साथ पा कर अब और कुछ पाने की आकांक्षा ही शेष नहीं रही। सब कुछ मिल गया है मुझे। बहुत-बहुत खुश हूँ, जया। रजत ने मुझे मेरी पहचान दी है। नहीं-नहीं हम शादी के झूठे बंधन में नहीं बंधे हैं, पर मन के रिश्ते से एक हो चुके हैं। जानती हूं, मेरे इस फैसले से समाज मुझे धिक्कारेगा, मुझे चरित्रहीन और कलंकिनी जैसी संज्ञाओं से अलंकृत किया जाएगा, पर मुझे इन बातों की परवाह नहीं है। रजत के साथ जान पाई हूं सच्ची खुशी किसे कहते हैं। उम्र के इस पड़ाव पर जान सकी हूँ, सात फेरों की जगह मन का बंधन अटूट होता है। उम्मीद है, तू मुझे समझ सकेगी। लंबे पत्र के अंत में प्रिया के हस्ताक्षर थे।'

जया और प्रिया बचपन की सहेलियां थीं। पड़ोसी होने के कारण दोनो साथ-साथ स्कूल और कॉलेज गई थीं। प्रिया संकोची स्वभाव की बेहद संवेदनशील लड़की थी। कहानियां उपन्यास पढ़ते-पढते वह भी कहानियां लिखने लगी थी।

स्कूल-कॉलेज की प्रतियोगिताओं में वह अपनी कहानी पढने का साहस कभी नहीं कर सकी। छात्र-छात्राओं की भीड़ उसे डरा जाती। जया को अपनी कहानी पकड़ा कर अनुनय करती--

'जया, प्लीज मेरी कहानी पढ़ दे।'

'तू खुद क्यों नहीं पढ़ती? अपनी कहानी के पात्रों की फीलिंग्स तू जितनी अच्छी तरस से व्यक्त कर सकती है, मैं नहीं कर सकूंगी।'

'कोई बात नहीं, मेरी कहानी की थीम तो समझ जाएगी, प्राइज मिले या ना मिले, मुझे कतई परवाह नहीं है।'

प्रिया की जिद पर जया को उसकी लिखी कहानी पढ़नी ही पड़ती। कहानियों की ट्रेजेडी जया की आँखें नम कर देतीं।

"तू हमेशा ट्रेजेडीज ही क्यों लिखती है, प्रिया? जिंदगी में कुछ खुशियां भी तो हो सकती हैं। एक बात जरूर है, तेरी दुखद अंत वाली कहानियां तुझे इनाम जरूर दिला जाती है। क्या इसीलिए ट्रेजेडीज लिखती है?" जया परिहास करती।

'हम जानबूझ कर अंत दुखद थोड़ी बनाते हैं। लिखते हुए कहानी अपने आप कुछ से कुछ बन जाती है।' प्रिया मासूमियत से कहती।

'तेरी यह बात तो सच है। कहानी को पढ़ते हुए पाठक जिसे खलनायक समझते हैं, अंत होते-होते तेरी लेखनी उन्हें भी सहानुभूति दिला जाती है।' सच्चाई स्वीकार करती जया हंस पड़ती।

एम.ए. पूरा करते ही जया की शादी आगरा के एक वकील शेखर कुमार के साथ हो गई। विदाई के समय जया के कंधे पर सिर रख कर प्रिया खूब रोई थी। प्रिया के जाने पर जया उदास हो गई थी, पर जल्दी ही रोहित ने उसका जीवन साथी बन कर, उसकी उदासी दूर कर दी। समय बीतता गया। विवाह के छह वर्ष बीत चुकने के बाद प्रिया का यह फैसला क्यों?

दो साल पहले जया एक सेमिनार में आगरा गई थी ताजमहल देखने के साथ प्रिया से मिल पाने की संभावना ने जया को गले लगाती प्रिया का चेहरा खुशी से जगमगा उठा।

'तुझे देख कर मैं तो जी गई, जया।'

'अच्छा, यानी मेरे आने के पहले आप बेजान थीं? लगता है आज भी तू अपनी कहानियों में ही जी रही है। वही पुरानी ट्रेजेडी क्वीन बनी हुई है।' जया ने परिहास किया।

'कहानियां तो मेरा साथ शादी होते ही छोड़ गईं।' एक लंबी सांस ले कर प्रिया उदास हो गई।

'अरे अब तो तेरे सामने तेरी साकार कहानी बन कर तेरा सौरभ आ गया है। कहाँ है तेरा बेटा।"

'स्कूल गया है, थोड़ी देर में आ जाएगा।'

'उसके बिना घर खाली लग रहा है। घर में बच्चे का शोर ना हो तो घर असली घर नहीं लगता।" जया को अपनी दोनों बेटियां याद हो आईं। उनके शोर से घर का कोना-कोना गुलजार रहता है।

"सच कहूं, जया तो यह खालीपन मेरे मन का प्रतिबिंब है।" प्रिया का बुझा सा चेहरा देख, जया चौंक गई।

"वाह क्या बात कही है। एक प्यारा सा बेटा और एक चाहने वाला पति, अपना घर और कार के होते हुए भी तेरा मन खाली है। अब और क्या चाहिए जो तेरा खालीपन भर दे?"

'ठीक कहती है, जया। शायद इतना सब पाकर और कुछ पाने की आकांक्षा शेष नहीं रहनी चाहिए, पर मेरे मन का कोई कोना बेहद रीता है। कभी लगता है, जीवन यूं ही व्यर्थ जा रहा है। अजीब बेचैनी महसूस करती हूँ।'

'क्यों भई, क्या हमारे वकील साहब तेरे मन का खाली कोना भर के तेरा जीवन सार्थक नहीं कर रहे हैं?' जया ने परिहास किया।

'उन्हें अपने मुकदमों से फुर्सत ही कहां मिलती है? कभी-कभी उनकी जीत मुझे रुला जाती है।'

'तेरी बात मेरी समझ से परे है, प्रिया। अरे पति की जीत तो पत्नी का गौरव होती है और तू उल्टा ही कह रही है।'

'कल की शेखर की जीत ने एक पांच साल की बच्ची को उसकी माँ से अलग कर दिया। बाप की ओर से मुकदमा शेखर ने जीता था। बाप का अहं जीत गया। बच्ची की माँ मेरी चौखट पर सिर पटक-पटक कर रोती रही। उसका हाहाकार मुझे अंदर तक चीर गया। बड़ी मुश्किल से उसे हटाया जा सका। मेरी आँखों में आँसू देख शेखर नाराज

हो गए। नारजगी से कहा था।' यह मेरा पेशा है। बेकार की बात पर अपसेट हो कर मेरी जीत का मजा किरकिरा मत करो। अगर रोना है तो अपने कमरे में जा कर रो। तुम बच्ची नहीं हो, एक बेटे की माँ हो, बी प्रैक्टिकल।

'माँ हूँ, इसीलिए तो माँ का दर्द महसूस कर सकती हूँ। अच्छा होता तुम माँ की तरफ से केस लड़ते और बच्ची माँ को दिलवाते। उस स्थिति में मैं तुम्हारी जीत पर गर्व करती।'

'इसका मतलब मेरी जीत पर दुख मनाओगी, क्या वो अकेली औरत बच्ची को पाल सकती?'

'क्या वह बाप जिसने दूसरी शादी कर ली है, बच्ची को माँ का प्यार दे सकेगा? मेहनत-मजदूरी कर के भी एक माँ अपनी बेटी को प्यार और अच्छी जिंदगी दे सकती है। सच तो यह है, उस आदमी ने अपने अहं की तुष्टि के लिए बच्ची को छीना है।'

'तुम्हारी फालतू बातें सुनने के लिए मेरे पास वक्त नहीं है। ऐसी ही हमदर्दी है तो माँ की ओर से केस लड़ डालो, हाँ बहस अंग्रेजी में करनी होगी और अंग्रेजी तुम्हारे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। मूड खराब कर के रख दिया।'

'मुझे सुनाकर शेखर चले गए। उनकी सबसे बड़ी तमन्ना थी उनकी बीवी फरर्राटेदार अंग्रेजी बोलने वाली हो। तू तो जानती है मुझे शुरू से अंग्रेजी बोलने में हिचक होती थी। बात बात में इस बात को सुना कर ताने देते हैं।'

'अपनी किस्मत सराहो, बुआ की जिद से तुम इस घर में आई हो। तुम्हे मेरे गले मढ बुआ खुद स्वर्ग सिधार गईं।'

'क्यों शेखर क्या जानते नहीं थे, तूने हिंदी में एम. ए. किया है वो भी ऐसे वैसे नहीं, फर्स्ट डिवीजन के साथ टॉप किया है।'

हमारे घरों में अंग्रेजी कहाँ चलती थी? ये सब शादी के पहले सोचना चाहिए था। एक बात जरूर कहूंगी शेखर को अपना काम करने दे। तू अपना मन क्यों खराब करती है। वकालत के पेशे में तेरी भावुकता नहीं चलेगी, प्रिया।

'हम क्या करें, जया। हमसे ये सब नहीं सहा जाता। किसी गरीब का दर्द शेखर को नहीं सालता, उनसे जबरन पैसे निकलवाते हैं। उनके आँसू और फरियाद उन पर असर नहीं करती।'

'मेरी एक बात मान ले, प्रिया। अपने पति को उनका काम करने दे। तू अपना दिमाग क्यों खराब करती है? अरे जिंदगी का मजा लेने की कोशिश करो, आगरा में कितने दर्शनीय स्थल हैं। जब जी चाहे बेटे को साथ ले कर निकल जाया करो। आगरे की चाट का मजा लिया है कभी? याद है, हम कॉलेज में घर से लाया खाना भिखारी को दे कर खुद चाट का मजा लेते थे।'

'वो दिन तो हमेशा के लिए खो गए, जया। सौरभ को साथ ले जाने के लिए उसके पास वक्त ही कहां बचता है। स्कूल से आते ही एक ट्यूटर मैथ्स पढाने के लिए आ जाते हैं। अंग्रेजी सिखाने के लिए मैडम डिसूजा रखी गई हैं। उसे मैनर्स सिखाने, खाना खाने के लिए कांटे-छूरी का इस्तेमाल करना, सब उसकी नैनी साइमा द्वारा सिखाया जाता है। मैं तो एकदम नकारा करार कर दी गई हूँ। प्रिया के चेहरे पर उदासी पसर गई।'

'अरे रात में तो तू उसे अपनी कहानियां सुना सकती है। कितनी अच्छी कहानियां लिखती थी।'

'शुरू में कोशिश की थी, पर शेखर को मेरी कहानियां पसंद नहीं आईं। अंग्रेजी कहानियों, कॉमिक्स की सीडीज से उसे मोहाविष्ट कर दिया गया है।'

'अच्छा अब ये बातें छोड़, लगता है, आज भूखे पेट ही सोना पड़ेगा।' जया ने बात का रुख मोड़ने की कोशिश की।

'सॉरी, जया। अभी खाना लगवाती हूँ। तेरी मनपसंद कचौड़ियां और दम आलू बनवाए हैं। तुझसे बातें करते वक्त कहां उड़ गया, पता ही नहीं लगा वर्ना दिन काटना मुश्किल लगता था।'

'वाह चलो, इतने दुख में भी मेरी पसंद तो याद रही,' जया ने परिहास किया। साथ में प्रिया भी हंस पड़ी।

शाम को शेखर जब कोर्ट से लौटे जया और प्रिया चाय पी रही थीं। सौरभ जया के लाए खिलौने ले कर पढने चला गया था। प्रिया से जया का परिचय पाकर 'हलो' कह कर शेखर ने जाना चाहा।

'आरे, आप कहाँ चले। हमारे साथ चाय नहीं पिएंगे?' जया ने हंसकर शेखर को रोकना चाहा। 'नो थैंक्स। मैं कोर्ट में चाय ले चुका हूँ। कल एक बड़ा इंपार्टेंट केस है, मुझे तैयारी करनी है। आप अपनी फ्रेंड के साथ चाय एन्ज्वाय कीजिए।' फिर किसी की बात की प्रतीक्षा ना कर शेखर चले गए।

'देखा तूने, इन्हें चाय पीने तक की फुर्सत नहीं है। कभी-कभी बड़ा अकेलापन महसूस करती हूँ। बेटे को माँ से ज्यादा टीवी में इंटरेस्ट है। सब अपनी दुनिया मे मस्त हैं।'

'तू कहीं जॉब क्यों नहीं ले लेती, प्रिया? एम.ए. की फर्स्ट डिवीजन को जंग क्यों लगा रही है?'

'एक बार शेखर से जॉब लेने की बात की थी, पर वह बेहद नाराज हो गए। कहा था'

'क्यों, क्या पैसों की कमी पड़ गई है? मैं औरतों की नौकरी के सख्त खिलाफ हूँ। तुम काम पर जाओगी तो घर कौन देखेगा? मैंने अपना घर देखने के लिए तुमसे शादी की है। आगे कभी नौकरी की बात भी मत सोचना, अगर इतना ही फालतू टाइम है तो अपना अंग्रेजी का ज्ञान बढा लो। मेरे फ्रेंड्स की बीवियाँ जब अंग्रेजी में बात करती हैं तो तुम उनका मुँह ताकती रह जाती हो। शर्मिंदा मुझे होना पड़ता है।'

'तुझे पूछना चाहिए था, क्या तेरी स्थिति नौकरानी की है? बस घर देखना ही तेरा दायित्व है? उस हालत में तो शेखर को किसी अनपढ़ लड़की से शादी करनी चाहिए थी। मुझे लगता है शेखर खुद किसी हीन ग्रंथि से ग्रस्त हैं, सुना है अनाथ शेखर को उनकी बुआ ने अभावों में पाला है। अब पैसा आने पर शायद वह ऐसी बातें करते हैं। जया उत्तेजित हो उठी।'

"तू शायद ठीक कहती है, मैं ने पहले ही हार मान ली। मैं जॉब के लिए फिर बात करूंगी।"

'सिर्फ बात करने से ही कुछ नहीं होगा। तुझे अपने में हिम्मत लानी होगी, पक्का निश्चय करना होगा कि तुझे जॉब जरूर लेना है। डरने से कुछ हासिल नहीं होने वाला है। जॉब लेने से तेरा खालीपन और निष्क्रियता की भावना तिरोहित हो जाएगी। तू कहे तो मैं शेखर से बात करूँ।'

'नहीं, तेरी बात समझ में आ गई है। जॉब करने से लगेगा मैं भी कुछ सार्थक कर रही हूँ। कामकाजी

औरतें अपने काम के साथ घर की देखभाल भी अच्छी तरह से कर सकती हैं।' प्रिया का चेहरा आत्मविश्वास के साथ चमक उठा।

जया को आगरा के दर्शनीय स्थल दिखाती प्रिया का मूड खुशगवार हो गया। ताज पहुंच जया ने प्रिया को छेड़ा-'याद है तेरी एक कहानी सुनकर मनोज तेरा दीवाना हो गया था। बेचारे ने अपनी प्रेमिका से धोखा खाया था।'

'खूब याद है, न जाने कैसे उसे यह वहम हो गया कि मैं बहुत अर्थों में उसकी प्रेमिका जैसी थी। देवदास बन गया था बेचारा।' दोनो की सम्मिलित हंसी में पुरानी खुशियां थीं।

जया की घर वापसी तक प्रिया का मूड बदल चुका था। जया ने उसके मन में पक्का विश्वास जगा दिया था, वह भी कुछ कर सकती है। दृढ शब्दों में जॉब लेने की बात ने शेखर को चौंका दिया-

'यह जॉब का भूत फिर सवार हो गया? जरूर यह पट्टी तुम्हारी सहेली ने पढाई है। वह खुद जो जॉब करती है। एक बार कहने पर बात समझ में नहीं आती। औरतों का काम करना मुझे कतई पसंद नहीं है। वैसे भी काम करके कौन से झंडे गाड़ लोगी?' कड़ाई से शेखर ने अपनी बात कह दी।

'मैं कुछ ऐसा पाना चाहती हूं जिसे पाकर और कुछ पाने की आकांक्षा शेष ना रहे। हो सकता है, मेरा जॉब मेरी वह आकांक्षा पूर्ण कर दे।' प्रिया ने निर्भय अपने मन की बात कह दी।

'मैं स्टैम्प पेपर पर लिख कर दे सकता हूं। तुम्हारी जिंदगी में ऐसा दिन कभी नहीं आएगा। अपनी रोने वाली कहानियां लिखते-लिखते तुमने खुद जिंदगी में रोना ही सीखा है। इतना सब कुछ पाने के बाद और क्या चाहिए? अपनी किस्मत सराहो, मुफ्त में मजे उड़ा रही हो। अब मेरा और वक्त बर्बाद मत करो।' शेखर झल्ला उठा।

"दिन भर बेकार रहने से तो अच्छा है कुछ सार्थक काम करूं। सौरभ को पढ़ाने के लिए आपने ट्यूटर लगा रक्खे हैं।"

'तुम क्या ख़ाक उसे मैथ्स और इंगलिश पढा सकती हो? हिंदी जैसे आसान विषय में एम ए कर के फर्स्ट डिवीजन पा लेना बहुत आसान बात है।'

'आप हिंदी साहित्य के विषय में जानते ही कितना हैं?' शेखर के कटाक्ष ने प्रिया को तिलमिला दिया।

'मुझे जानने की जरूरत भी नहीं है। वैसे भी शादी के बाद से घर में आराम फर्मा रही हो। किसी कॉलेज में तो जॉब मिलने से रहा। हां, चौथी पांचवी के बच्चों को पढ़ा कर शौक पूरा करना चाहो तो कोशिश कर देखो। उतना बड़ा काम भी शायद ही पा सको।' क्रोधित शेखर कमरे से चला गया।

पति के व्यंग्य ने प्रिया को आहत जरूर किया, पर किसी भी काम के लिए अनुमति मिल जाना बड़ी बात थी। बड़े उत्साह से अपना बायोडाटा तैयार कर कई कॉलेजों को भेज दिया। प्रतियोगिताओं में मिले पुरस्कारों ने उसका बायोडाटा वजनी बना दिया।

दो-तीन कॉलेजों में नाकामयाबी के बाद अंततः एक कॉलेज में उसे चुन लिया गया। प्रिया की खुशी का ठिकाना न था। पति को इस चुनाव की सूचना देना जरूरी था, पर शेखर के कड़वे शब्दों ने उसके उत्साह पर पानी के छींटे डाल दिए-

'को-एड कॉलेज में जाने की हिमाकत कर रही हो। आजकल के लड़के मेल लेक्चरर्स तक की तो नाक में दम कर देते हैं। तुम किस खेत की मूली हो। भगवान जाने तुम्हारी क्या गत करें। अभी भी वक्त है जॉब का शौक छोड़ दो, बाद में आंसू बहाने मेरे पास मत आना।'

अनुत्तरित प्रिया ने मन में संकल्प ले लिया, चाहें जो हो जाए अब वह पीछे नहीं हटेगी। दो दिन बाद उसे कॉलेज ज्वाइन करना है। सौरभ की देखभाल करने के लिए शेखर ने साइमा नाम की नैनी रख रखी थी। नैनी को समझाने के बाद सौरभ से कहा- 'सौरभ बेटे, कल से तुम्हारी मम्मी भी टीचर बनकर पढाने जाएगी। तुम साइमा आंटी को परेशान मत करना।'

"ओ.के. मम्मी, पर तुम हमे चॉकलेट जरूर लाना।" इतना कह कर सौरभ खेलने भाग गया। कॉलेज में प्रवेश करती प्रिया का दिल धड़क रहा था। प्रिंसिपल चक्रवर्ती हंसमुख व्यक्ति थे।

"वेलकम मिसेज कुमार। उम्मीद है, कॉलेज का माहौल आपको पसंद आएगा। चलिए आपका परिचय आपके साथियों से करा दूँ।" स्टाफ रूम के साथियों ने प्रिया का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। सह प्राध्यापक चद्रकांत जी ने कहा- 'एक सुंदर महिला के आने से हमारा हिंदी विभाग सचमुच रसमय हो जाएगा।'

प्रिया के कान तक लाल हो गए। यह सच था, शादी के छह वर्षों बाद भी प्रिया के रूप लावण्य में कोई कमी नहीं आई थी। उसकी छरहरी सुडोल काया, भोला निष्पाप चेहरा लड़की होने का भ्रम देता था। शादी के बाद से आज तक किसी ने इस तरह से खुले आम उसके रूप को ले कर उसकी प्रशंसा नहीं की थी।

'चंद्रकांत जी, मजाक छोड़िए। प्रिया जी एम.ए. की टॉपर हैं। अपनी कहानियों और लेखों के लिए कई पुरस्कार प्राप्त लेखिका हैं।' प्रिंसिपल चक्रवर्ती ने प्रिया की प्रशंसा की।

'डॉक्टर चक्रवर्ती, इनका सौंदर्य क्या मजाक की चीज है? यह तो ऐसी सच्चाई है, जिसका सब लोहा मान जाएं।'

"प्रिया जी, हमारे चंद्रकांत ऐसे ही हैं। वैसे एक कहानीकार के विभाग में आने से हमारे छात्र-छात्राएं रचनात्मक कार्यों में आपसे प्रेरणा अवश्य ले सकेंगे।" विभागाध्क्ष रजत नाथ ने सच्चाई से कहा।

प्रिंसिपल के जाने के बाद रजत नाथ ने प्रिया को उसकी क्लासेज के बारे में बतलाया "आप नई हैं। इस सत्र में आपको बी ए पार्ट वन और पार्ट-टू की कक्षाएं लेना आसान होगा। आप कहानीकार है, अतः आप शायद कहानी और उपन्यास पढाना पसंद करेंगी।"

"मेरा कहानीकार तो कब का मर चुका है। कोशिश करूंगी विद्यार्थी मेरे शिक्षण से निराश ना हों।" अनायास ही प्रिया के मुंह से सच निकल गया।

"धन्यवाद, पर कहानीकार की हत्या मेरी दृष्टि में अक्षम्य अपराध है। मेरी कामना रहेगी, विषय शिक्षण के साथ आपके कहानीकार को नव जीवन मिल सके।"

हल्के से मुस्करा कर प्रिया मौन रह गई।

पहले दिन प्रिया का विद्यार्थियों से परिचय कराने रजत नाथ कक्षा में उसके साथ गए। परिचय देकर कहा-

'अगर आप सब अच्छे अंक और डिवीजन पाना

चाहते हैं तो प्रिया जी का एक-एक शब्द आत्मसात करना जरूरी है। ध्यान न देने की स्थिति में नुक्सान आपका ही होगा। उस नुक्सान की भरपाई कर पाना आसान नहीं होगा।'

तालियों से स्वागत किए जाने के बाद शांत-सधे शब्दों में प्रिया ने सबका परिचय लिया। अपनी कहानियां स्वयं पढने का साहस न कर पाने वाली प्रिया में ना जाने कहाँ का साहस आगया कि वह बड़ी सहजता से पाठ्यक्रम के विषय में बातचीत करने लगी। संभवतः उसके पीछे शेखर की चुनौती काम कर रही थी।

पहले दिन की सफलता से प्रिया उत्साहित हो उठी। शेखर को सब बताने के लिए उसे डिनर के समय की प्रतीक्षा थी। शायद उस समय शेखर उससे उसके पहले दिन के अनुभव के बारे में कुछ पूछें। खाना खाते शेखर को शायद याद ही नहीं रहा कि प्रिया ने आज कॉलेज ज्वाइन किया है। शेखर की ओर से कोई उत्साह न पा, प्रिया का उत्साह मन में ही रह गया। देर रात तक प्रिया अगले दिन के लिए लेक्चर तैयार करती रही। अपने समय में पढे गए बहुत से टापिक्स मानस में सजीव हो उठे।

दो-चार दिन बाद रजत नाथ ने प्रशंसा करते हुए कहा- "बधाई, प्रिया जी। आप तो छा गई हैं। विद्यार्थियों का कहना है, आप कहानी के पात्र इस तरह से सजीव कर देती हैं, मानो वे उनके सामने खड़े हों।"

"भई, प्रिया जी स्वयं सुंदर कहानी हैं। हम जैसे नीरस लोग भला विषय में रस कैसे भर सकते हैं। प्रिया जी तो कहानी के पात्र गढने वाली कलाकार हैं।" चंद्रकांत जी फिर परिहास पर उतर आए।

"प्रिया जी, हमारे विभाग में प्रत्येक शनिवार को एक साहित्यिक गोष्ठी होती है। विद्यार्थियों के अलावा एक प्राध्यापक को भी अपनी कोई रचना पढनी होती है। इस बार की गोष्ठी में आपको अपनी कोई कहानी पढ़नी होगी।" रजत नाथ ने अनुरोध किया।

"नहीं- नहीं, अब मेरे पास यहां कोई कहानी नहीं है। मुझे क्षमा कीजिए।" प्रिया ने सफाई दी।

"नहीं है तो लिख डालिए। नई लेक्चरर महोदया को हमारा यह अनुरोध तो मानना ही होगा।" चंद्रकांत जी ने सहास्य कहा।

"चंद्रकांत जी ठीक कह रहे हैं। खुद मुझे कई बार कविता पाठ करना पड़ा।" रजत नाथ ने चंद्रकांत जी की बात की पुष्टि की।

"आप कविता करते हैं?" प्रिया के सवाल पर रजत हंस कर बोले-"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान"

उमड़ कर आँखों से चुपचाप, कही होगी कविता अनजान।

"मतलब कि आप वियोगी हैं। वैसे कविता लिखना तो बहुत कठिन काम है। बहुत कोशिश करने पर बस शायद एकाध कविता ही लिख पाई थी।"

"क्यों, क्या कविता लिखने के लिए आपको कोई प्रेरणा नहीं मिली?" अचानक रजत नाथ सवाल कर बैठे।

'आप किस की प्रेरणा से कवि बन गए, रजत जी?' रजत जी के सवाल पर प्रिया ने सवाल कर डाला।

'छोड़िए, पुरानी कहानी भूल जाना ही ठीक है। हाँ, कहानी सुनाने की शर्त तो आपको पूरी करनी ही होगी। इसमें किसी छूट की संभावना नहीं है।'

घर पहुंच कर प्रिया ने अपनी पुरानी डायरी खोज निकाली। विवाह के बाद घर से अपनी कहानियों की डायरी और कापियां साथ लाने का मोह वह नहीं छोड़ सकी थी। सौभाग्यवश अलमारी के एक कोने में उसकी कहानियां सुरक्षित पड़ी थीं। एक नजर में उसे अपनी प्रिय कहानी दिख गई। उस कहानी पर यूनीवर्सिटी की कहानी-प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला था।

शनिवार की गोष्ठी में पूरा हॉल खचाखच भरा था। धड़कते दिल से प्रिया ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की। यूनीवर्सिटी में उसकी कहानी जया ने पढ़ी थी। आज खुद कहानी पढ़ते समय मानो सारे पात्र जी उठे। भावों के साथ बाणी में स्वाभाविक उतार-चढाव आ रहा था। एक जगह तो स्वयं उसका गला भर आया। कहानी समाप्त होने के बाद कुछ पलों के सन्नाटे के बाद हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से

गूंज उठा।

अचानक रजत नाथ ने आगे बढ कर उसका हाथ अपने हाथ में ले कर कहा- "जिस हाथ से यह कहानी लिखी गई है, मैं उसका अभिनंदन करता हूँ। यह कहानी, भारत की आधी आबादी यानी नारी के कोमल मन की पीड़ा को साकार करती है।"

"मेरी तो आँखें नम हो गईं।" परिहास- प्रिय चंद्रकांत जी गंभीर थे।

गोष्ठी समाप्त होने पर छात्र-छात्राओं ने उसे घेर लिया। कहानी के विषय में उनकी जिज्ञासा शांत करती प्रिया अभिभूत थी। क्या सचमुच उसका लेखन इतना सशक्त है? शायद उसकी कहानियों में रोमांस और प्रेम का जो अभिनव रूप होता है, वही युवा पीढी को आकृष्ट करता था, पर रजत नाथ और चंद्रकांत जी को भी तो उसकी कहानियां इतनी पसंद आईं। इसका अर्थ तो यही हुआ, वह अच्छी कहानियां लिख सकती है।

रजत नाथ ने अनुरोध भरे स्वर में कहा- "आपकी कहानियां पढ़ने का सौभाग्य चाहता हूँ, क्या अवसर देंगी? वैसे क्या आपने कभी अपनी कहानियों का संकलन छपवाने के विषय में नहीं सोचा?"

"नहीं, अपने को कभी लेखिका के रूप में नहीं देखा। बस जब मन में कुछ उठा, लिख डाला। जानते हैं आज पहली बार अपनी कहानी खुद पढी है, वर्ना मेरी कहानियां मेरी फ्रेंड जया पढती थी। आज उसे लिखूंगी, मैंने कहानी खुद पढी तो उसे खुशी होगी।" कुछ संकोच से जया ने कहा।

"बड़ी भाग्यशाली थीं आपकी मित्र, जिसे इतनी सुंदर कहानियां पढने को मिलीं। अब यह सौभाग्य मैं चाहूंगा। विश्वास है निराश नहीं करेंगी।"

"मेरे पास कुछेक कहानियां जरूर हैं, पर कुछ लोग उन्हें मूर्खतापूर्ण भावुकता की संज्ञा देते हैं। वादा कीजिए आप वैसा कुछ नहीं कहेंगे।" प्रिया को याद हो आया, एक बार बड़े उत्साह से शेखर को अपनी एक कहानी सुनाने की गलती कर डाली थी। किसी तरह आधी कहानी झेल चुकने के बाद शेखर ने झुंझला कर रिमार्क दिया था-

"शियरफुलिशनेस औरतों की यही भावुकता उन्हें खुद रोने और दूसरों का मूड खराब करने को कहानी मजबूर करती है। रोने-रुलाने की जगह क्या कोई उद्देश्यपूर्ण रचना नही कर सकतीं? घर

परिवार की औरतों के कर्तव्यों जैसे विषयों पर लिखना सार्थक होता। तुम्हारी कहानी तो बस बकवास है।"

उस दिन के बाद से प्रिया ने अपनी कहानियां भुला दी थीं।

"यह क्या कह रही हैं आप? आपकी कहानी सुनने के बाद, मेरा अनुभव कहता है, आपकी हर कहानी अनूठी होगी। ऐसी कहानियों को मूर्खतापूर्ण भावुकता कहने वाले सीने में दिल नहीं रखते होंगे। रजत नाथ की बात सुन कर प्रिया के चेहरे पर खुशी खिल आई।"

"मेरा उत्साह बढाने के लिए धन्यवाद। मैं अपनी कहानियां आपको जरूर दूंगी, पर आपको भी अपनी कविताएं सुनानी होंगी।"

"मेरी कविताएं सूखी नदी सी रसहीन हैं। उनमें किसी के मन को छू पाने की क्षमता नहीं है।" उदासी रजत नाथ के चेहरे पर स्पष्ट थी।

"मन का कोई कोना सूखा भी तो हो सकता है। हो सकता है, आपकी रसविहीन कविताएं उस कोने में अपनी जगह बना लें।"

प्रिया की बात ने रजत नाथ को जैसे चौंका सा दिया।

"ठीक है अगर ऐसी नीरस कविताओं की आपको चाहत है तो कल मेरा कविता-संग्रह आपके हाथों में होगा।"

"क्षमा कीजिए, आप अपना कविता-संग्रह प्रिया जी को अवश्य दें, पर हम सब स्टाफ मेम्बर्स आपकी कविताएं सस्वर सुनना चाहेंगे।" चंद्रकांत जी ने अनुरोध किया।

सबके अनुरोध पर खाली समय में रजत नाथ ने अपनी दो-तीन कविताएं सुनाई थी। कविताओं में जैसे मन की गहन पीड़ा साकार थी।

"आपने यह कैसे कहा आपकी रसविहीन कविताएं किसी के मन को नहीं छू सकतीं? आपकी कविताओं ने तो मेरे अंतर तक को उद्वेलित कर दिया है।"

"सच कह रही हैं या मेरा मन बढ़ा रही हैं?"

"बिल्कुल सच कह रही हूँ, अब आपका कविता -संग्रह-कविताओं और कहानियों के आदान प्रदान के साथ प्रिया और रजत नाथ के संबंध बहुत सहज होते गए। अक्सर प्रिया की कहानियों पर चर्चा करते समय रजत नाथ, प्रिया को उसकी कहानी के विषय में सकारात्मक सुझाव दे जाते। प्रिया उनके अनुसार कहानी में सुधार लाकर संतुष्ट होती। इस बीच प्रिया ने फिर से नई कहानियां लिखना शुरू कर दिया था। रजत नाथ की कविताएं प्रिया की टिप्पणी की प्रतीक्षा करतीं।"

अचानक एक दिन एक नामी पत्रिका में अपनी कहानी प्रकाशित देख कर प्रिया चौंक गई। रजत नाथ ने सबके सामने घोषणा की, आज प्रिया जी सबको मिठाई खिलाएंगी, इनकी कहानी छपी है। कहिए प्रिया जी मंजूर है? सहास्य रजत जी ने कहा।

"मैने तो कोई कहानी छपने नहीं भेजी फिर यह कैसे छप गई?" प्रिया विस्मित थी।

"अगर यह सच है तो यह तो चमत्कार ही है। मुझे लगता है, पत्रिका के संपादक तक यह खबर पहुंच गई कि एक गुमनाम कहानी लेखिका के पास इतनी अच्छी कहानियों का खजाना है। रजत जी की मुस्कान ने प्रिया का रहस्य स्पष्ट कर दिया।"

अपनी पहली कहानी उस स्तरीय पत्रिका में प्रकाशित देख कर प्रिया की खुशी का ठिकाना न रहा। शाम को कोर्ट से लौटे शेखर को बड़ी उमंग से पत्रिका दिखाई थी।

"शेखर, देखो मेरी कहानी छपी है। इस पत्रिका में छपना आसान नहीं होता।"

"देख रहा हूँ कॉलेज में पढाने की जगह ऐसे फालतू काम किए जा रहे हैं। अच्छा हो, ये सब छोड़ कर घर-गृहस्थी पर ध्यान दो। घर परिवार इन बेकार के कामों से ज्यादा जरूरी है।" पत्रिका बिना देखे शेखर ने फर्मान सुना दिया।

प्रिया का सारा उत्साह कपूर सा उड़ गया। किसने कहा उसे घर-परिवार की चिंता नहीं है। घर में कहीं कोई विश्रृंखलता नहीं है, फिर शेखर की यह टिप्पणी क्यों? प्रिया का मन बुझ सा गया।

शेखर की उदासीनता और रूखे व्यवहार के बावजूद रजत नाथ के सानिध्य में प्रिया के मन का खाली कोना जैसे रस से परिपूर्ण होता जा रहा था। निकटता होते हुए भी रजत नाथ से प्रिया उनके

व्यक्तिगत जीवन के बारे में कभी कुछ नहीं पूछ सकी। एक दिन बातों-बातों में रजत नाथ की अनुपस्थिति में चंद्रकांत जी ने अनायास ही रजत नाथ के जीवन का रहस्य उद्घाटित कर डाला-

"रजत नाथ की पीड़ा का कारण एक लड़की थी। उन्होंने उसे सच्चे मन से बहुत प्यार किया, पर वह उन्हें छोड़ गई।"

"क्यों, रजत जी में क्या कमी थी?" प्रिया इस रहस्योद्घाटन से विस्मित थी।

"अमरीका के इंजीनियर के मुकाबले में रजत जी कमजोर पड़ गए। वह लड़की उन्हें पूरी तरह से तोड़ गई।"

"उसके जाने के बाद उन्होंने विवाह क्यों नहीं किया? विवाह के बाद भी तो वह एक अच्छी पत्नी पा सकते थे।"

"रजत ने उसे बेहद संजीदगी से चाहा था। ऊपर से हंसते हुए रजत अंदर से टूट चुके हैं। वैसे आजकल उनमें परिवर्तन देख रहा हूँ, उनकी उदासी की जगह चेहरे पर खुशी रहती है। शायद वक्त सबसे बड़ा मरहम होता है।"

"भगवान करे उनके जीवन में फिर से खुशियां आ जाएं।" प्रिया ने सच्चे दिल से कामना की।

वक्त के साथ प्रिया और रजत नाथ के बीच की औपचारिकता दूर होती गई। रजत नाथ आसानी से प्रिया को बस प्रिया पुकारते, पर उनकी जिद के बावजूद रजत नाथ को सिर्फ रजत पुकारने में प्रिया को काफी कठिनाई हुई। उनका तर्क था- "अमरीका में तो माँ-बाप को भी नाम से पुकारा जाता है। विद्यार्थी टीचर का नाम लेते हैं। हम दोनों मित्रों की तरह एक दूसरे को नाम से संबोधित क्यों नहीं कर सकते? नाम के आगे डॉक्टर या श्रीमती लगा कर दूरियां बढ़ाई जाती हैं। तुम मुझे रजत नाम से क्यों नही संबोधित कर सकती? मेरा नाम क्या इतना खराब है?"

रजत नाथ की कविताएं करवट बदलने लगी थीं। उनमें उमंग और जीवन के प्रति चाहत उभरने लगी थी। चंद्रकांत जी ने अपने स्वभाव के अनुरूप परिहास कर डाला 'लगता है प्रिया जी के व्यक्तित्व ने आप पर प्रभाव डाला है। कविताओं में नए रंग उभरने लगे हैं। इसमें किसी का दोष नहीं है, उनके व्यक्तित्व का आकर्षण ही ऐसा है।"

अचानक एक दिन ना जाने किस मूड में रजत कह बैठे–“तुम मुझे पहले क्यों नहीं मिलीं, प्रिया? हम दोनो संसार के सबसे सुखी दम्पत्ति होते।”

“मैं ऐसा नहीं मानती। शादी के बाद अक्सर प्यार को सिर्फ जिम्मेदारियां ढोने की शर्त बनते देखा है। स्त्री लेखिका का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता। शायद इसीलिए मैं” आगे कुछ कहती-कहती प्रिया चुप हो गई।

“क्या तुम्हारे जीवन का भी यही सत्य है, प्रिया?” रजत ने सीधा सवाल किया।

“मैं अपने को लेखिका नहीं मानती। व्यावहारिक दृष्टि से मेरे पास वो सारे साधन हैं जो किसी स्त्री को चाहिए, पर” प्रिया फिर रुक गई।

“इस पर के पीछे क्या है, प्रिया?”

“कुछ नहीं, शायद मेरे मुंह से ऐसे ही निकल गया।” प्रिया ने बात टाल दी।

“तुम्हारे पति तुम्हारी पर्वाह तो करते हैं?”

“अगर पर्वाह का मतलब बंगला, गाड़ी, पैसा जुटा देना है तो वो सब मेरे पास है। मेरे पति एक व्यस्त वकील हैं। उनकी व्यावहारिकता और मेरी भावुकता में अंतर होना तो स्वाभाविक ही है न? मेरा लेखन, कॉलेज में काम करना, उनकी निगाह में समय व्यर्थ करना है।” प्रिया अपना सच अचानक कह गई।

“क्या हम दोनो एक नहीं हो सकते, प्रिया?” दो मुग्ध नयन प्रिया पर निबद्ध थे।

“यह क्या कह रहे हैं आप? जानते हैं मैं विवाहिता हूँ, एक बेटे की माँ हूँ।” प्रिया जैसे आसमान से गिरी थी।

“सब जानता हूँ। मैंने वही कहा जो बहुत दिनों से कहना चाहता था, प्रिया।”

“प्लीज, रजत हमारी मित्रता का गलत अर्थ न लगाएं। मैं ऐसा सोच भी नहीं सकती।” प्रिया उठ कर चली गई।

अगले दो दिन प्रिया कह्लेज नहीं जा सकी। रजत नाथ का सामना करने का उसमें साहस ही नहीं रह गया था।

घर में अपने नाम आए कोरियर ने प्रिया को चौंका दिया। लिफाफे में रखे गुलाबी कागज का पैकेट खोलते ही प्रिया की दृष्टि सुनहरी जिल्द से सज्जित पुस्तक के शीर्षक पर स्थिर हो गई। “रजनीगंधा के नीचे लेखिका का नाम प्रिया जगमगा रहा था। कहानी-संग्रह का प्रकाशन विना उसकी जानकारी के कैसे संभव हो सका, प्रिया को समझने में देर नहीं लगी। पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर एक चिट थी”

“जन्म-दिन की अनन्त मंगल कामनाएं। अगर आप की दृष्टि में मैं ने गलती की है तो क्षमा की आकांक्षा है। कल आपकी पुस्तक का विमोचन समारोह है। विश्वास है मेरी गलती का दंड अपने प्रथम कहानी संकलन को नहीं देंगी। प्रतीक्षा रहेगी। सस्नेह- रजत।”

प्रिया ने सपने में भी नहीं सोचा था, उसकी कहानियां कभी संकलन का रूप ले सकेंगी। रजत ने अपनी गलती के लिए क्षमा मांगी है, पर क्या यह बात उसके मन में कभी नहीं आई, काश रजत उसके जीवन साथी होते। रजत के साथ उसके जीवन की दिशा ही कुछ अलग होती। उसकी हर बात को रजत मान देते हैं। उसकी चिंता और समस्याओं का हल मिनटों में निकाल देते हैं। सच तो यह है, वह भी कुछ है, इसका भान तो रजत ने ही कराया है वर्ना वह तो बस एक ऊबी हुई गृहिणी भर बन कर रह जाती।

पिछले सप्ताह विभागीय डिबेट का विषय “सात फेरे नहीं, मन का मिलन चाहिए” रखा गया था। प्रिया को यह देख कर आश्चर्य हुआ, छात्राओं के एक ग्रुप ने सात फेरों वाले विवाह के मुकाबले में मन के मिलन को ज्यादा महत्व दिया। विभा ने जोरदार शब्दों में कहा- “क्या सच्चाई है सात फेरों की? शायद ही कोई पति सात फेरों के समय लिए गए वचन याद रखते हों। बेचारी पत्नी जरूर उन वचनों को निभाने की भरपूर कोशिश करती है। इतना ही नहीं, कभी-कभी उन वचनों के बंधन में जकड़ी पति के अत्याचार सहने को विवश होती है।”

डिबेट में विभा का ग्रुप ही विजयी रहा। प्रिया सोचने लगी, समय के साथ लड़कियों के सोच में भी बदलाव आ गया है। स्वय प्रिया भी इस विचार से सहमत है, पर क्या वह विभा की तरह यह बात खुल कर कह सकती है? अगर उसे रजत जैसा पति मिला होता तो उसका जीवन सार्थक होता। अचानक प्रिया जैसे जाग गई। छिः कैसी बात वह सोच बैठी। पुस्तक को प्यार से सहलाती प्रिया ने सोच लिया, वह विमोचन समारोह में अवश्य जाएगी। शेखर से कुछ कहना व्यर्थ ही होता।

रजनीगंधा का विमोचन आगरा के विधायक मोहन कुमार द्वारा किया गया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा- “मुझे गर्व है, हमारे शहर में इतनी अच्छी कहानीकार हैं। उनकी कहानियां उच्च स्तरीय हैं। आगरा के पुस्तकालयों के लिए यह पुस्तक खरीदी जाएगी। लेखिका को मेरी बधाई।”

पुस्तक विमोचन के बाद पत्रकारों ने कहानियों की थीम, विषय आदि पर प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। प्रश्नों के उत्तर देती प्रिया के चेहरे पर आत्मविश्वास और सफलता की खुशी चमक रही थी। अचानक एक महिला पत्रकार पूछ बैठी “आपके पति नहीं दिखाई दिए। क्या वह आपकी सफलता के सहभागी नहीं हैं?”

“वह एक जरूरी केस के सिलसिले में बाहर गए है।” साथ खड़े रजत नाथ के बहाने ने प्रिया को बचा लिया।

समारोह समाप्त होने के बाद भीगे स्वर में प्रिया ने रजत से कहा- “आपने मेरा सपना पूरा किया है। इसके लिए धन्यवाद बहुत छोटा शब्द है।”

“आज भी तुम इतनी उदास क्यों हो प्रिया, क्या मुझे माफी नहीं मिलेगी?”

“प्लीज, माफी मांग कर शर्मिंदा ना करें। हम मित्र हैं, हमारे बीच औपचारिकता नहीं होनी चाहिए।”

“इसका मतलब हमारी मित्रता में दरार नहीं आएगी। आज चौन की नींद सो सकूंगा, प्रिया। मैं डर गया था कहीं तुम्हें भी ना खो बैठूं।”

हिम्मत कर के रात में प्रिया ने अपना संग्रह शेखर को दिखाया, पर उसे देखते ही शेखर का पारा चढ गया।

“मुझसे छिपा कर पैसे बर्बाद किए जा रहे हैं। कितने हजार प्रकाशक को दिए हैं?”

“मैंने पैसे नहीं दिए।” शांति से प्रिया ने सच्चाई बता दी।

“तुम क्या समझती हो मैं मूर्ख हूँ, जो तुम्हारी बात मान लूंगा। तुम जैसी अनाम लेखिका की किताब कोई बिना पैसे लिए छाप दे, यह असंभव है।”

"यह किताब डॉक्टर नाथ ने छपवाई है।"

"डॉक्टर नाथ तुम्हारे क्या लगते हैं जो बिना किसी फायदे के तुम्हारी किताब छपवा दी?" शेखर चीख पड़ा।

"वह मेरे विभागाध्यक्ष हैं। मेरी कहानियां पसंद करते हैं।"

"तुम्हारी कहानियां या तुम्हें पसंद करते हैं। ऐसा तो पहली बार सुना कोई विभागाध्यक्ष किसी लेक्चरार की किताब छपवाए। सच कहो तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है?" शेखर का क्रोध चरम सीमा पर था।

अनुत्तरित प्रिया शेखर के सामने से हट गई। पिछले कुछ दिनो से शेखर का बर्ताव बेहद रूखा होता जा रहा था। बात-बेबात प्रिया की आलोचना करना उसका स्वभाव हो गया था। साथ की महिला वकील मिस तनेजा के साथ देर रात तक काम के बहाने रुके रहना रोज का नियम बन गया था। एक दो बार प्रिया ने कुछ कहना चाहा तो उसे उसकी औकात बता दी गई। उसके बाद प्रिया ने कभी कुछ जानने-समझने की कोशिश नहीं की।

रात में करवटें बदलती प्रिया की आँखों के सामने से रजत का चेहरा नहीं हट रहा था। अपने को धिक्कारती प्रिया सोच रही थी, तीस बरस की उम्र में परपुरुष के विषय में सोचते रहना कितना अशोभनीय है। वह कैसे भूल सकती है, वह शादीशुदा ही नहीं एक बेटे की माँ है। अपने मन पर उसे काबू पाना ही होगा। दृढ निश्चय के बावजूद उसका मन बेकाबू ही रहा।

दूसरी सुबह अखबार पढते शेखर की दृष्टि कल शाम के पुस्तक-विमोचन समारोह पर छपी फोटो पर ठहर गई। फोटो में प्रिया के साथ विधायक मोहन कुमार खड़े थे। शेखर के माथे पर बल पड़ गए।, जोर की पुकार पर घबराई प्रिया सामने आ खड़ी हुई।

"फोटो में किसके साथ सट कर खड़ी हो?" तीखी आवाज में शेखर ने सवाल किया।

"इन्हें क्या आप नहीं जानते? हमारे शहर के विधायक मोहन कुमार हैं। मेरी पुस्तक का विमोचन उन्हीं ने किया था।" कुछ गर्व से प्रिया ने कहा।

"काहे का विधायक? कॉलेज में लड़कियों को छेड़ने की वजह से सस्पेंड किया गया था। पुस्तक का विमोचन कराने के लिए यह गुंडा ही बचा था? मेरी नाक कटाने के लिए और कौन से गुल खिलाओगी? बस बहुत हो गया। कल से कॉलेज नहीं जाओगी।" ऊँची आवाज में शेखर ने अपना फैसला सुना डाला।

"नहीं, मैं जॉब नहीं छोड़ सकती। रही बात विधायक के चरित्र की तो इस बारे में मेरी कोई जानकारी नहीं है। कार्यक्रम मैने आयोजित नहीं किया था।"

"समझ गया जरूर यह तुम्हारे रजत नाथ की चाल है। अपने फायदे के लिए विधायक को खुश करने के लिए तुम्हारा सहारा लिया है।" शेखर की आँखों से आग बरस रही थी।

"रजत जी कभी ऐसी ओछी बात सोच भी नहीं सकते।"

"अच्छा वह महान इंसान है और मैं ओठी बातें करता हूँ। अब मेरा फैसला सुन लो, तुम्हें अपने कॉलेज या पति में से एक को चुनना है।" शेखर तैश में खड़ा हो गया।

"यह कैसा फैसला है? मैं आपके बारे में ऐसी बात कैसे सोच सकती हूँ?" प्रिया विस्मित थी।

"मुझे हाँ या ना में जवाब चाहिए। तुम कॉलेज छोड़ोगी या नहीं?" तमतमाए चेहरे से शेखर ने पूछा।

"नहीं।" दृढता से प्रिया ने जवाब दिया।

"क्या, तुम्हारी यह मजाल? मेरी बात नहीं मानोगी। अभी इसी वक्त मेरे घर से निकल जाओ। आज के बाद ना तुम्हारे लिए इस घर में जगह है ना मेरी जिंदगी मे। फौरन निकल जाओ वर्ना" शेखर ने हाथ उठाया था।

"यह क्या कह रहे हैं, मैं कहां जाऊंगी?" प्रिया रुआसी हो आई।

"जहाँ जी चाहे जा मरो। मैंने फैसला कर लिया। अब और बहस की तो अंजाम बुरा होगा।"

"मेरा क्या अपराध है, आखिर आपकी पत्नी हूँ।

कुछ तो सोचिए।"

"मुझे कुछ सोचना-समझना नहीं है। बहुत पर निकल आए हैं। नाउ गेट आउट ऑफ माई हाउस एंड माई लाइफ।"

"सौरभ की तो सोचिए, वह बच्चा क्या माँ के बिना रह सकेगा?" प्रिया की आँखें भर आईं।

"तुम जैसी माँ के मुकाबले किसी हॉस्टल में उसकी अच्छी देखरेख और परवरिश हो जाएगी। चार कपड़े लेकर निकल जाओ वर्ना मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। अब मेरा टाइम वेस्ट मत करो। मुझे जानती नहीं हो, मैं कुछ भी कर सकता हूँ। वकील हूँ अपने को आसानी से बचा सकता हूँ।"

शेखर के क्रोध के आगे और मिन्नतें करना व्यर्थ था। इस वक्त घर से बाहर जाना ही उचित था, पर कहाँ जाए वह? आज तो कॉलेज भी बंद था। मानस में एक ही चेहरा उभर रहा था, जो उसकी बात समझ सकेगा। शायद कुछ देर बाद जब शेखर का गुस्सा शांत हो तब वह अपनी भूल स्वीकार कर उसे वापस बुला लेगा।

अचानक घर पहुंची प्रिया को देख कर रजत ताज्जुब में आ गए।

"तुम अचानक यहां, सब ठीक तो है?"

"कुछ भी ठीक नहीं है, रजत। और कोई जगह नहीं थी जहाँ जाती।" प्रिया की आँखें छलछला आईं।

"परेशान मत हो। इस घर और मुझ पर तुम्हारा पूरा अधिकार है। बैठो, मैं कॉफी लाता हूँ।"

प्रिया को कॉफी का मग थमा, रजत उसके सामने सोफे पर बैठ गए। कॉफी समाप्त कर प्रिया कुछ सामान्य हो चली। धीमे-धीमे अटकते-अटकते प्रिया सारी घटना दोहरा गई।

"समझ में नहीं आता पढे-लिखे इंसान का ऐसा सोच हो सकता है। छह वर्षों के साथ के बावजूद भी वह तुम्हें नहीं जान सके। पत्नी पर इस तरह शक करना अन्याय है।" रजत ने गंभीरता से कहा।

"आगे के लिए क्या सोचा है, प्रिया?" प्रिया के मौन पर रजत ने पूछा।

"शेखर के बुलावे का इंतजार है और कर भी क्या सकती हूँ।"

"इतने अपमान के बाद लौट कर क्या सम्मान पा सकोगी?" रजत ने दृष्टि प्रिया के चेहरे पर गड़ा दी।

"और कर भी क्या सकती हूँ?" प्रिया के रुके आँसू

फिर बह निकले।

"जैसे पल भर में उसने तुम्हें अपनी जिंदगी से निकाल फेंका है, तुम भी उसे अपनी जिंदगी से निकाल सकती हो।"

"औरत और आदमी में बहुत फर्क होता है, रजत।"

"इसी सोच की वजह से औरत हमेशा हारती आई है। सच कहो, क्या तुम्हारा मन नहीं चाहता, कोई तुम्हें, तुम्हारे पूरे वजूद को, तुम्हारी हर अच्छाई-कमी के साथ तुम्हें सच्चे मन से प्यार करे।"

"जो नहीं मिला उसके बारे में क्या सोचना।" अचानक प्रिया का मोबाइल बज उठा।

"शेखर का फोन है।" प्रिया उत्साहित हो उठी कान से फोन लगाते ही शेखर की तीखी आवाज सुनाई दी थी- "जानता हूँ, अपने आशिक के पास बैठी मुंह काला कर रही हो। कल तलाक के कागजात पहुँच जाएंगे। चुपचाप पेपर्स पर साइन कर देना। साइन ना करने की हालत में कोर्ट में बेइज्जती के लिए तैयार रहना। याद रखना, मैं शहर का नामी वकील हूँ, धज्जियां उड़ा कर रख दूँगा।" बात खत्म करते ही फोन कट गया था।

"निरपराध होते हुए भी मुझे तलाक की धमकी दे रहे हैं इसके पहले कि शेखर के तलाक के कागजात पहुँचे, मैं शेखर को तलाक देना चाहती हूँ। मुझे जो भी सहना पड़े, सहूँगी, पर शेखर के अहं को तो चोट पहुँचा सकूँगी। शेखर क्या मुझे छोड़ेंगे, मैं ही उनका परित्याग करूंगी। मेरी मदद कर सकते हो, रजत।"

"वाह! यह हुई ना बात, पुरुष हमेशा औरत की दुखती रग पर चोट करता है। स्त्री की कमजोरी उसके अहं को बढ़ावा देती है। तुम ठीक सोच रही हो। मेरा वकील मित्र तुम्हारे तालाक के कागजात तैयार कर देगा। कल सुबह तक कागजात शेखर तक पहुँच जाएंगे। हाँ एक बार फिर सोच लो।"

"मैं सोच चुकी हूँ। अब पीछे नहीं हटूंगी।" प्रिया के चेहरे पर दृढ़ता थी।

"सौरभ के बारे में क्या सोचा है?"

"मुझे पूरा विश्वास है, समझदार होने पर वह जान जाएगा, मै निरपराध थी। वह मेरे पास जरूर आएगा।"

प्रिया के भेजे डाइवोर्स के पेपर्स देख कर शेखर बौखला गया। फोन पर अपशब्दों की बौछार कर, तलाक के पेपर्स पर साइन कर दिया।

सौरभ से उसके स्कूल मिलने गई प्रिया को बताया गया उसे बेटे से ना मिलने देने की सख्त हिदायत दी गई है। प्रिंसिपल सहृदय महिला थीं, जोखिम उठा कर सौरभ को बुला दिया गया। बेटे को गले लगा कर प्रिया रो पड़ीं। नन्हे सौरभ ने उसके आँसू पोंछ कर कहा "रो मत मम्मी, पापा गंदे हैं। वो तुम पर चिल्लाते हैं। तुम अच्छी मम्मी हो, हम तुम्हारे साथ रहेंगे।"

"हां, बेटे, जब तुम बड़े हो जाओगे तब हम दोनों साथ रहेंगे।" आंसू पोंछ प्रिया ने विदा ली। दूसरी बार सौरभ से मिलने जाने के लिए जब फोन किया तो पता लगा उसे किसी दूसरे शहर के हॉस्टल में भेज दिया गया है।

रजत नाथ ने प्रिया के लिए अलग अपार्टमेंट का इंतजाम जरूर करा दिया, पर उसकी हर जरूरत पूरी करना उनका फर्ज होता। लोगों की बातें अगर उन्होंने सुनी भी तो उन्हें नकार दिया गया। शेखर का इलाहाबाद शिफ्ट कर जाना, उसके पुरुष की पराजय ही थी। प्रिया ने अपने को नई जिंदगी में ढाल जरूर लिया, पर सौरभ की याद उसे बेचैन कर देती। रजत जी के कहने पर प्रिया ने उपन्यास लिखना शुरू किया था।

"तुम्हारे जीवन में इतना कुछ घटा है, प्रिया, उसे एक उपन्यास का रूप आसानी से दे सकती हो। तुम्हारे पास एक सशक्त लेखनी है, यह उपन्यास तुम्हारी उपलब्धि होगी।"

उपन्यास लिखने में प्रिया पूरी तरह से डूब गई। अचानक उसने महसूस किया उपन्यास का नायक रजत जैसा बन गया है। कुछ पृष्ठ पढ कर रजत ने सहास्य पूछा- "तुम्हारे नायक को उसकी नायिका कभी मिल भी सकेगी या आजीवन वह उसकी आराध्या ही बनी रहेगी?"

"आराध्य तो नायिका का नायक है, रजत।"

"फिर दोनो के मिलन में बाधा क्या है, प्रिया?" अनुत्तरित प्रिया के दोनो हाथ अपने हाथों में ले कर रजत ने प्यार से कहा- "बहुत प्रतीक्षा कर ली, प्रिया। अब इस अकिंचन को अपना जीवन साथी बना लो, हम विवाह कर लें।"

"नहीं, रजत, मैं विवाह शब्द में विश्वास नहीं करती। प्रेम-विवाह भी असफल हो जाते हैं। मैं नहीं चाहती, हम दोनो के बीच जो प्यारा रिश्ता है, वो विवाह के बाद मजबूरी का बंधन बन जाए।"

"ऐसा नहीं होगा, प्रिया। हमारा रिश्ता कभी मजबूरी का नहीं हो सकता। मुझ पर विश्वास है न?"

"तुम्हारा विश्वास ही तो मेरा संबल है, रजत, पर विवाह पर कतई विश्वास नहीं कर सकती।"

"मुझ पर विश्वास है, तो हम दोनों एक क्यों नहीं हो सकते, प्रिया?"

"उम्र की इस सीढी पर ऐसा सोचना क्या ठीक है, रजत?" प्यार की कोई उम्र नहीं होती, प्रिया। मैंने कब सोचा था, वर्षों बाद इस वैरागी मन के तार प्यार की धुन पर झंकृत हो उठेंगे? विश्वास करो विवाह हमे पूर्ण कर देगा। मेरी बात मान लो।

"नहीं रजत, विवाह का बंधन मुझे स्वीकार नहीं।"

"अगर तुम विवाह नहीं चाहतीं तो हम बिना विवाह किए भी तो एक छत के नीचे साथ-साथ रह सकते हैं। विश्वास करो, मैं ऐसा कुछ नहीं मागूंगा जो तुम्हें अस्वीकार हो।" गंभीर स्वर में अपना प्रस्ताव दे कर रजत चुप हो गए।

"एक छत के नीचे पूर्णता प्राप्त करने की जगह शायद हम दो हिस्सों में बंट जाएं, रजत।"

"ऐसा क्यों कह रही हो, प्रिया? साथ रहने से तो प्यार बढता है।" रजत विस्मित थे।

"क्या एक छत के नीचे ना रहते हुए भी हम साथ नहीं हैं, रजत? मैं तो हर पल तुम्हें अपने साथ पाती हूँ। हो सकता है एक छत के नीचे रहते हुए हमारी दूरियां बढ़ जाएं। अगर हम एक-दूसरे की अपेक्षाओं पर खरे न उत्तर सके या एक दूसरे की कमियां नजर आने लगें तो क्या होगा? मैं तुम्हें खोना नहीं चाहती, रजत।" हाथों में चेहरा ढांप प्रिया रो पड़ी।

बड़े प्यार से प्रिया के आँसू पोंछ रजत ने कहा-

सृजन संवाद कार्यक्रम

स्पाइल प्रतिनिधि

दिव्यांगो की मनोदशा पर वैश्विका फिल्म के बैनर तले टेली फिल्म बनाएंगे शरद आलोक।

शरद आलोक हिंदी टेली फिल्म 'तलाश' एवं 'गुमराह' और नॉर्वेजियन टेली फिल्म 'रायसेन तिल कनाडा' का निर्माण कर चुके हैं अब वे 'वैश्विक फिल्म' के बैनर तले डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के परिसर पर आधारित दिव्यांगों की मनोदशा पर फिल्म बनाने जा रहे हैं।

भारतीय नार्वेजीयन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम का अध्यक्ष होने के नाते उन्होने डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय से अकादमिक और सांस्कृतिक सहयोग हेतु एम.ओ.यू. संपादित करने का विचार अभिव्यक्त किया। जिसके द्वारा विश्वविद्यालय से भारतीय प्रतिनिधि मण्डल नार्वे जा सकेगा और नार्वे से प्रतिनिधि मण्डल भारत आ सकेगा।

श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' भारत एवं नार्वे के सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ओस्लो में स्थापित भारतीय नॉर्वेजीयन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम (Indo & Norwegian Information and Cultural forum) के अध्यक्ष है एवं हिन्दी और नार्वेजियन भाषा की बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक पत्रिका 'स्पाइल-दपर्ण' के संपादक है और ओस्लो में

रहकर विगत ३२ वर्षों से पत्रकारिता के माध्यम से हिन्दी की सेवा कर रहे हैं।

आज दिनांक २७ नवंबर २०२४ को भारत में अपनी यात्रा के दौरान वे डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य संजय सिंह, कुलसचिव श्री रोहित सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. अमित कुमार राय, अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. वी.के. सिंह से भी मिले और दिव्यांगो के जीवन पर वैश्विका फिल्म के बैनर तले टेलीफिल्म बनाने की योजना को साझा करते हुए कहा कि 'समाज की मुख्यधारा में दिव्यांगों को सम्मान के साथ स्थान दिलाने एवं उनकी समस्याओं के मनोवैज्ञानिक पक्षों को उजागर करना जरूरी है, जिसके लिए मैं दिव्यांगों के जीवन और उनकी मनोदशा पर फिल्म बनाने जा रहा हूँ' इस अवसर विश्वविधालय के माननीय कुलपति आचार्य संजय सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर पर आधारित टेलीफिल्म निर्माण के लिए शरद अलोक जी ने जो योजना बनायीं है उसका हम स्वागत करते है। भाषा एक बहता नीर है और हिंदी भाषा की यह गंगा नॉर्वे तक प्रवाहित होकर हमारी परंपरा विश्वास और संस्कृति को जोड़ रही है।

नार्वे में "भारतीय नॉर्वेजीयन सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के अध्यक्ष और 'स्पाइल-दर्पण' पत्रिका के संपादक एवं प्रवासी भारतीय पत्रकार श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ के हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग एवं प्रोस्थेटिक एंड ओर्थोटिक्स विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कृत्रिम अंग एवं पुनर्वास केंद्र के सभागार में आयोजित सृजन संवाद कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष प्रो. यशवंत वीरोदय ने शरद अलोक से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संवाद किया। जिसका जवाब देते हुए शरद अलोक ने अपनी लेखन प्रक्रिया, फिल्मी जीवन और गुदगुदाते संस्मरणों से दर्शकों और श्रोताओ का मन मोह लिया। श्री सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता की दशा एवं दिशा पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि आपको विश्व के कोने-कोने में हिन्दी बोलने-समझने वाले मिल जाते हैं। सिर्फ बोलने-समझने तक ही नहीं अपितु हिन्दी की व्याप्ति भारत से बाहर, दो सौ से अधिक देशों में है और अनेक देशों में हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है।

यह हिन्दी की सर्वमान्यता और उपयोगिता के कारण ही सम्भव है। इस अवसर पर प्रो. वीरोदय ने कहा कि वह देश जहाँ सूर्य नहीं अस्त होता उसका सूर्य हमारे विश्वविद्यालय के सृजन संवाद कार्यक्रम के प्रांगण में उतर कर अपने जीवन अनुभवों और कविता से प्रकाशवान कर दिया।

इस सृजन संवाद कार्यक्रम का संचालन कृत्रिम अंग एवं पुनर्वास केंद्र के प्रबंधक डॉ. रणजीत कुमार ने किया। इस अवसर पर डॉ. सुधा मौर्या, डॉ. अभिषेक सिंह, डॉ. गार्गी खरे, डॉ. संत प्रकाश, डॉ. कुमार पाल, डॉ. स्थिर विस्वाल सहित अन्य शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

'तुम्हारी हर शर्त, हर बात सिर आँखों, प्रिया। तुमने सच कहा हमारा रिश्ता अटूट है। इसे कोई नाम देने की जरूरत नहीं है। इसी बात पर एक कप कॉफी हो जाए।" बड़े स्वाभाविक अंदाज में हंसते हुए रजत ने फर्माइश कर डाली।

प्रिया का आँसू भरा चेहरा चमक उठा। रजत की इसी खासियत ने तो प्रियो को हमें मुग्ध किया है। गंभीर से गंभीर समस्या का हल वह किस आसानी से कर जाते हैं। आज भी तो वैसा ही हुआ, प्रिया की दुविधा कितनी आसानी से एक कप कॉफी ने तिरोहित कर दी।

उपलब्धियों से भरा विद्वान डाक्टर मनमोहन सिंह का जीवन

डॉ. एस.के. सेठी

डॉ. मनमोहन सिंह का नाम भारतीय राजनीति और अर्थशास्त्र में बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्हें भारत के आर्थिक सुधारों के वास्तुकार के रूप में भी जाना जाता है। वर्ष १९९१ में, जब भारत एक गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा था। नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री पीवी नरसिंह राव ने वित्त मंत्री के रूप में एक गैर-राजनीतिक व्यक्ति, प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह को आर्थिक सुधारों को ध्यान में रखते हुए अपने मंत्रिमंडल में शामिल किया। तत्पश्चात, कड़े विरोध के बावजूद, उन्होंने कई संरचनात्मक सुधार किए, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था उदार हुई। जिसके फलस्वरूप उनकी प्रतिष्ठा में अपार वृद्धि हुई। उसके बाद अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार के दौरान वे कांग्रेस से राज्यसभा सदस्य के रूप में भारतीय संसद में विपक्ष के नेता थे ।

वर्ष २००४ से २०१४ तक डॉ० मनमोहन सिंह ने भारत के १३वें प्रधान मंत्री के पद को सुशोभित किया। सैद्धांतिक नजरिए से देखा जाए तो डॉ० मनमोहन सिंह आर्थिक खुलेपन के युग में भारत के आर्थिक पुनरुत्थान की अभिव्यक्ति है। उनके सिद्धांत ने भारत के बाह्य उदारीकरण की सफलता और पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की विकास प्रक्रियाओं में भारतीय अर्थव्यवस्था के पुनः एकीकरण को लोकप्रिय व महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिससे देश को न केवल आर्थिक संकट से बाहर निकाला, बल्कि उसे वैश्विक मंच पर नई पहचान भी मिली। उनके कार्यकाल में आर्थिक सुधारों के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जो आज के समय में भारतीय समाज और देश की अर्थ व्यवस्था पर गहरा असर डालते हैं, जिसने देश के विकास की दिशा बदल दी।

शैक्षिक जीवन से लेकर प्रधानमंत्री पद तक, पूर्व प्रधानमंत्री डाक्टर मनमोहन सिंह का पूरा जीवन

उपलब्धियों से भरा हैः

शैक्षिक उपलब्धियांः १९४८ में पंजाब विश्वविद्यालय से अपनी मैट्रिक परीक्षा पूरी करने के पश्चात १९५७ में ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में अर्थशास्त्र आनर्स की डिग्री हासिल करके १९६२ में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डी. फिल. की डिग्री प्राप्त की।

डाक्टर मनमोहन सिंह द्वारा लिखित पुस्तक 'भारत के निर्यात रुझान और आत्मनिर्भर विकास की संभावनाएं', जो भारत के निर्यात पैटर्न और आत्मनिर्भर आर्थिक विकास के लिए, उसकी भूमिका का विश्लेषण करती है।

कुछ समय तक यूएनसीटीएडी (यूनाइटेड नेशन्स कान्फ्रेन्स ऑफ ट्रेड एण्ड डेवलपमेंट) सचिवालय में कार्यरत रहे। तत्पश्चात १९८७ से १९९० तक जिनेवा में दक्षिण आयोग के महासचिव के रूप में उनकी नियुक्ति।

राजनीतिक एवं आर्थिक उपलब्धियांः

रिजर्व बैंक के गवर्नर तथा दक्षिण आयोग के महासचिव जैसे महत्वपूर्ण पदों पर लंबे समय तक कार्य करने वाले महत्वपूर्ण टेक्नोक्रेट डॉ. मनमोहन सिंह, सोनिया गांधी के लिए एक सटीक विकल्प थे।

डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्रित्व कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता है। जिसने असैन्य परमाणु सहयोग के द्वार खोले। इसे भारत के विदेशी संबंधों में एक ऐतिहासिक क्षण के रूप में देखा जाता है।

उनकी सरकार के तहत ही भारत ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) सहित कई सामाजिक योजनाएं शुरू कीं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लाखों लोगों को रोजगार के अवसर मिले।

शिक्षा का अधिकार (२००९)ः शिक्षा का अधिकार अधिनियम लाकर लाखों-करोड़ों का भविष्य सुधारा गया। इस अधिनियम के तहत ६ साल से लेकर १४ साल तक के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया था।

सूचना का अधिकार अधिनियम (आर.टी.आई.)ः शासन में पारदर्शिता हेतु वर्ष २००५ में डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने सूचना का अधिकार अधिनियम (आर.टी.आई.) को लागू किया। इस कानून ने नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों या सरकारी संस्थओं से जानकारी प्राप्त करने का अधिकार दिया। यह भारत में एक मजबूत लोकतंत्र की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

आधार कार्ड की सुविधाः डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने आधार परियोजना की शुरुआत की, जो भारतीय निवासियों को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करने के लिए बनाई गई थी। जिस का उद्देश्य सरकारी लाभों और सेवाओं की पहुंच को सरल बनाना था।

प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर)ः डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण सिस्टम को लागू किया, इसके जरिए सरकारी योजनाओं के लाभ को सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजा जाने लगा।

कृषि ऋण माफी (२००८)ः डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार ने कृषि ऋण माफी योजना लागू की, जिसके तहत किसानों के ६०,००० करोड़ रुपये के ऋण माफ किए गए। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को आर्थिक संकट से उबारना था।

वित्तमंत्री के रूप में उन्होंने १९९१ में भारत के

पेड़ों से करो प्यार

डॉ हरनेक सिंह गिल

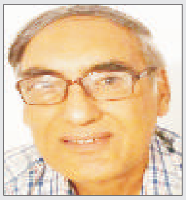

पेड़ों से करो प्यार
जैसे कोई बच्चों से
करता है प्यार।
जैसे कोई अपनों को
करता है स्वीकार।
पेड़ों से करो प्यार।
उनसे लिपट जाओ
बच्चों की तरह,
उन्हें सहलाओ।
उन्हें दुलराओ।
उनसे बातें करो दो-बार
बच्चों की तरह।
जन्म लेते हैं, बढ़ते हैं,
गली-मुहल्ले के लड़कों की
तरह जवान होते हैं
और बूढ़े हो जाते हैं ये पेड़।
उनके दुःख-दर्द को समझो,
उन्हें हमारी और
हमें उनकी जरूरत है।
उन्हें चाहिए दवाई,
हवा-पानी, देखभाल
बच्चों की तरह!
भूल गए हैं हम,
हमारे परिवार के सदस्य
हैं ये पेड़!
दूर-दूर, खड़े-खड़े चुपचाप
कुछ-न-कुछ
देते रहते हैं ये पेड़।
बड़े भाई की तरह
होता है हर एक छायादार पेड़।
नहीं उतार पाएगा
कोई उनके उपकार।
हम सबका
बहुत बड़ा कर्जा
उतारता है हर एक पेड़।
यह है उन्नति का
एक उपयोगी उपहार।
पेड़! तुम मेरे बड़े भाई हो,
एक निष्कपट, सहनशील,
सहायक भाई।
पेड़ों से करो प्यार!
जैसे कोई बच्चों से
करता है प्यार।

तुलसी जयन्ती पर

डॉ. गंगाप्रसाद शर्मा 'गुणशेखर' सूरत

तापु केरे बढ़े पर झर्सि गइ धरती तउ
बदरी बनि बरसइ बदि छाइ गए तुलसी।
कालु कराल क्यार बज्रु जहाँ -जहाँ गिरा
दुःख दर्दु म्याटइ बदि धाइ गए तुलसी।

दुनिया का पापु रहा मूड़े ते उप्पर जौनु
उइका अकलेन सब खाइ गए तुलसी।
अधरमु चढ़ा जब मुँड़ेरी कटार लिहे
धरमु बचावइ बदिआइ गए तुलसी।

संस्कार बचि जाइं आगे की पीढ़िन बदि
संस्कृति का बिरवा लगाइ गए तुलसी।
चिल्लतराफ घर -घर दुंदि द्वार द्वार देखि
झमाझम्म राम रसु बरसाइ गए तुलसी।

जगु अगरस्वाँच माँ कहाँ जाई का करी
राम नाम मंतरु लइ आइ गए तुलसी।
गरु रहा सूख अउ बानी रहइ मरी तब
कबिता का अमरितु पियाइ गए तुलसी।

भटके समाज क्यार चाँदु जो अँधेरे मा
'रामचरित मानस' वहइ पाइ गए तुलसी।

आर्थिक उदारीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसमें रुपये का अवमूल्यन, आयात शुल्क में कमी और राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों का निजीकरण शामिल था।

डॉ. सिंह की सरकार ने अपने कार्यकाल के अधिकांश समय में ८.५ प्रतिशत की मजबूत GDP वृद्धि दर हासिल की।

वित्तीय संकटः वर्ष २००८ में अमेरिका में भयानक मंदी आई थी। जिसका असर पूरी दुनिया पर पड़ा था। इस दौरान लाखों लोगों को अपनी नौकरी गंवानी पड़ी थी तथा शेयर मार्केट बुरी तरह गिर गई थी। ऐसे समय में डॉ. मनमोहन सिंह ने एक बार फिर साबित किया कि वह एक बेहतरीन अर्थशास्त्री हैं। डॉ. मनमोहन सिंह के फैसलों ने २००८ में भारत को मंदी से ही नहीं उभारा, बल्कि शेयर मार्केट उठाने में भी मदद की थी।

भारत के १३वें प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को एक विचारक और विद्वान के रूप में जाना जाता है। उन्हें उनकी मेहनत और काम के प्रति उनके अकादमिक दृष्टिकोण के साथ-साथ उनकी सुलभता और विनम्रता के लिए हमेशा याद रखा जाएगा।

अद्‌भुत प्रेमकथा

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक', ओस्लो नार्वे

(लेखक परिचय विदेशों में गत ४६ वर्षों से हिन्दी का प्रचार प्रसार कर रहे साहित्यकार नार्वे से प्रकाशित द्वैमासिक पत्रिका स्पाइल दर्पण के सम्पादक और फिल्मकार सुरेशचन्द्र शुक्ल कादम्बिनी के सुपरिचित लेखक हैं।)

ओसलो के हृदय में नार्वे की लोकसभा के समीप नगर का सबसे पुराना ऐतिहासिक ग्रान्ड होटल स्थित है। शैली खिड़की से झांकती है। नार्वेजीय लोकसभा के सामने से टैक्सी और कारों के आने-जाने का सिलसिला जारी था। चारो तरफ बरफ ही बरफ है। पेड़, पार्क, सड़के सभी बर्फ से ढकी हुई हैं। बरफ हटाने वाली ट्रैक्टर नुमा गाड़ी बरफ उठाकर एक किनारे पर जमा कर रही है। यहाँ बड़ी खिड़कियाँ होने का अपना आनन्द है। एक तो कमरे में प्रकाश प्रवेश कर सकता है दूसरे बाहर का प्राकृतिक दृश्य वार्तालाप करता हुआ प्रतीत होता है। बाहर का वातावरण भी साफ दिखाई देता है। तभी उसे डाकिया दिखाई देता है। उसके मन में उत्सुकता है। शायद एरिका के पिता का पत्र हो। तीन दिन पहले शैली का साक्षात्कार नार्वेजीय दूरदर्शन पर हो चुका है। जिसमें उसके ग्रान्ड होटल में ठहरने की सूचना भी निहित थी। आज उसने पुनः प्रेस कान्फ्रेंस बुलाई है। शैली तैयार होकर कान्फ्रेंस हाल में अपनी तीन महीने की पुत्री के साथ आते ही पत्रकारों से घिर जाती है।

होटल में वह अपनी बेटी एरिका के साथ ठहरी है। शैली को सदा यही बाद कचोटती रहती है कि आखिर एरिका का पिता कौन है। रात-रात भर जब एरिका उसे सोने नहीं देती तब उसे और भी असहय हो जाता।

प्रेम से बड़ा कोई उपहार नहीं, मेरी दृष्टि में प्रेम को जो बांधने का प्रयास करते हैं वह पुराने विचारों के लोग हैं। प्रेम तो बन्धनमुक्त होता है। यदि प्रेम को

बांधा गया तो वह कारागार में बन्दी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।

शैली अपनी तीन वर्षीय पुत्री एरिका को दूध पिलाते हुए पत्रकारों को साक्षात्कार दे रही थी। शैली अपनी तीन वर्षीय बेटी एरिका के पिता की खोज में निकली है। लगभग एक वर्ष पूर्व वह इसी होटल में दो महीने रही थी।

एक पत्रकार ने प्रश्न किया, तुम्हारे पास उसका चित्र तो होगा।

नहीं मेरे पास कोई चित्र नहीं है।

तुम्हे एरिका के पिता का स्मरण तो होगा। नक्श आदि। रूप

नहीं, मुझे बिलकुल याद नहीं है। मैं पिछले वर्ष अक्टूबर-नवम्बर महीने में इसी होटल में ठहरी थी। तब मेरा परिचय अनेकों युवकों से हुआ था जिनके साथ मैं क्लबों, डिस्को थेकों में नांचती और मौज मनाती रही। १० दिसम्बर को जब पूरा विश्व संयुक्त राष्ट्र संघ की स्वर्ण जयंती (पचासवीं सालगिरह) मना रहा है वहाँ मेरी बेटी को भी उसके पिता के साथ रहने का हक मिलना चाहिए।

आज समाचार पत्र में शैली और एरिका का चित्र छपा था। पत्रकारों के उसके परिवार के बारे में पूछने पर उसने जवाब दिया, मेरे परिवार के साथ हमेशा मजाक हुआ है। नार्वे में सन् १९४० से ४५ तक नार्वे में १०२६२ लोगों की जानें गयी थीं। उनमे मेरे नाना भी एक थे। मेरी नानी विवाह करके एक गाड़ी पर सवार होकर जा रही थीं कि जर्मनी के क्रूर सैनिकों ने आक्रमण कर मेरे नाना को बन्दी बना कर मार दिया और नानी को एक जर्मन सैनिक ने रखैल बनाकर चार वर्ष रखा और सन् ४५ में वह वापस लौट गया। मैं उसी निर्दयी, क्रूर जर्मन सैनिक की नातिन हूँ। मेरी माँ ने भी पिता का सुख नहीं जाना और मैं नहीं चाहती कि एरिका भी अपने पिता के बिना रहे।

वह बहुत भावुक हो गयी थी। पत्रकारों में अनेक प्रश्नों से उसके पौरुष को ललकारा तो वह दर्शनशास्त्री की भाँति उत्तर देने लगी, नारी एक नदी की तरह होती है, जिसका काम है बहना। वह सदा भावनाओं में बहती रहती है, नदी ऊँचाई से निचाई की ओर बहती है। परन्तु मैं, मैं वह नदी हूँ जो निचाई से ऊँचाई की ओर बहती हूँ। ठीक घारा के विरुद्ध ।

उसने एरिका के सर पर हाथ रखते हुए आगे कहा, उन युवा प्रेमियों को जो मेरे साथ इस होटल में मेरे साथ एक दिन भी होटल में रहे हों उन्हे चाहिये कि होटल में एरिका से सम्पर्क करें तथा अपने खून के ग्रुप का प्रमाणपन्न दें तथा अपने पिता का हक निभायें। मेरी बेटी का ब्लडग्रुप ही उसके पिता को खोजने में कुछ हद तक सहायक हो सकता है।

वह विचारों में लीन हो गयी। पत्रकारों ने उसकी मदद का आश्वासन दिया। शैली का कहना था कि वह हिम्मत नहीं हारेगी। उसे बाइबिल की वह पंक्तियां याद थीं कि ईश्वर उसी की मदद करता है जो स्वयं अपनी मदद करता है। उसे विश्वास था कि उसे एक न एक दिन एरिका का पिता अवश्य मिल जायेगा। द्वार पर क्रिसमस का पेड़ सजा था। वह उनमें लटके देवदूतों की लट्टूनुमा खिलौनों को देख रही थी। जब क्रिसमस के दिन सभी लोग अपने परिवार के साथ होंगे तो शायद एरिका भी अपने पिता के साथ क्रिसमस मनाये। उसकी आशाओं में एक गहरा विश्वास था।

कुंद होती धार

एस. एस. पराशर, दिल्ली

एक समय था जब समाचार पत्रों में संपादकीय लिखा जाता था। इसका मूल उद्देश्य केवल संपादक के विचारों का प्रस्तुतीकरण न होकर सरकार और समाज के ज्वलंत विषयों के प्रति संवेदना प्रकट करना होता था। संपादक को अखबार के मालिकों की राजनैतिक वफादारी या किसी बड़े नेता से निजी संबंधों का कोई सरोकार न होता था।

मुख्य तौर पर संपादकीय स्तंभ सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मुद्दों को लेकर जनता के प्रहरी के तौर पर कर्तव्य निर्वाहन करते थे और मुखर होकर जनता के हित और अहित पर सरकार से सीधे सवाल जवाब करते थे।

अगर इतिहास के गर्त में जाएं तो स्वर्गीय वृंदा लाल वर्मा के 'प्रताप' में छपे लेख, स्वर्गीय हजारी प्रसाद द्विवेदी के लेख, मैथिलीशरण गुप्त जी के 'इन्दुप्रताप' और 'सरस्वती' में छपे लेख और रचनाएं इस बात के उदाहरण हैं। अंग्रेजी हुकूमत के जुल्मों और अत्याचारों को निर्भीक होकर इन महान साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं और लेखों के जरिए उजागर किया और जनता को जागृत किया क्योंकि वह दौर और था और सभी भारतीय सरकार के विरोधी थे, तो शायद बात एक तरफा थी लेकिन अब कुछ आगे चलते हैं।

वृंदा लाल वर्मा जी १९५२ में कांग्रेसी विचारधारा के विरोध में लिख रहे थे और १९५२ का लोक सभा चनुाव भी लड़ा। नेहरू जी उनके विरोध में प्रचार में उतरे। वृंदा लाल वर्मा चुनाव हार गए परंतु नेहरू जी ने चुनाव पश्चात न तो उनके घर ईडी, सीबीआई, आईटी या किसी अन्य संस्था की रेड करवाई न उनकी साहित्यिक रचनाओं को प्रतिबंधित किया बल्कि, १९६१ में उनके सम्मान में एक भव्य अभिनंदन समारोह जिसमें कांग्रेसी विचारधारा के अनेकों कवि नेहरू जी के मित्र हरिवंश राय बच्चन, बाबू जगजीवन राम जैसे

लोगों ने स्वयं भाग लिया।

जिस पर नेहरु जी ने कोई नाराजगी नहीं जताई बल्कि खुद शुभकामना संदेश भेजा। इतना ही नहीं 'सोवियत लैंड' नेहरू पुरस्कार के लिए उनका नाम भेजा गया और वह पुरस्कार उन्हें मिला भी।

ऐसा ही एक और उदाहरण हमें मिलता है जब राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने, सरकार की आलोचनाओं से ओतप्रोत उनकी रचनाओं के बावजूद राज्यसभा में आने का आग्रह किया। यहां एक बात के लिए विराम चाहूंगा, आज के दौर में राज्यसभा आने के लिए लोग क्या-क्या पापड़ नहीं बेलते तन- मन-धन, साम-दाम-दंड-भेद सभी जुगत लगाते हैं परंतु मैथिली जी ने पंडित नेहरू का आग्रह ठुकरा दिया।

तत्पश्चात भी नेहरू जी ने उनके प्रति कोई विद्वेष न रखते हुए मैथिली जी की मुँह बोली बहन महादेवी वर्मा को इस बात के लिए राजी किया कि वह मैथिली जी को मनाए। आखिर महादेवी जी के निरंतर प्रयास से मैथिली जी ने नेहरु जी का आग्रह स्वीकार किया। राज्यसभा आकर भी मैथिली जी ने कभी भी सरकार की तरफदारी, प्रशंसा में कसीदे नहीं गढ़े, बल्कि १९५४ में आम बजट की आलोचना की और इस पर भी नेहरू जी ने उनके घर सीबीआई या ईडी नहीं भिजवाई बल्कि पुणे राज्यसभा के लिए मनोनीत किया।

ऐसा ही एक उदाहरण आर.के. मेनन का है जो सदैव सरकार की विदेश और आर्थिक नीति की आलोचना भरे लेख लिखते रहे परंतु नेहरू जी ने उन्हें कभी इस चीज के लिए परेशान नहीं किया बल्कि उन्हें विदेशी विभाग का मंत्रालय दिया और 'यू.एन.ओ.' भी कश्मीर पर अपनी बात रखने के लिए भेजा।

अब थोड़ा और आगे चलें, तो देखते हैं कि ७०-८० के दशक में पत्रकारिता के इतिहास में स्वर्ण युग की गंगा में 'भागीरथी' राजेंद्र माथुर के रूप में अवतरित हुई, उनके लेखों ने तो जैसे हिंदी पत्रकारिता की दिशा और दशा ही बदल डाली सच पूछो तो 'नई दुनिया' अखबार को राजेंद्र माथुर जैसे लोग शिखर पर ले गए, उनके 'पिछले सप्ताह' का लोगों को बेसब्री से इंतजार रहता था। अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर उनकी समझ और लेखन के सभी कायल थे, वे निरंतर सरकार की विफलता और सफलता पर सरकार में आलोचना और सराहना करते रहे।

तत्पश्चात नवभारत टाइम्स में उनके लेखन ने और ऊंचाइयों को छुआ। १९७५ में जब आपातकाल की घोषणा के साथ सेंसरशिप का ऐलान हुआ तो राजेंद्र माथुर ने मई महीने में सांकेतिक विरोध के रूप में संपादकीय पृष्ठ भी कोरा छापने का निर्णय लिया। इस पर भी आपातकाल होते हुए इंदिरा सरकार ने उन्हें जेल में नहीं डाला, न ही उनके यहां कोई छापा पड़वाया बल्कि आम चुनावों के बाद तो राजेंद्र माथुर जी ने सरकार की पुरजोर आलोचनाओं से भरे लेख लिखे और जन मानस में सरकार के प्रति एक विरोध की हवा दी, नतीजतन इंदिरा जी चुनाव हार गई। गठबंधन में सरकार बनी जिसके अपने ही संकट थे। राजेंद्र माथुर जी की कलम अभी भी यूं ही चलती रही। इंदिरा जी पुनः सत्ता में आई परंतु राजेंद्र माथुर या किसी भी अन्य पत्रकार को परेशान न किया बल्कि राजेंद्र माथुर जी को प्रेस आयोग का सदस्य भी बनाया इसके अतिरिक्त और भी ऐसे पत्रकारों की सूची है

मेलबर्न की सुबह

हेमा विष्ट, आस्ट्रेलिया

भारत में सुबह ऐसे होती है कि जैसे पूरी दुनिया शुरू से शुरू हो रही हो। रात को सब समेट कर रख दिया था अब सुबह हुई तो फिर शामियाना लगाओ। सुबह की चहल पहल तरोताजगी का एहसास दिलाती है।

सुबह-सवेरे अखबार वाले घर-घर घूम जाएँगे फिर आप बाहर निकले तो मिल्क बूथ पर ताजा दूध आ रहा होगा, सब्जी की दुकान पर एक अहटो खड़ा होगा ताजी सब्जियां लेकर और सड़क पर छोटा विक्रम घरेलू गैस सिलेंडर लिए चला जा रहा होगा। सड़क किनारे झाड़ू लग रही होगी। कुत्ते अलसाये हुए बीच सड़क में बैठे होंगे। आने-जाने वाले वाहन किनारे से निकल जाएँगे।

चिड़िया दल अपनी स्टैंड अप मीटिंग में लगा होगा। सूरज मद्धम होगा, आँच मीठी होगी।

ये ऐसी सुबह है जो मैंने हमेशा से देखी है। ये मुझे

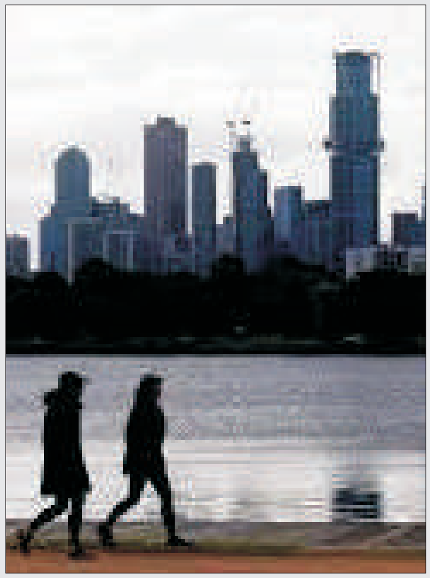

समय के साथ आगे बढ़ते इंसान का जीवन लगता है। धीरे-धीरे प्रगति की तरफ बढ़ता इंसान। सीमित साधनों में असीमित इच्छाओं और सपनों का समय।

मेलबर्न की सुबह ऐसे होती है जैसे कुदरत समय में पीछे चली गई हो और इंसान समय से आगे निकल गया हो। इतना आधुनिक जीवन कि न अखबार वाले की जगह रही न हर रोज शामियाना लगाने का दौर रहा। दूध दो हफ्ते की वैलिडिटी वाला है और सब्जी बाजार जहाँ लगती है वहाँ हफ्ते में एक ही बार जाना। वो कब कैसे रीफिल हो जाते हैं इसकी कोई नुमाइश नहीं है। सब व्यवस्थित और मशीनी-सा। एकदम सोफेस्टिकेटेड। हरियाली इतनी ज्यादा और इंसान इतने कम कि लगता है पुराने समय में लौट गई प्रकृति। शांति का बसेरा हर तरफ।

मैं इन दो सुबहों में आवाजाही करती रहती हूँ तो दोनों का फर्क मुझे विस्मित करता है हर बार। किसी एक सुबह की आदत नहीं लग पाती। परिवर्तनशील जीवन।

जिनके बारे में यदि लिखा जाये तो यह लेख कभी खत्म ही ना हो पाए जिनमें स्वर्गीय कुलदीप नैयर, विनोद दुआ, श्री सुरेंद्र प्रताप सिंह, मृणाल पांडे, ममता कालिया, खुशवंत सिंह आदि नाम है। स्वर्गीय सुरेंद्र प्रताप सिहं जी राजेंद्र माथुर की शैली में संपादक रहे। उन्होंने निर्भीकता से 'धर्मयुग', 'नवभारत टाइम्स' में लिखा और दूरदर्शन पर सरकारी चैनल होते हुए 'आज तक' जैसे कार्यक्रम भी दिए। निर्भीकता के साथ वह प्रस्तुत करते थे और सरकार की आलोचना करते थे, वह आज कहां देखने को मिलता है।

स्वर्गीय सुरेंद्र प्रताप सिंह ने राजीव गांधी, जनता दल सरकार, नरसिंह राव का काल, मनमोहन सिंह जी का कार्यकाल अटल बिहारी वाजपेई का काल सभी प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल को कवर करते हुए मंडल आयोग आंदोलन, आडवाणी जी की रथ यात्रा, अयोध्या विवाद बोफोर्स विवाद, सेन्टकिट विवाद चुरहर लॉटरी कांड जैसे अनेकों मसलों पर लेख लिखें और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से प्रसारित किया। वह हर विषय पर गंभीरता और गहराई से अपनी बात रखते थे। उन्होंने बेबाकी के साथ प्रधानमंत्रियों की, द.प., वामपंथी सरकारों और आंदोलनों की आलोचना और सरहाना दोनों की, परंतु किसी भी प्रधानमंत्री ने उनसे प्रति द्वेष न रखा। वजीराबाद में बच्चों के डूबने की खबर को प्रसारित करने के बाद कैमरा बंद होने पर उनका फूट- फूट कर रोना कौन भूल सकता है, इसी प्रकार उपहार कांड के बाद उन्हें जो सदमा लगा वह तो उनकी जान ही ले गया।

पुण्य प्रसून जोशी, रवीश कुमार जैसे कुछ अपवादों को छोड़कर ऐसी संवेदनशीलता और निर्भीकता पत्रकारिता में कहां देखने को मिलती है। डॉक्टर पुरुषोत्तम अग्रवाल के शब्दों में कहें तो, यह वह समय था जहां असहमति का साहस और सहमति में विरोध के लिए स्थान था। परंतु, अब वह दौर खत्म सा है। सरकार को खुश रखने या सरकार के एजेंडे को आगे बढ़ाने की होड़ में पत्रकार, फिल्मकार चाटुकारिता में अच्छे से अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। जैसे मैंने पहले कहा था कि कलम की धार कुंद हो चुकी है और पत्रकारिता खो सी गई है। अंत में अपनी कविता की कुछ लाइनें यहां प्रस्तुत करते हुए लेखनी को विराम दूंगा।

'अब अखबारों की खबरों में
बड़ी ही चतुराई है
मदारी सा है संपादक,
और खबरें हाथ की सफाई है'।

महात्मा गाँधी की पत्रकारिता दिशा दृष्टि

डॉ. विनोद बब्बर

हमारे समय में विश्व के सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व महात्मा गांधी दुनिया अलग-अलग कारणों से उन्हें स्मरण करती है। बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी गांधी जी लेखक व संपादक भी थे। उन्होंने अपनी पत्रकारिता की शुरूआत सन १८८८ में लंदन पहुंचकर ब्रिटेन के प्रतिष्ठित अखबार वेजिटेरियन में लेख लिखने से की। वहां उन्होंने 'टेलिग्राफ' और 'डेली न्यूज' जैसे अखबारों में भी लिखा।

१९०३ में अफ्रीका में इंडियन ओपीनियन नामक समाचार पत्र निकालने से पहले उन्होंने भारत से प्रकाशित 'हिंदू', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'स्टेट्समैन' सहित अनेक पत्रों के लिए अनेक लेख लिखे व इंटरव्यू भेजे। विशेष बात यह कि इंडियन ओपीनियन के प्रत्येक अंक में हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती और तमिल भाषा में छह कॉलम प्रकाशित होते थे ताकि वहां का हर भाषा-भाषी भारतीय समाज उससे जुड़ सके। भारत लौटकर उन्होंने कुछ दिन बॉम्बे क्रॉनिकल और सत्याग्रही समाचार पत्र निकाले। इनके बंद होने के बाद सितंबर १९१९ में नवजीवन और यंग इंडिया नामक समाचार पत्र निकाले। इसी क्रम में ११ फरवरी, १९३३ को साप्ताहिक हरिजन आरंभ हुआ जो जीवन पर्यन्त जारी रहा। उन्होंने विदेशी साम्राज्य के विरूद्ध ही नहीं सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध भी अपनी लेखनी चलाई। पत्रकार गांधी ने अनेक पुस्तकें भी लिखी तो कुछ का अनुवाद भी किया। १८९९ में इंग्लैंड से दक्षिण अफ्रीका जाते हुए जहाज पर उन्होंने ग्रीन पैम्पलेट की रचना की। प्रसिद्ध पुस्तक हिन्द स्वराज भी यात्रा के दौरान लिखी गई। बच्चों के लिए धार्मिक संदेशों व शिक्षा पर आधारित बाल पोथी और नीति थर्म नामक पुस्तकें भी बहुत प्रसिद्ध है।

गांधी जी की पत्रकारिता व्यवसाय नहीं, बल्कि राष्ट्रीयता और जनजागरण का माध्यम था। वे 'पत्रकार' के रूप में कभी किसी व्यक्ति, क्षेत्र अथवा संस्था का पक्षकार नहीं बने। समस्या और घटना चाहे उत्तर की रही हो दक्षिण की, पूर्व की हो या पश्चिम की, गाँधी जी बिना पक्षपात उनपर अपने साप्ताहिक पत्र में चर्चा जरूर करते थे। कई बार उनका मत लोक जीवन के परंपरागत मत से मेल नहीं खाता था, फिर भी अपने उस मत को व्यक्त करने का खतरा उठाते थे।

गांधीजी गांवों को भारत की आत्मा मानते थे। हरिजन के दिनांक २९.०८.१९३६ के अंक में लिखा था- 'अगर गांव नष्ट होते हैं तो भारत भी नष्ट हो जाएगा। तब भारत, भारत नहीं रहेगा। दुनिया में भारत का अपना मिशन ही खत्म हो जाएगा। गांवों का पुनरुज्जीवन तभी संभव है जब उनका शोषण समाप्त हो। यदि ग्राम उद्योगों के इस स्वरूप की रक्षा की जाती है तो फिर ग्रामवासियों द्वारा उन आधुनिक मशीनों और औजारों का इस्तेमाल करने पर भी कोई आपत्ति नहीं है जिन्हें वे बना सकते हों और जिनका इस्तेमाल करने का सामर्थ्य उनमें हो। यह जरूर है कि उन्हें दूसरों के शोषण का साधन नहीं बनाया जाना चाहिए।'

हरिजन के संपादक के रूप में दिनांक २७.०४.१९४७ को उन्होंने इसी विषय पर लिखा- 'सच्चा भारत उसके ७ लाख गांवों में बसता है। यदि भारतीय सभ्यता को एक स्थायी विश्व व्यवस्था के निर्माण में अपना पूरा-पूरा योगदान करना है तो गांवों में बसने वाली इस विशाल जनसंख्या को फिर से जीना सिखाना होगा।'

इसी प्रकार दिनांक २८-०४-१९४६ को उन्होंने लिखा- 'सभी गांवों का सर्वेक्षण कराया जाएगा और उन चीजों की सूची तैयार कराई जाएगी जो कम से कम या किसी तरह की सहायता के बिना स्थानीय रूप से तैयार की जा सकती हैं और जो या तो गांवों के ही इस्तेमाल में आ जाएंगी या जिन्हें बाहर बेचा जा सकेगा। उदाहरण के लिए, कोल्हू से पेरा गया तेल और खली, कोल्हू से पेरा गया जलाने का तेल, हाथ से कुटे चावल, ताड गुड, शहद, खिलौने, चटाइयां, हाथ से बना कागज, साबुन आदि। इस प्रकार यदि पर्याप्त ध्यान दिया जाए तो ऐसे गांवों में जो निष्प्राण हो चुके हैं या निष्प्राण होने की प्रक्रिया में हैं, नवजीवन का संचार हो सकेगा तथा उनकी स्वयं अपने और भारत के शहरों और कस्बों के इस्तेमाल के लिए आवश्यकता की अधिकांश वस्तुओं के निर्माण की अनंत संभावनाओं का पता चल सकेगा।'

इससे स्पष्ट है कि गाँधी जी ग्रामीण तथा कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे। यह बात अलग है कि गांधीजी के परम शिष्यों ने उनके दर्शन का मात्र प्रदर्शन ही किया पर गांवों के लिए कितना किया, यह जगजाहिर है। लेकिन गांधी के राज्य में सहकारिता के माध्यम से हुई 'श्वेत क्रांति' को गांवों का विकास देखकर संतोष होता है।

गाँधीजी धार्मिक व्यक्ति थे। १९ जनवरी १९१८ को उन्होंने मौलाना आजाद को संबोधित पत्र में लिखा कि 'धर्म के बिना किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व पूर्ण नहीं है।' स्वयं को गर्व से हिन्दू कहते थे। वे धर्मान्तरण के सख्त विरोधी थे। 'हरिजन' में २२ मार्च १९३५ के 'डिप्लोरिंग कन्वर्जन' नामक शीर्षक से उन्होंने कहा, 'यदि वे मानवीय कार्य और गरीबों की सेवा करने के बजाय डाक्टरी सहायता व शिक्षा आदि के द्वारा धर्म परिवर्तन करेंगे तो मैं उन्हें निश्चय ही यहाँ से चले जाने को कहूंगा। प्रत्येक राष्ट्र का धर्म अन्य किसी राष्ट्र के धर्म के समान ही श्रेष्ठ है। निश्चय ही भारत का धर्म यहाँ के लोगों के लिए पर्याप्त है। हमें धर्म परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं है।'

उन्होंने मिशनरियों से सीधे प्रश्न किया, 'आपने मन में सोच लिया है कि यहाँ के लोगों को सीखाना है। लेकिन आप यहां से कुछ सीखें। आशा है आप अपनी आँख, कान, हृदय बंद नहीं रखेंगे बल्कि खुले रखेंगे। लोगों को आप अच्छा जीवन बिताने का न्योता देते हैं। उसका यह अर्थ नहीं कि आप उन्हें ईसाई धर्म में दीक्षित कर लें।'

दुर्भाग्य कि गांधी की यह दिशा दृष्टि ताक पर रख दी गई जिसका परिणाम है कि आज भी धर्मान्तरण न केवल जारी है बल्कि सामाजिक समरसता को नष्ट करने का कारण बन रहा है।'

अफ्रीका में इंडियन ओपीनियन के प्रवेशांक (४ जून, १९०३) में महात्मा गांधी ने पत्रकारिता के उद्देश्यों को स्पष्ट किया-

-जनभावनाओं को समझना और उन्हें अभिव्यक्ति देना है।

- लोगों में जरूरी भावनाओं को जागृत करना है।

- निर्भीक तरीके से गड़बड़ियों को उजागर करना है।

वास्तव में गांधी की पत्रकारिता दृष्टि भारतीय संस्कृति, जीवन-पद्धति, मानवीय मूल्यों की श्रेष्ठता एवं युग के नवजागरण का शंखनाद है। वे अपनी मातृभाषा गुजराती, मातृभूमि की भाषा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओ के माध्यम से 'वास्तविक भारत' तक पहुँचने को पत्रकारिता का प्रथम कर्तव्य मानते थे। वे ऐसे समाचार-पत्रों को 'राष्ट्रवादी अखबार' कहते हैं जो 'स्वदेश-धर्म', अर्थात् भारत-माता की सेवा का उद्घोष करता हो। 'यंग इंडिया' के ३ अप्रैल, १६२४ के अंक में भारत माता का वह महान सपूत स्पष्ट घोषणा करता हैं, श्मैं भारत की आजादी के लिए प्रयत्न क्यों कर रहा हूँ? इसलिए कि मेरा स्वदेशी धर्म मुझे सिखाता है कि इस देश में मेरा जन्म हुआ है। इस देश की संस्कृति मुझे विरासत में मिली है, इसलिए मैं अपनी माता की सेवा करने का ही अधिक-से-अधिक पात्र हूँ और मेरी सेवा पर पहला हक इस जन्म-भूमि का है।श हिन्द स्वराज्य गांधी-दर्शन का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। उसमें गांधी जी ने कहा है- 'मुझे धर्म प्यारा है और हिन्दुस्तान धर्म-भ्रष्ट होता जा रहा है।', 'मेकहले ने शिक्षा में गुलामी की बुनियाद डाली।', 'जो सभ्यता हिन्दुस्तान ने दिखायी है, उसको दुनिया में कोई नहीं पहुँच सकता।', 'स्वदेशाभिमान का अर्थ है मैं देश का हित समझता हूँ।'

गांधी की पत्रकारिता ने दक्षिण अफ्रीका में इंडियन ओपिनियन के माध्यम से विदेश में भी स्वदेशानुभूति एवं देशाभिमान से जोड़ा तो नवजीवन, यंग इंडिया, हरिजन आदि समाचार पत्रों के माध्यम से भारत में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। चेतना से उनका अभिप्राय था लोक-सेवा, लोक-शिक्षा, लोक जागरण और लोक-संघर्ष। गाधी के पत्रकारिता दर्शन में पवित्रता, नैतिकता, शुद्धता, सत्यता, स्वार्थ विसर्जन तथा समता, ममता और समरसता प्रमुख थी। बेशक गांधी स्वयं को 'शौकिया पत्रकार' कहते थे, परन्तु उनकी पत्रकारिता आज के तथाकथित मानवतावादी पत्रकारों द्वारा देशद्रोहियों के शौक पूरे कर 'शोक' उत्पन्न करने वाली पत्रकारिता हर्गिज नहीं थी। आज के शहरी नक्सलियों को यह जरूर जानना चाहिए कि 'करो या मरो' आंदोलन के दौरान भी उन्होंने अपने समाचारपत्र के माध्यम से हिंसा का कभी भी समर्थन नहीं किया।

२८ मई, १६३१ को 'यंग इंडिया' में 'विषैली पत्रकारिता' शीर्षक में गांधी जी द्वारा की गई टिप्पणी 'अखबारों की नफरत पैदा करने वाली बातों से भरी हुई कुछ कतरनें मेरे सामने पड़ी हैं। इनमें सांप्रदायिक उत्तेजना, सफेद झूठ और खून-खराबे के लिए उकसाने वाली राजनीतिक हिंसा के लिए प्रेरित करने वाली बातें हैं। निस्संदेह किसी भी सरकार के लिए मुकदमे चलाना या दमनकारी अध्यादेश जारी करना बिल्कुल आसान है। हमारे पत्रकार संघ एक ऐसा विभाग क्यों न खोले, जिसका काम विभिन्न समाचार-पत्रों को देखना और आपत्तिजनक लेख मिलने पर उन पत्रों के संपादकों का ध्यान उस ओर दिलाना हो।' आज भी प्रासंगिक है।

महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है 'समाचार-पत्र सेवाभाव से ही चलाने चाहिए, समाचार पत्र एक जबर्दस्त शक्ति है। लेकिन जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गांव के गांव डुबो देता है और फसल को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार निरंकुश कलम का प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है। लेकिन यदि ऐसा अंकुश बाहर से आता है, तो वह निरंकुशता से भी अधिक विषैला सिद्ध होता है। अंकुश अंदर का ही लाभदायक हो सकता है।'

गांधी जी, पाठक और संपादक के रिश्तों पर भी बहुत सजग थे। वे लिखते हैं- 'अखबार के द्वारा मुझे मनुष्य के रंग-बिरंगे स्वभाव का बहुत ज्ञान मिला। संपादक और ग्राहक के बीच का निकट का और स्वच्छ संबंध स्थापित करने की ही धारणा होने से मेरे पास हृदय खोलकर रख देने वाले पत्रों का ढेर लग जाता था। उसमें तीखे, कड़वे, मीठे, यों भांति-भांति के पत्र मेरे नाम आते थे। उन्हें पढ़ना, उन पर विचार करना, उनमें से विचारों का सार लेकर उत्तर देना- यह सब मेरे लिए शिक्षा का उत्तम साधन बन गया था। मुझे ऐसा अनुभव हुआ मानो इसके द्वारा मैं समाज में चल रही चर्चाओं और विचारों को सुन रहा होऊं।'

गांधी की यह दृष्टि टीआरपी को लोकप्रियता का पैमाना मानने वालों को भी समझनी चाहिए। वास्तव में पाठकों से वैचारिक आदान-प्रदान का स्वस्थ और आत्मीय संबंध ही पत्रकारिता और संपादन की कसौटी है। दुर्भाग्य से आज इस ओर गुणवत्ता की ओर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा।

कहने को बहुत कुछ है, संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है- आज गांधी होते तो निश्चित रूप से शिक्षा संस्थानों में अलगाववाद का जहर घोलने वालो की जमकर खबर लेते। 'हे राम!' कहकर संसार त्यागने वाले रामभक्त गांधी राम के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगाने वालों के कृत्य पर अपने संपादकीय में फटकार लगाने में एक पल की भी देरी न करते। क्योंकि गांधी की पत्रकारिता सदा भारतीयता की पटरी पर दौडती रही है। क्योंकि वे किसी मीडिया घराने के नौकर नहीं, देश की कोटिशः जनता के प्रतिनिधि थे। क्योंकि वे ऐसे पत्रकार थे जो केवल और केवल भारत के पक्षकार थे।

आज सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया ने हर व्यक्ति को पत्रकार बना दिया है। ऐसे में सभी को पत्रकार की दिशा-दृष्टि का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। गांधी जी के १५० वर्ष के अवसर पर पत्रकारिता की उसी श्रेष्ठ परम्परा को न केवल स्मरण करना बल्कि अपने आचरण में उतारना गांधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

यहाँ यह विशेष उल्लेखनीय है कि रामचरित मानस का गांधी जी के दर्शन पर बहुत प्रभाव रहा है। राम राज्य की अवधारणा हो, सामाजिक समरसता के लिए हरिजन का प्रयोग, ये उन्हें वहीं से मिले। रामचरित मानस के सुन्दर काण्ड की चौपाई प्रमाण है- हरिजन जानि प्रीति अति गाढ़ी। सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी।

बूड़त बिरह जलधि हनुमाना। भयहु तात मो कहुँ जलजाना।।

गांधी जी ने हनुमान जी के गुणों से प्रभावित होकर समाज की हर प्रकार से सेवा करने वालो को हरिजन नाम दिया। उनका मत था हमारी सभी जातियां राम और हनुमान की तरह एक दूसरे की पूरक है। उनमें अस्पृश्यता अमानवीय, अधार्मिक और अराष्ट्रीय है।

छम्म से (कविता)

डॉ. पल्लवी भूदेव पाटील

छम्म ! से वो सामने आ धमकी
कमर लचकाती, ताली बजाती बोली
ऐ! इन्सान की औलाद
पैसा निकाल, टैम नहीं है मेरे पास
मैंने दो कदम पीछे सरककर देखा
सुर्ख लाल होंठ, सीधे सरल बाल
नर्गिसी आँखे
गोरे हाथों में चूड़ियाँ थी, लाल बला की
खुबसूरत
मैंने उसकी ओर ममत्व भरी नजर से देखा
उसने एक सिक्का निकाला
अपनी चूड़ियों के बीच से घुमाकर
कुछ बुदबुदाकर
मेरे हाथों में रखा और कहा
अल्ला करे तेरी हर आरजू पूरी हो मैंने कहा-
मुसलमान हो
उसने कहा अरी मुनिया,
हिजड़ा हिंदू या मुसलमान नहीं होता .. बस
हिजड़ा होता है उसके आत्मा की मायूसी पर
लगाने के लिए कोई मरहम भी तो नहीं था मेरे
पास पुरुषार्थ और ममत्व, दोनों की परिभाषा
जहाँ गढ़ी जाती है, वह छाती वाला हिस्सा
निपट सपाट, मैंने कहा
हे ईश्वर! तुम्हारे मन में कोई करुणा नहीं
जिंदगी जीने की कोई तो निशानी छोड़ते
घर - परिवार समाज दुनिया, आस - पड़ोस,
रिश्तेदार मित्र
सभी ने मानो
अपमान हिकारत
तिरस्कार, तौहीन, बेइज्जती
जिल्लत भर-भर कर दी थी उसके हिस्से में
इस अभिशप्त जीवन में
निमर्दन शरीर पाकर भी
उसके मन में कहीं भी
आत्मवध या खुदकुशी
जैसा कोई विचार नहीं था, उल्टा वो शरीर से
मुक्ति पाने के जतन में जुट गयी थी
दुआएं देकर....
दुनिया को सदभाव लौटाकर......

कितना सुन्दर देश हमारा

अर्जुन पाण्डेय

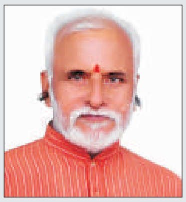

कितना सुन्दर देश हमारा,
कितनी प्यारी धरती।
कितने सुन्दर लोग यहां के,
उसमें से कुछ करते मनमानी।
कितना सुन्दर देश ----।

गंगा जिसकी बने प्रमान,
हिमालय रखता जिसकी शान।
हिन्द धो रहा चरण महान,
जहाँ पक्षी करते कलरव गान।
कितना सुन्दर देश ----।

राम कृष्ण शिवा की धरती,
कबीर, तुलसी सूर महान की।
सुर नर मुनि सब गांये गान,
बना रहे भारत देश महान।
कितना सुन्दर देश -----।

मेरा मकान

एस.एस. पराशर, दिल्ली

मेरा मकान पुराना था
पुश्तैनी और मजबूत था
क्योंकि पारिवारिक रिश्तों का
जुड़ा रहना इसका सबूत था।
इस मकान ने देखे बहुत से
सपने, यहीं रहते थे
मेरे सब अपने,
यह मकान बड़ा खास था
मेहमानों का आना यहाँ, रिवाज था।
अब यहाँ से सब सरक रहे हैं
शायद इसीलिए इसके हिस्से
दरक रहे हैं।
यहाँ अब न बड़ों की डांट है,
न बच्चों का शोर है
सच, ये मकान वो नहीं
यह कोई और है।
धीरे-धीरे इसकी यादें
सिसक रही हैं और
एक-एक कर ईंटे दरक रही हैं,
जब परिवार में सब घुले-मिले थे
सच, इस मकान के हिस्से
किस तरह जुड़े थे।
इस मकान में बड़ा सा आंगन
और इसका अपना आसमान था
ये मकान नहीं,
मोहल्ले का निशान था।
जुदाई का दर्द और
दुखों का सामान दे गया
मेरा हर बेटा, अपने हिस्से
का आसमान ले गया।
ये मकान पुराने वक्त को तरस रहा है, सच,
मेरा मकान धीरे-धीरे दरक रहा है,
मेरा मकान धीरे-धीरे दरक रहा है।

कौन पुकारेगा फिर मुझको

कुसुम वीर

प्रातःकाल जो सूर्य प्रखर था
आभामय उद्दीप्तमान था
कर बद्ध खड़ा सब जगत देखता
अर्ध्य अंजलि अर्पित करता।
अस्ताचल में डूब चला जब
निस्तेज प्रभा संग साँझ लिए
मुख फेर खड़े थे वे सब जन
प्रातःकाल जो नमन किए।
जन्म लिया तब ढोल बजे थे
लहर खुशी की दौड़ गयी
नटखट श्याम सलोना घूमे
भीतर-बाहर सब मुदित हुए।
जवानी के नव जोश में उसने
मजे अनगिनत लूट लिए
संगी-साथी से हिलमिल कर
आनन्द की पींगें खूब बढ़ें।
धीरे-धीरे जब उम्र बढ़ी
आपा-धापी में सिमट गए
संगी-साथी, नाते-रिश्ते
कुछ छिटके, कुछ दूर हुए।
जाने कितने लोग यहाँ पर
आते और नित जाते हैं
किनकी गिनती करें यहाँ अब
सभी यहाँ से जाते हैं।
जीवन की गोधूलि में
हंस अकेला उड़ जाएगा
कौन पुकारेगा फिर मुझको
शेष-अशेष मिल जाएगा।

बिन ब्याही माँ

रविता चौहान, सिरमौर हिमाचल प्रदेश

कई दिनों से मिट्टी के एक गमले में
बोया था मैंने पुष्प का एक बीज।
रोज सुबह-शाम और मरी दोपहरी
ताकती, निहारती उसे कि आया होगा
छोटा सा एक तना।
किंतु बीत गए दिन कई,
पानी की कमी न धूप की।
धैर्य न था तनिक भी।
फिर क्या भरी दोपहरी छत पर
ले जाकर
गमला बाहर निकाला।
क्रोध में सब मिट्टी फेंकी।
एकाएक नजर पड़ी तब
बीज पर से मिट्टी हटा।
बीज से देखा फूटकर बीज से
छोटा सा एक हरा तना निकला है।
बेचैन और उतावले मन के संग
स्पर्श से उसके हृदय से
अनुभूति करवाई मुझे।
मानों कोख से मेरा
एक नन्हा पौधा जन्मा हो।
जिसे देख सुकून मिला था मुझे।
और नयनों में भरते
अश्रुओं से महसूस करवाया
उस बीज ने मेरे भविष्य में माँ होने का।
या यूं कहो बना एहसास करवाया हो
एक बिन ब्याही माँ होने का।

दोस्ती

डॉ. शोभा बाजपेयी

दोस्ती को निभाना होगा
दिल को बड़ा बनाना होगा
दोस्ती है, जिम्मेदारी भी है,
खुद को ये समझाना होगा।
चतुराई भी है, भ्रम भी है,
हंसकर धोखा खाना होगा।
इनकी-उनकी बातों में उलझी,
दोस्ती को सुलझाना होगा।
क्या अंदर है, क्या है बाहर,
खुलकर इसे बताना होगा।
दोस्त है तो जरुर लौटेगा,
समझदार को ये समझाना होगा।
जहाँ सोच है, वहीं है राह
सुर में सुर मिलाना होगा।
झट सिंहासन से उतरकर,
सुदामा को गले लगाना होगा।
प्रेम बढ़ाकर, निज दोस्तों को,
खुशहाली में, नित लाना होगा।

'मनवा कासे कह'

नीरजा शुक्ला 'नीरू'

ना मात रहीं ना पिता रहे
मन किससे मन की बात कहे
ना वो दौर रहा ना वो ठौर रहा
बस यादों में जज्बात रहे
जीवन के सारे सपन गये
ना बचपन के उत्पात रहे
सूने से घर के आंगन में
ना रंगों के अनुपात रहे
बारी-बारी सब बिछड़ गये
मन में केवल आघात रहे
संसार का सच बस है इतना
ना प्राण रहे ना गात रहे
जाना बूझा समझा सब कुछ
लेकिन खुद से अज्ञात रहे
कितना कुछ बीता है फिर भी
हम खुश उसके पश्चात रहे

शीतल बहे बयार

हरि नाथ शुक्ल 'हरि'

धूप गुनगुनी छूती तन को, मन को पागल करती, /रात चांदनी की चिंगारी, हिय बड़वानल भरती, /अंग अंग झंझा अनंग का, उठे हृदय में ज्वार। /प्रेम पगे प्रिय पशु पक्षी भी, चूं-चूं करें पुकार, /गम गम गमके गेंदा गुड़हल, झरते हरसिंगार, /बसे पिया परदेस हमारे, कैसे करूं श्रृंगार।/कैसे करें कटाइ-पिटाई, थान भये तैयार? /आलू सरसों मटर बुवाई, कैसे हो इस बार?/भले भूल बावरे मुझे सुन, खेतों की मनुहार। शरद ज्योत्सना सनी खीर जब, हो जाती है अमृत, कैसे नहीं जगाएगी मेरे हिय भाव, पड़े मृत? किस कांधे का लें अवलम्बन,
इन बाहों के हार।

गजल

डॉ. शोभा बाजपेयी

मैं किताबों में मदमस्त हूँ, तो हूँ।
वास्तविकता से निरस्त हूँ, तो हैं।
ये दुनियादारी मुझे नहीं भाती,
अपनी दुनिया में व्यस्त हूँ, तो हैं।
मेरा दो और दो चार नहीं होता,
अपनी गणित से त्रस्त हूँ, तो हूँ।
दौड़कर कोई रेस नहीं जीतनी,
चाल में लस्त पस्त हूँ, तो हूँ।
मैंने पैसा दांतों से नहीं पकड़ा,
बैंक बैलेंस में प्रहस्त हूँ, तो हूँ।
जाने वाले को लपककर नहीं रोका,
अपनी ठसक में मस्त हूँ, तो हूँ।
मेरे काफिया-रदीफ नहीं सधते
गजल की रुह में पैवस्त हूँ, तो हूँ।।

जीवन प्रथम सत्य है।

डॉ. शिप्रा शिल्पी, जर्मनी

आना जाना सच है माना/फिर भी चलते जाना है/ जीवन एक कठिन बस इसको सुलझाना है रात भले हो गहरी काली, सूरज फिर भी आएगा। / गम के पल भी ठहर सके न, खुशियों को तो आना है।
जीवन है एक कठिन पहेली, बस इसको सुलझाना है! / हाँ माना ये पल है मुश्किल, फिर भी जीवन जीना है। / अपनो के संग गया कोई न, ये विष सब को पीना है।
जीवन का है चक्र यही, इस सच को अपनाना है। /जीवन है एक कठिन पहेली, बस इसको सुलझाना है। /माना मृत्यु अंतिम सत्य है, किंतु जीवन प्रथम सत्य है।

स्वप्न

आलोक रंजन पाण्डेय

उसके जीवन का स्वप्न,
उसकी यातना का स्त्रोत, बन गया क्योंकि
उसका स्वप्न हवा से भी, तेज चल निकला।
उस स्वप्न की पकड़न में, वह बेसुध होकर
आगे बढ़ने लगा और, छूटने लगे सारे
रिश्ते-नाते। वह अकेला बढ़ता गया।
कई उचाँईयों को पाता हुआ
स्वप्न के अभिमान में मस्त,
वह इतना आगे निकल पड़ा,
कि पीछे आना मुश्किल था।
उस ऊचाँई से गिरने पर
संभलना मुश्किल था/लेकिन जिस तरह
हर स्वप्न हकीकत नहीं होती।
उसी तरह जब वह अपने,
स्वप्न रूपी महल से नीचे गिरा।
तो मुँह से केवल आह निकली,
लेकिन उस आह को सुनने वाला,
उसका कोई अपना न था।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर

गुरु शर्मा, फ्रेदरिकस्ताद, नार्वे

नारी तुम इस सृष्टि का आधार हो।
ईश्वर का दिया
अनमोल उपहार हो।
नफरत के संसार में हर पल
बाटती प्यार हो।
तुम माँ बहन बेटी पत्नी
तुम ही परिवार हो।

रामअवतार बैरवा की गजलें

गज़ल १
ओ ! लेके रूप कंचका
द्वारे आई अम्बिका
बांध बालों में रिबन
लगा माथे पे टीका
पहनके नाक में नथनी
डाल कानों पे झुमका
तेरी चुनरी का गोटा
है सोने-चांदी का।
तेरी कंठी में चमके
चांद सूरज की कणिका
तेरे कांधों पे मैय्या
है सारा भार जगत का।
बाजूबंद में तेरे
हैं सारी तंत्र मंत्रिका
तेरे हाथों ने मैय्या
लिखा भाग्य सभी का।
तेरी नाभि से माता
नाता मेरा सात जन्म का
तेरे चरणों में लेटा
तारक इस भवसागर का।
आगे हनुमन का झंडा
पीछे डंका भैरव का
तेरे आने से मैय्या
मेरा घर आंगन महका।
ओ ! लेके रूप कंचका
द्वारे आई अम्बिका।

गजल २
शीत राग की मधु बेला में
जब सब पत्ते झड़ जाएंगे
तलहट से कुछ नन्हें पौधे
नम धूप पकड़ने आएंगे।
बीच सड़क पे बे-बस अम्मा
तारों से लिपटके रोयेगी/आधी रात जब
भूखे बच्चे / चाँद को खाने जाएंगे।
सावन को कसम दिला देना,
इस बार न बरसे सूरत पे/हम किसी सूखे
दरिया / से प्यास मांगने जाएंगे।
रात की परवाह मत करना/हम तन्हा एक
मुसाफिर हैं/जब तारा आखिरी छिप जाए,
वहीं तुम्हें हम पाएंगे।
एक चादर अपने आँगन में
बेवजह ही तान के देखो, / शाम मुहाने
कई मुसाफिरध्एक रात काटने आएंगे।

अतीत की स्मृतियाँ

डॉ. सरस्वती जोशी, पैरिस, फ्रांस

ये अतीत की वासंती स्मृतियाँ,
आ-आ कर जातीं सुभित यह आँगन ।
इनसे बहते शीतल झरने से,
रहता खिला यह मरुथल का उपवन।
पचास वर्ष व्यतीत हो चुके पर,
लगता है मानों हो कल की बात !
निकले जब अपने आँगन से, उर में ले
कुछ सुंदर सपनों की सौगात।
अनजान देश, अनजान राहें,
पर कुछ दृढ़ संकल्प लिये था यह मन।
सहमे-सहमे से बढ़ा रहे थे,
इक अनजान सी दिशा में कदम।

है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन

डॉ. मंजू शुक्ला

शोभे हिमालय का ताज और, धानी पैरहन,
सूरज की बिंदिया और दरिया की करधन।
सागर पखारे है, जिसके चरन,
है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन।।

बोलें बोली अलग, पै धड़कन है एक जैसे
कान्हा की बंसी पे, रसखान की टेक।
सभी के लिये है, खुला जिसका आँगन,
है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन।।

इस गुलस्ताँ में सजते हैं खारों सुमन,
अदबो तहजीब से यहाँ उठे कर कदम।
जैसे पुष्कर का पानी और, ख्वाजा का दामन,
है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन।।

इस गुलिस्तों में सजते हैं खारों सुमन,
अदबो तहजीब से यहाँ उठे कर कदम।
जैसे पुष्कर का पानी और, ख्वाजा का दामन,
है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन।।

कभी होली की मस्ती, तो दीवाली की धूम,
गंगा-जमनी है तबियत और मीठे बयन।
शबे ईद सा मुबारक है जिसका नमन,
है रश्के जहाँ मेरा अहले वतन ।।

जाति वाद के खिलाफ

डॉ. राम गोपाल भारतीय

हर कदम आंख में नीर है।
जाति पैरों की जंजीर है।
एक वंचित का जीवन सिसकता रहा
हर खुशी के लिए बस तरसता रहा
जन्म से जाति और वर्ण के नाम पर
इस समाजी व्यवस्था में पिसता रहा
दुख भी क्या द्रोपदी चीर है।
जाति पैरों की जंजीर है।

गांव के बाहर इनको बसाते थे क्यों
नाम मंगलू या बुद्ध रखाते थे क्यों
नल, कुएं और मुहल्ले अलग क्यों बने
दूरियां लोग इनसे बनाते थे क्यों
कडवी बचपन की तस्वीर है।
जाति पैरों की जंजीर है।

पढ़ने गांव के स्कूल जाते थे ये
कुछ थी बातें समझ जो न पाते थे ये
सब सवालों के उत्तर सही थे मगर
क्यों पिछड़ इम्तहानों में जाते थे ये
साजिशें हैं या तकदीर है।
जाति पैरों की जंजीर है।

पढ़के जीवन समर में कदम जो रखा
हर कदम पर ये कड़वा जहर ही चखा
काम से पहले पूजा जहां नाम की
झूठ कहते हो इस नाम में क्या रखा
युग युगों की यही पीर है।
जाति पैरों की जंजीर है।

देश आजाद, अपना संविधान है
भेदभाव का जिसमें न स्थान है
एक भी ऐसी घटना घटे जो कहीं
ये मनुजता का अपराध, अपमान है

अन्वेषण

पं. राम नरेश त्रिपाठी

मैं ढूँढता तुझे था, जब कुंज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के सदन में॥ तू

'आह' बन किसी की, मुझको पुकारता था। मैं
था तुझे बुलाता, संगीत में भजन में।।

मेरे लिए खड़ा था, दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में।।

बनकर किसी के आँसु, मेरे लिए बहा तू।
आँखे लगी थी मेरी, तब मान और धन में।।

बाजे बजाबजा कर, मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में।।

मैं था विरक्त तुझसे, जग की अनित्यता पर।
उत्थान भर रहा था, तब तू किसी पतन में।।

बेबस गिरे हुओं के, तू बीच में खड़ा था।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरन में ।।

तूने दिया अनेकों अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में ।।

तेरा पता सिकंदर को, मैं समझ रहा था।
पर तू बसा हुआ था, फरहाद कोहकन में।।

क्रीसस की 'हाय' में था, करता विनोद तू ही।
तू अंत में हंसा था, महमूद के रुदन में।।

प्रहलाद जानता था, तेरा सही ठिकाना।
तू ही मचल रहा था, मंसूर की रटन में।।

आखिर चमक पड़ा तू गाँधी की हड्डियों में।
मैं था तुझे समझता, सुहराब पीले तन में।

कैसे तुझे मिलूँगा, जब भेद इस कदर है।
हैरान होके भगवन, आया हूँ मैं सरन में।।

तू रूप की किरन में सौंदर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, विस्तार है गगन में।

तू ज्ञान हिन्दुओं में, ईमान मुस्लिमों में।
तू प्रेम क्रिश्चियन में, तू सत्य है सुजन में ॥

हे दीनबंधु ऐसी, प्रतिभा प्रदान कर तू।
देखूँ तुझे दृगों में, मन में तथा वचन में।।

कठिनाइयों दुखों का, इतिहास ही सुयश है।
मुझको समर्थ कर तू, बस कष्ट के सहन में।।

दुख में न हार मानूँ, सुख में तुझे न भूलूँ।
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में।।

उपवन में आज उदासी है

सूर्य कुमार पांडेय

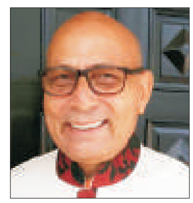

भारत के नील गगन में वह,
जो एक सितारा न्यारा था।
वह आज अंततः टूट गया,
जो अर्थशास्त्र का तारा था।
मर्यादा का बल हुआ शिथिल,
कर्मठता की नम हुई आंख।
जिस पर सिद्धांतों के पंछी-
बैठे थे, टूटी वही शाख।
उपवन में आज उदासी है,
कण-कण में पसरा हुआ शोक।
पल में प्राणों का विहग, देह-
तजकर जा पहुंचा अमरलोक।
वह चला गया उस दूर देश,
जिससे न लौट पाना संभव।
वह प्राण, हाय चिर शांत हुआ,
जिसकी वाणी में था संयम।
वह समरय काल से हार गया,
जो नहीं समय से हारा था।
वह वचन-कर्म-दृढ़ शक्तियुक्त
मनमोहन सबको प्यारा था।

गगरी

प्रमिला कौशिक द्वारका, दिल्ली

गगरी है दिल
भरा स्नेह-जल
छलक छलक जाए है।
दोनों हाथ से
थाम चलूँ जब
ढुलक-ढुलक जाए है।
धीमे से पग
धरूँ धरा पर
बहक-बहक जाए है।
नेह न रीते
करूँ जुगत, तन
दहक-दहक जाए है।
राह में जब
प्रीतम दिखता, मन
पुलक-पुलक जाए है।
आलिंगन में
भरता जब वो, गगरी
लुढ़क-लुढ़क जाए है।
मादकता सी
छा जाती तब, मन
कुहुक-कुहुक गाए है।
प्रीत-गीत जब
बजने लगता, दिल
धड़क-धड़क जाए है।
खिलती बगिया
रंगबिरंगी, खुशबू
महक महक जाए है।
गगरी है दिल
भरा स्नेह-जल
छलक छलक जाए है।।

धीरे-धीरे

डॉ. रामदरश मिश्र

(प्रसिद्ध लेखक की १०१ वीं वर्षगाँठ पर
स्पाइल-दर्पण की तरफ से शुभकामनायें-सम्पादक)

बनाया है मैंने ये घर धीरे-धीरे,
खुले मेरे ख़्वाबों के पर धीरे-धीरे,
किसी को गिरा न खुद को उछाला
कटा जिंदगी का सफर धीरे-धीरे।
जहाँ आप पहुँचे छलांगे लगाकर,
वहाँ मैं भी आया मगर धीरे-धीरे।
पहाड़ों की कोई चुनौती नहीं थी,
उठाता गया यूँ ही रु सर धीरे-धीरे।
न हँस कर न रोकर किसी में उड़ेला,
पिया खुद ही अपना जहर धीरे-धीरे।
गिरा मैं कहीं तो अकेले में रोया,
गया दर्द से घाव भर धीरे-धीरे।
जमीं खेत की साथ लेकर चला था,
उगा उसमें कोई शहर धीरे-धीरे।
मिला क्या न मुझको ए दुनिया तुम्हारी,
मोहब्बत मिली है, मगर धीरे-धीरे।

बीट, आज और पहले

राहुल उपाध्याय, सिएटल, यू.एस.ए.

पहले बीट वो होती थी
जिसे कबूतर किया करते थे।
आजकल बीट वो है
जिसपे बराती नाचा करते हैं।
पहले ट्वीट का मतलब होता था
चिड़िया डाल पर चहक रही है।
और आजकल ट्वीट का मतलब है
प्रियंका महल में मटक रही है।
पहले फोन होता था
फोन करने के लिए
आजकल फोन होता है
यू-ट्यूब देखने के लिए।
पहले नेट वो होता था
जिसमें शेर फंस जाता था
और चूहा उसे बचाता था
आजकल नेट वो है
जिसमें माऊस हमें फंसाता है
और बचाने वाला कोई नहीं।

ये संकल्प हमारा है।

डॉ. शिवम् तिवारी

भौतिकता की लोलुपता में,
अंधियारा ही अंधियारा है।
जीवन पथ पर दूर-दूर तक,
घोर कलुष फैला सारा है।।
गगन चूमते इन भवनों में,
शोषण-अत्याचार भरा है।
निशा-दिवस में जलते सपने,
शुचिता-स्वाभिमान हारा है।।
राष्ट्र-संस्कृति का घर-आंगन,
सपने चकना चूर हुए हैं।
पश्चिम के कलुषित झोंको ने,
राष्ट्र भावना को मारा है।।
देख दशा मन व्यथित हो रहा,
सुपथ स्वप्न ही अवलंबन है।
हृदय-दीप जलता रहता है,
बहती गंगा की धारा है ।।
जीर्ण-शीर्ण हो गया नीड़ है,
खडा विटप भी हुआ खोखला।
भारत जैसे अटल राष्ट्र में,
देशद्रोह का हत्यारा है।
उठो-जगो-तोड़ो कारा को,
काटो अपने आप बेड़ियाँ।
दीप जलाओ घर-घर जाकर,
पावन संकल्प हमारा है।

जन्मभूमि तेरा बंदन

डॉ. कौशलेन्द्र टिंस्री, जॉर्जिया यू.एस.ए.

वसुंधरा पर परम रम्य, हे
भरत भूमि तेरा अर्चन।
कोटि दंडवत् पुण्य भूमि, हे
जन्मभूमि तेरा वंदन ।।
मनु आर्य भूमि के उत्तर में,
नगराज हिमालय शोभित है।
दक्षिण में पद प्रच्छालित कर,
सिंधुराज अह्लादित है ।।
पूरब में बराह से रक्षित,
पश्चिम में गरूणध्वज से ।
सत समर्थ परमार्थ वीज से,
दिव्य भूमि अभिमंत्रित है ॥

तड़ीपार सब संस्कृतियों को,
शरण मिली तेरे आँगन ।
वसुंधरा पर परम रम्य, हे
भरत भूमि तेरा अर्चन।।
ऋषियों के निष्पक्ष शोध से,
वेद सृजन निष्काम हुए ।
कर्तव्य बोध के परम प्रकाशक,
मुरलीधर घनश्याम हुए ।।
जब जब पाप बढ़े पृथ्वी पर,
शास्त्र धर्म क्षय करने को ।
विप्र धेनु सुर संत बचाने,
को अखिलेश्वर राम हुए ।।
तक्षशिला से नालंदा तक,
सतत ज्ञान सास्त्रर मंथन ।
वसुंधरा पर परम रम्य, हे
भरत भूमि! तेरा अर्चन ।।
यहाँ प्रेम ही परम चेतना,
नहीं देह का बन्धन है।
शेष जगत में प्रेम अर्थ जब,
योनि-लिंग आकर्षण है ।

सूरदास तुलसी मीरा ने,
भक्ति प्रेम से सिद्ध किया ।
त्याग साधना प्रेम तत्व का,
अद्भुत लौकिक मंचन है ।
इस मधुवन में नहीं प्रदर्शन,
प्रेम ईश पावन दर्शन ।
वसुंधरा पर परम रम्य, हे
भरत भूमि तेरा अर्चन ॥

हरिश्चंद्र ने मूल सत्त्य का,
मानक धर्म विधान दिया ।
वीर शिवा ने राष्ट्र सुरक्षा,
का भगवा अभियान दिया ।।
स्वाभिमान समृद्ध बनाया,
यहाँ पद्मिनी जौहर ने।
और धाय माँ पन्ना ने ही,
भीषणतम बलिदान दिया ।।
मिला अहिल्या के आँचल से,
इसे सांस्कृतिक नवजीवन ।
वसुंधरा पर परम रम्य हे,
भरत भूमि तेरा अर्चन ।।
आर्य द्रविड़ की कुंदन नस्लों,
उठो सनातन भान करो ।
करो ईश वंदन जैसे पर,
निज संस्कृति सम्मान करो ।।
अखिल विश्व में व्याप तुम्हारा,
बिना तीर तलवारों के ।
तमस् वृत्तियाँ हरने को फिर,
वैचारिक संधान करो।।
वेद विचारक ज्ञान प्रचारक,
दिखा मोहिनीअट्टम क्षण।
वसुंधरा पर परम रम्य, हे
भरत भूमि तेरा अर्चन ।।
कोटि दंडवत् पुण्य भूमि, हे
जन्मभूमि! तेरा वंदन
कोटि दंडवत् पुण्य भूमि, हे
जन्मभूमि! तेरा वंदन ।।

स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा

सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' ओस्लो, नार्वे

नई उमंगे नई आशाएँ
अंधकार में कर उजियारा
स्वागत है, नव वर्ष तुम्हारा।

दुनिया से आतंक मिटाएँ
सभी शांति के दीप जलाएँ
आतंक जग में जो फैलाते
उनको कहीं न मिले सहारा
स्वागत है, नव वर्ष तुम्हारा।

खेतों में फिर सोना बरसे
रोजगार के अवसर निकलें
चहुँओर विकास की राह बनें
बह खुशियों की जीवन धारा
स्वागत है नव वर्ष तुम्हारा।

स्व निर्भर हम तभी बनेंगे
लक्ष्य सामने कमर कसेंगे
आपस में अब नहीं लड़ेंगे
सदा करें भारत जयकारा
स्वागत है, नव वर्ष तुम्हारा।

Nye rekordar for norsk lokalmat- og drikke

Det siste året har omsetninga av norsk lokalmat- og drikke vore på totalt 12,3 milliardar kroner. Veksten gjeld i alle salskanalar og fylke.

Den totale omsetninga for norsk lokalmat- og drikke var på 12,3 milliardar kroner for perioden 2023-2024, med ein auke på 12,2 prosent samanlikna med i fjor.

Lokalmat- og drikkesalet har sett nye rekordar i verdi og volum. Sundqvist (direktør StiftelsenNorsk Mat), Terje Gjervang (dagleg leiar på Jacob's på Holtet), Tor Jacob Solberg (styreleiar i Norsk Bonde- og Småbrukarlag), landbruks- og matminister Geir Pollestad og Sølvi Gammelsrød frå Rygge Meieri. Foto: Stiftelsen Norsk Mat

– Dette er verkeleg flotte tal. Auka etterspurnad etter lokalmat og drikke, trass i høge prisar og økonomisk press, viser at forbrukarane verkeleg ønsker å handla desse produkta, sa landbruks- og matminister Geir Pollestad då salstala for i år blei lagde fram.

– Lokalmat har blitt ein viktig del av kvardagen for mange, frå butikkhyller til restaurantbord og direkte frå bonden til forbrukaren. Det har ringverknader i alle fylke og skaper lokale arbeidsplassar, seier direktør Nina Sundqvist i Stiftelsen Norsk Mat.

Lokalprodusert mat og drikke styrker dermed posisjonen sin innan både daglegvarehandelen og storhushaldsmarknaden. Aktørar som Bondens Marked, gardsbutikkar, Reko-ringar ser òg aukande sal.

Kunnskapsministeren endrer fraværsreglene i videregående skole

Regjeringen gjør forbedringer i fraværsreglene i videregående skole. Dagens fraværsgrense på ti prosent består, men fra neste år skal elever levere egenmelding for sykefravær opp til ti prosent-grensen.

– Det er viktig at elevene møter opp på skolen. Det bidrar til at de lærer mer og bedre og får ta del i fellesskapet på skolen. Vi skal ha tydelige fraværsregler i norsk skole med klare forventninger om at elevene skal møte opp, sier kunnskapsminister Kari Nessa Nordtun (Ap).

Fraværsgrensen skal fortsatt være på ti prosent, men skal minne mer om reglene for sykefravær i arbeidslivet. Fra august neste år skal sykefravær opp til ti prosent-grensen meldes av eleven selv til skolen. Når fraværet er oppe i ti prosent i et fag, må eleven dokumentere sykefravær med attest fra helsepersonell.

I dag har elever kunnet levere sykemelding fra dag én, uten at det har virket inn på fraværsgrensen. Den muligheten forsvinner nå.

– Grepene vi nå gjør vil lette belastningen på fastlegene betydelig og sikre at de bruker tiden på de pasientene som faktisk trenger hjelp. Vi hindrer også muligheten til å spare opp fravær, for eksempel til bruk i russetiden, sier Nordtun.

Slik blir fraværsreglene fra og med neste skoleår

Elever skal levere egenmelding til skolen for sykefravær opp til fraværsgrensen på ti prosent. Når elevene har nådd grensen på ti prosent fravær i et fag, må de dokumentere sykefravær med attest fra helsepersonell.

Det blir lettere for elever å ta førerkort for bil ved at fravær som skyldes teoretisk og praktisk førerprøve, blir inkludert i listen over unntak fra fraværsgrensen. I dag er det bare unntak for deler

av den obligatoriske kjøreopplæringen.

For å forenkle og avbyråkratisere, skal fraværet bare avregnes på slutten av skoleåret i stedet for to ganger i løpet av skoleåret soi dag. Det er enklere for skolene, og kan motivere elever som har høyt fravær til jul til å redusere fraværet sitt til sommeren.

Visse former for fravær, som for eksempel politisk og religiøst fravær, skal fortsatt unntas fra fraværsgrensen.

Fravær skal fortsatt føres på vitnemålet.

De som har kronisk sykdom eller plager som gir høy risiko for fravær, skal fortsatt kunne bruke egenmelding i kombinasjon med legeattest.

Rektor skal fortsatt kunne bruke skjønn ved fravær opp til 15 prosent av timetallet i et fag. Da kan eleven fremdeles få karakter dersom grunnen til fraværet gjør det klart urimelig at fraværsgrensen skal gjelde

Solid norsk fotavtrykk på gjenoppbyggings- konferanse for Ukraina

Det haster med å sikre

Solid norsk fotavtrykk på gjenoppbyggings-konferanse for Ukraina

den ukrainske befolkningen energiforsyning før vinteren. Der kan norsk næringsliv spille en viktig rolle.

1000 dager er gått

1000 dager er gått siden Russland innledet sin ulovlige fullskalainvasjon av Ukraina. Den ukrainske befolk-ningen går nå sin tredje krigsvinter i møte. Det var tema på den store gjenop-pbyggingskonferansen Rebuild Ukraine i Warszawa 13.–14. november. Der viste rekordmange norske bedrifter frem ulike løsninger for gjenoppbygging og utvikling av landet.13.–14. november. Der viste rekordmange norske bedrifter frem ulike løsninger for gjenoppbygging og utvikling av landet.

Energiminister Terje Aasland åpner den norske næringslivspaviljongen på Rebuild Ukraine. Til høyre administrerende direktør i Innovasjon Norge, Håkon Hau gli. Foto: Innovasjon Norge

- Nok energiforsyning står sentralt for at Ukraina skal opprettholde sin økonomi og krigsinn-sats.Norsk kraftsektor bidrar i dag med donasjoner, men det er også et nytt marked med gode muligheter for norske energiselskaper, sier energiminister Terje Aasland (Ap).

Norge og Ukraina har nylig etablert en arbeidsgruppe på energi som ledes av statssekretær Astrid Bergmål i Energidepartementet og viseminister Roman Andarak i det ukrainske energidepartementet – Målet er å samarbeide om større og mindre energi-prosjekter og et oppstarts-møte ble avholdt i Warszawa under ledelse av Terje Aasland. - Næringslivet vil spille en viktig rolle i gjenop-pbyggingen av landet, og jeg ble imponert over engasjementet og løsningene til norske selskaper som deltok i Rebuild Ukraine, sier statssekretær Vegard Wennesland i Nærings- og fiskeridepartementet, som også deltar i arbeidsgrup-pens oppstartsmøte.

Energiminister Terje Aasland sammen med sin ukrainske kollega Herman Galusjenko
Foto: Energidepartementet

Langsiktig støtte til gjenoppbyggingsarbeidet

For å fremme utenlandske investeringer i Ukraina må det internasjonale samfunnet legge til rette for risikoavlastning. Også her bidrar Norge. I den aktive krigsfasen vil krigsforsikring – eller garantier mot politisk risiko – være avgjørende for å trekke internasjonale investorer til Ukraina.

- Russlands angrepskrig har ødelagt store deler av Ukrainas energiinfrastruktur. Det er helt avgjørende å bidra til at den ukrainske befolkningen får strøm i vinter. Norge bidrar nå til å sikre strømforsyning til rundt 1,5 million mennesker og industri i Ukraina. Blant annet skal Bergen Engines levere strømforsyningsutstyr gjennom UNDP med støtte fra Nansen-programmet. Dette er en stor og viktig avtale, sier energiminister Terje Aasland.

Siden fullskalainvasjonen, har Norge bidratt til gassinnkjøp, reparasjon av kritisk infrastruktur og til drift av Ukrainas elektrisitetsselskap. Norges støtte til energirettede tiltak slik at den krigsrammede befolkningen kan komme seg gjennom vinteren, er nå kommet opp i mer enn tre milliarder kroner i år.

Midlene som nå fordeles, går både til rene energitiltak og andre former for støtte som skal hjelpe ukrainerne gjennom vinteren.

- Fra å forsyne hele byer med strøm, til individuelle hjelpepakker med tetningslister som kan

brukes rundt vinduene for å stenge kulda ute når strømmen går. Slike tiltak kan bidra til at ukrainerne kan bli boende i leilighetene sine og slipper å flykte, sier energiminister Terje Aasland.

Under den forrige gjenoppbyggingskonferansen, som fant sted i Berlin i juni, signerte Ukraina og Norge en intensjonsavtale om energisamarbeid.

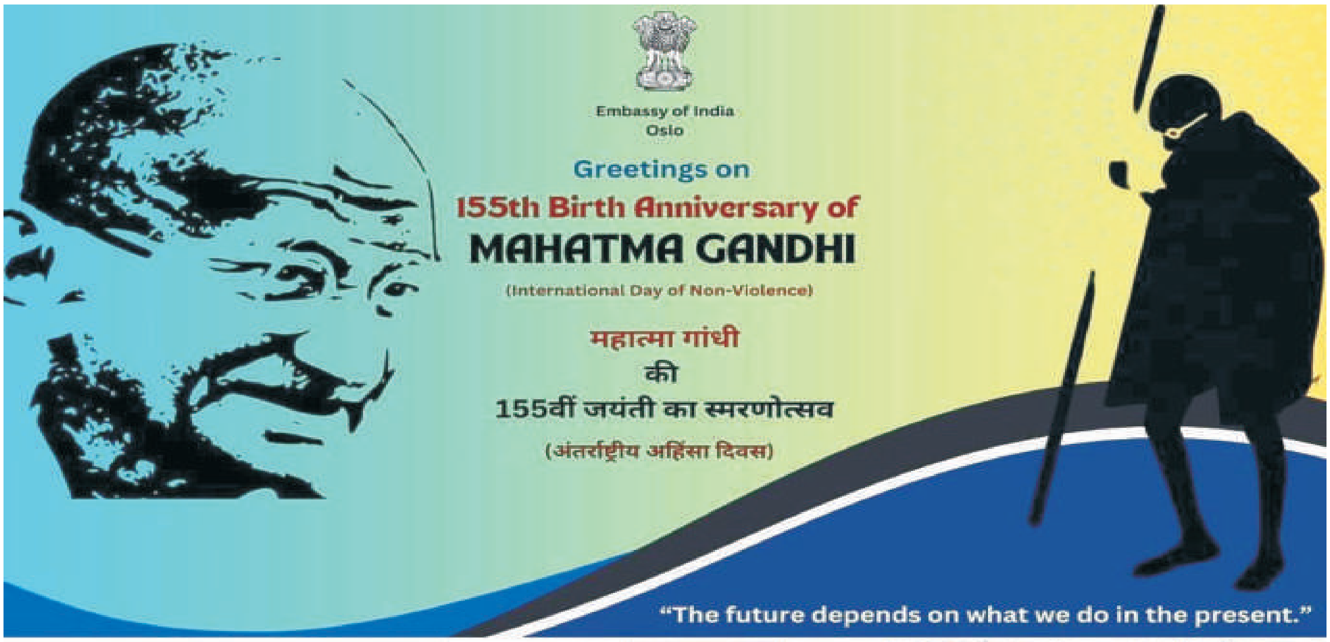

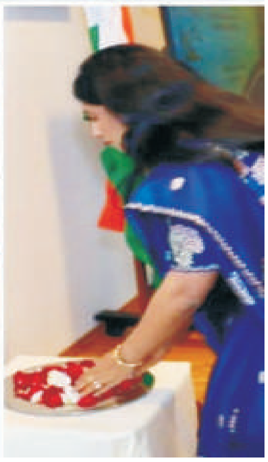

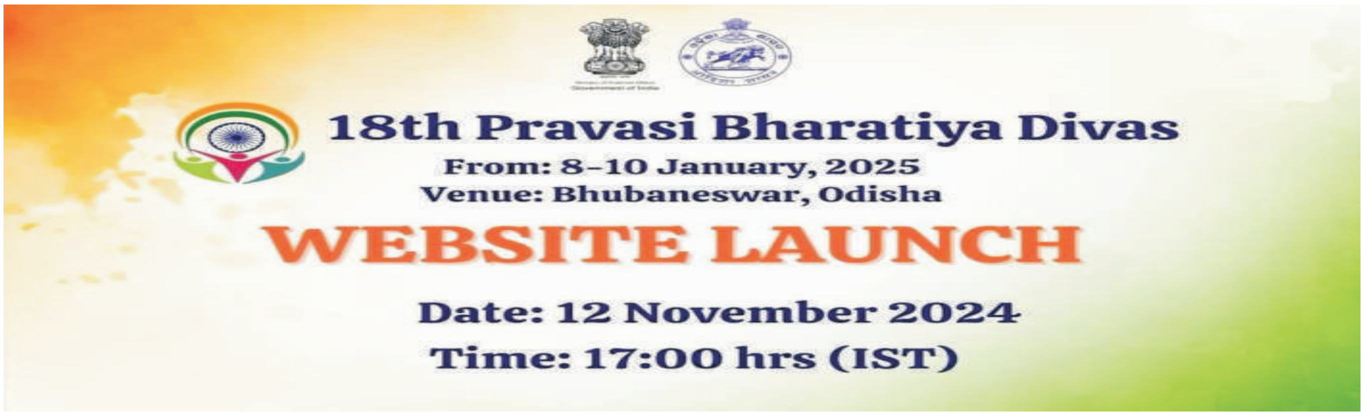

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

Indias Parliament fikk Rahul Gandhi som
oppsisjons leder etter 10 år.
भारतीय संसद को दस साल बाद मिला प्रतिपक्ष का नेता राहुल गाँधी।

Priyanka Gandhi ble valgt som stortings representant i India. Folk ser hun følger sin farmor Indira Gandhis fot spor.
इन्दिरा गाँधी की छाया प्रियंका गाँधी बनी सांसद।

International Centre for Litterature and Publication, Oslo.
इंटरनेशनल सेंटर फार लिटरेचर एंड पब्लिकेशन : कार्यक्रम के चित्र।

SPEIL स्पाइल (दर्पण)

Speil støttet med midler fra Norsk Kulturråd

No. 1 2025 Stiftet 1988

अंक १ २०२५ स्थापित १९८८

ISSN 0802 4448

Address: **Postbox 31, Veitvet**
0518 Oslo
NORWAY

Statsminister Jonas Gahr Støre og Jens Stoltenberg som ny finansminister.
नार्वे में अरबाइदर पार्टी की नई सरकार। प्रधानमंत्री यूनास गार स्तोरे और जेन्स स्तूलतेनबर्ग नये वित्त मंत्री।

Rahul Gandhi gir respekt med blomster til Manmohan Singhs kiste.
राहुल गाँधी मनमोहन सिंह को उनके घर पर अंतिम श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए।